जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 50 संख्याः 121 प्रभात कोटा, गुरुवार 13 फरवरी, 2025 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

'केन्द्रीय सरकार ने रक्षा मंत्रालय के कायदे-कानून में तब्दीली की, अडानी ग्रुप सोलर प्लांट के लिये'

सीमा से 10 किलोमीटर की दूरी तक किसी भी प्रकार के ''सिविल कंस्ट्रक्शन'' की इजाज़त नहीं होती है, बॉर्डर पर टैंक आदि मशीनों को ''फ्री मूवमैंट'' की सुविधा देने के लिये

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 फरवरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और विवादास्पद अडानी समूह के निकट सम्बंधों का एक और खुलासा हुआ है। ब्रिटिश अखबार द गार्जियन ने दावा किया कि भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार ने गौतम अडानी के विश्व के सबसे बड़े नवीकरणीय एनर्जी पार्क को मंजूरी देने के लिए रक्षा प्रोटोकॉल में ढील दी है। यह पार्क गुजरात के खावदा में बन रहा है जहां कच्छ के रन में भारत-पाक सीमा के एक किलोमीटर दायरे में सोलर पैनल और विंड टरबाइन लगाए जाएंगे।

प्रोटोकॉल में छेड़छाड़ से अन्य देश जैसे चीन, बांग्लादेश, नेपाल, पाकिस्तान व म्यामांर के लिए भी सीमा पर ऐसे निर्माण करने का रास्ता साफ हो जाएगा।

रक्षा विशेषज्ञों का सवाल है कि ''क्या एक बिज़नैस ग्रुप का हित राष्ट्रीय सुरक्षा से भी बड़ा है?'' वे कहते हैं कि स्वतंत्र भारत में देश की सुरक्षा के साथ इतना बड़ा समझौता पहली बार किया गया है।

नीति में परिवर्तन से यह सवाल उठ रहे हैं कि अगर पाकिस्तान से कोई हमला होता है, जैसा पहले हो चुका है, तो भारत इस क्षेत्र में सैन्य गतिविधियां कैसे संचालित करेगा।

कच्छ का 445 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र गुजरात सरकार ने अडानी की कम्पनी को लीज़ पर दिया है।

गार्जियन का दावा है कि उसके पास ऐसे दस्तावेज हैं जिनसे रक्षा मंत्रालय द्वारा सिक्युरिटी प्रोटोकॉल के संशोधन का पता चलता है ताकि अडानी के प्रोजैक्ट को मदद दी जा सके। अडानी की प्रधानमंत्री मोदी से निकटता को लेकर विपक्ष के नेता राहुल गांधी अक्सर निशाना साधते हैं।

पाकिस्तान सीमा पर 10 किलोमीटर दायरे में, जो गांव और सड़के हैं, उनके अलावा कोई अन्य निर्माण करने की अनुमति नहीं है। गुजरात से लेकर जम्मू-कश्मीर के बीच भारत और पाकिस्तान के 3,323 किलोमीटर लम्बा बॉर्डर साझा करते हैं।

गार्जियन के अनुसार दस्तावेज दिखाते हैं कि सुरक्षा प्रोटोकॉल में ढील देने के लिए भाजपा ने उच्चतम स्तर पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- पर, जब अडानी ग्रुप को खावड़ा (गुजरात) में 445 वर्ग किलोमीटर भूमि, सोलर व विंड एनर्जी प्लांट लगाने के लिये दी गई तो रक्षा मंत्रालय के कानून-कायदों में परिवर्तन करके, सीमा से एक किलोमीटर दूर ही ''सिविल कन्स्ट्रक्शन'' की इजाज़त दे दी गई।
- यह खबर प्रमुखता से लंदन के जाने-माने अखबार ''द गार्डियन'' में छपी है तथा अखबार ने दावा किया है कि उसके पास पूरे कागज़ात व दस्तावेज मौजूद हैं, अपनी खबर की सत्यता प्रमाणित करने के लिये।
- अखबार ने यह भी दावा किया है कि पहले खावड़ा में 230 वर्ग किलोमीटर भूमि, राज्य सरकार की कंपनी सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन को सोलर एनर्जी प्लांट लगाने के लिये ''लीज़'' पर दी गई थी। पर, मई 2023 में सरकारी कॉर्पोरेशन को आदेश देकर यह भूमि वापस ली गई तथा जुलाई 2023 को यह भूमि अडानी ग्रुप को दी गई।
- अडानी ग्रुप ने इस प्लांट में पैदा सोलर एनर्जी को राज्य सरकारों को बहुत भारी दामों पर बेचने के लिये अनुबंध किये तथा अमेरिकी सरकार द्वारा अडानी ग्रुप पर भारी रिश्वत देने का अभियोग पत्र दाखिल किया, सोलर एनर्जी को भारी दामों पर राज्य सरकारों को बेचने के लिये।

प्रणब मुखर्जी के पुत्र अभिजीत कांग्रेस में लौटे

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 फरवरी। भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के बेटे अभिजीत मुखर्जी चार साल तृणमूल कांग्रेस में रहने के बाद बुधवार को कांग्रेस में पुनः शामिल हो गए।

पूर्व लोकसभा सदस्य को पार्टी के राज्य मुख्यालय में कांग्रेस सदस्यता दी गई। इस दौरान अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव और पश्चिम बंगाल के प्रभारी गुलाम अहमद मीर वहाँ मौजूद थे।

- कांग्रेस की सदस्यता लेते हुए अभिजीत ने कहा चार साल पहले कांग्रेस छोड़कर गलती की थी।

सन् 2021 में तृणमूल कांग्रेस में शामिल होने के अपने फैसले पर खेद व्यक्त करते हुए मुखर्जी ने कहा, ''मैं इसके लिए माफी चाहता हूँ, कांग्रेस छोड़ना सही नहीं था। यह कांग्रेस और राजनीति में मेरा दूसरा जन्मदिन है।''

यह दावा करते हुए कि देश की राजनीति में कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं है, उन्होंने कहा, ''केवल कांग्रेस ही सभी लोगों को साथ लेकर चलती है, चाहे वो किसी भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय का हो।'' मुखर्जी ने कहा कि उन्होंने पिछले साल जून में कांग्रेस में फिर से शामिल होने की इच्छा जताई थी, लेकिन विभिन्न राज्य चुनावों के कारण अब यह संभव हो सका है।

उन्होंने, जुलाई 2024 में तृणमूल कांग्रेस में शामिल होने के चार साल बाद कांग्रेस में वापसी की है।

रिज़र्व बैंक को आशा है कि महंगाई नहीं बढ़ेगी

रिज़र्व बैंक ने इस आशा से ही ब्याज दर घटायी है, पर, क्या यह आकलन एकदम सही है?

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 फरवरी। भारतीय रिज़र्व बैंक ने अपनी हालिया मौद्रिक नीति में, केन्द्रीय बजट के तुरंत बाद ब्याज दरों में थोड़ी कमी की है। ब्याज दर 6.50 से 6.25 प्रतिशत कर दी गई है।

यह कोई भारी कमी नहीं है। लेकिन इससे एक उम्मीद और मानसिकता बनती है। खासकर क्योंकि यह पांच सालों में पहली कटौती है। तीन मुख्य प्रश्न जो सामने आए, वो थे, क्या ब्याज दर को और कम किया जाएगा, कीमतों को क्या दिशा मिलनी चाहिए, और क्या अर्थव्यवस्था मजबूत गति से बढ़ती रहेगी।

रिज़र्व बैंक के नए गवर्नर संजय मल्होत्रा ने जवाब दिया कि भविष्य में बैंक ब्याज दरों पर फैसला उस डेटा के आधार पर करेगा जो आने वाले समय में मिलेगा और जिस तरह से अर्थव्यवस्था व्यवहार करेगी। तो सवाल यह है कि अब से लेकर मॉनिटरी पॉलिसी कमेटी की अगली बैठक तक अर्थव्यवस्था में क्या बदलाव हो सकता है?

गवर्नर के बयान से ऐसा लगता है कि वो उम्मीद कर रहे हैं कि कीमतें स्थिर रहेंगी। क्या यह अनुमान वाजिब और युक्तिसंगत है? खाद्य पदार्थों की कीमतों को छोड़कर, मूल्य वृद्धि काफी हद तक कम रही है। सब्जियों की कीमतें बढ़ रही हैं और इसकी उम्मीद कम है कि इन कीमतों में स्थिरता आएगी।

यह मुख्यतः इसलिए है क्योंकि फल और सब्जियों की मांग बढ़ रही है, क्योंकि, आय में सुधार हो रहा है। बढ़ती आय के साथ, पैरिशेबल आइटम्स (जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं) का उत्पादन उतना नहीं बढ़ा है। इसके अलावा इन वस्तुओं के उचित परिवहन के लिए फसल के बाद की सुविधाओं में कोई महत्वपूर्ण सुधार नहीं हुआ है,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- उदाहरण के लिये, फल व सब्जी के दाम बढ़ रहे हैं, सर्दियों में भी।
- आय में बढ़ोतरी होने से फल व सब्जियों की खपत बढ़ी है, पर, इन दोनों का उत्पादन इस अनुपात में नहीं बढ़ा है और न ही फल-सब्जियों को खाने के टेबल पर शीघ्रतम समय में पहुँचाने के लिए ट्रांस्पोर्टेशन के इन्फ्रास्ट्रक्चर में वृद्धि हुई है।
- ऑयल (पैट्रोलियम) के दामों में भी गत वर्ष की तुलना में 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- वित्त मंत्री ने इन्फ्रास्ट्रक्चर की वृद्धि में भारी राशि लगाई है, पर, अभी भी प्राइवेट सैक्टर, औद्योगिक उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिये मशीनों आदि की क्षमता नहीं बढ़ा रहे। शायद उनको अभी पूर्ण विश्वास नहीं है कि डिमांड बढ़ेगी और डिमांड की पूर्ति के लिये वो अपनी फैक्टरियों की उत्पादन क्षमता बढ़ाए।
- पर, वित्त मंत्री की यह आशा की कंज़्यूमर गुड्स की खपत बढ़ेगी, आधारहीन नहीं। इन्फ्रास्ट्रक्चर में सरकार द्वारा पूँजी लगाने से तथा बजट में, मध्यम वर्ग के हाथों में इन्कम टैक्स घटाकर ज्यादा पैसे पहुँचाने का कुछ न कुछ अच्छा असर तो होगा ही।

संशोधित पीकेसी लिंक परियोजना में राजस्थान को 4102 एमसीएम पानी मिलेगा

केन्द्रीय जल शक्ति सचिव ने राजस्थान व मध्य प्रदेश को, संशोधनों को समाहित कर डीपीआर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये

जयपुर, 12 फरवरी। संशोधित पीकेसी (पार्वती-कालीसिंध-चम्बल) लिंक परियोजना की डीपीआर को अंतिम रूप देने के लिए बुधवार को नई दिल्ली में जल शक्ति मंत्रालय की सचिव श्रीमती देबाश्री मुखर्जी की अध्यक्षता में अधिकारियों की अहम बैठक हुई।

इसमें राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा केन्द्रीय जल विकास अभिकरण को प्रस्तुत डीपीआर पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में सचिव जल शक्ति मंत्रालय ने दोनों राज्यों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि आवश्यक संशोधनों को समाहित करते हुए आगामी 15 दिवस में डीपीआर प्रस्तुत करें।

परियोजना में राजस्थान को कुल 4102 एमसीएम जल उपलब्ध होगा। इसमें 522.80 एमसीएम पुनर्चक्रित जल शामिल है। कुल 4102 एमसीएम जल में से 1744 एमसीएम पेयजल, 205.75 एमसीएम उद्योगों, 1159.38 एमसीएम जल नए सिंचित क्षेत्र, 615.43 एमसीएम जल पूर्व निर्मित बांधों में जल अपवर्तन के लिए, 108 एमसीएम जल भू-जल पुनर्भरण के लिए उपयोग किया जा सकेगा। शेष 270 एमसीएम जल का उपयोग खराब मानसून के समय में पेयजल उपलब्धता सुनिश्चित करने एवं डीपीआर के अनुसार अन्य विकास कार्यों में उपयोग में लिया जा सकेगा।

उल्लेखनीय है कि राज्य सरकार प्रदेश में पेयजल और सिंचाई के लिए जल उपलब्धता बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में संशोधित पीकेसी (पार्वती-कालीसिंध-चम्बल) एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। इसके जरिए राजस्थान के 17 जिलों के लगभग सवा 3 करोड़ लोगों और 2.51 लाख हेक्टेयर नए क्षेत्र में सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था हो सकेगी। पूर्व में स्थापित 1.52 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में भी सिंचाई के लिए अतिरिक्त पानी उपलब्ध हो सकेगा।

- पार्बती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना को अंतिम रूप देने के लिये हुई बैठक में राजस्थान के लिये 4102 एमसीएम जल निर्धारण किया गया। राजस्थान के हिस्से के जल का, पेयजल, उद्योगों, नये सिंचित क्षेत्र, पूर्व निर्मित बाँधों में जल अपवर्तन, भूजल पुनर्भरन तथा खराब मानसून के समय पेयजल उपलब्ध कराने के लिये विभिन्न मात्रा में जल निर्धारण तय किया गया।

मुम्बई में जी.बी.एस. संक्रमण से पहली मौत

मुंबई, 12 फरवरी। महाराष्ट्र में गुलियन-बेरी सिंड्रोम (जीबीएस) के संदिग्ध मरीजों की संख्या 200 के पार पहुंच गई है। वहीं, मुंबई में इस बीमारी से पहली मौत के साथ ही राज्य में एक महीने में जीबीएस से संदिग्ध तौर पर 8 लोगों की जान जा चुकी है। पुणे में जीबीएस के सबसे ज्यादा मरीज हैं और यह संख्या लगातार बढ़ रही है।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अनुसार पुणे क्षेत्र में जीबीएस के संदिग्ध और पुष्टि किए गए मामलों की संख्या 203 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि 203 मामलों में से 176 में जीबीएस का इलाज किया जा रहा है। इसमें से 52 मरीज आईसीयू में है, तथा 20 मरीज वेंटिलेटर सपोर्ट पर हैं। पुणे महानगरपालिका क्षेत्र में 41, ग्रामीण इलाकों से आए 94 मरीजों के अलावा पुणे ग्रामीण क्षेत्र के 31 सहित अन्य जिले के 8 मरीजों का अस्पतालों में जीबीएस का उपचार चल रहा है।

- महाराष्ट्र में इस संक्रमण से 8 मरीज मर चुके हैं। संक्रमितों की संख्या 200 के पार पहुंच गई है।

बंगलौर की मैट्रो का किराया दोगुना हुआ

भाजपा व कांग्रेस, दोनों इस वृद्धि के लिये एक दूसरे पर आरोप लगाने में जुटी हैं

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 फरवरी। बेंगलुरु मेट्रो के किराए में भारी वृद्धि ने सिद्धारमैया सरकार की छवि और बैंगलोर की जनता के बीच सरकार की लोकप्रियता को भारी नुकसान पहुँचाया है, जो मैट्रो किराया वृद्धि पर नाराज हैं। इसे कर्नाटक में कांग्रेस सरकार के लिए बहुत बुरा प्रचारक ही जा रहा है।

भाजपा के लिए, यह दृश्य आदर्श है। भाजपा ने कांग्रेस सरकार को एक जनविरोधी और लापरवाह संस्था के रूप में पेश करने में कोई समय नहीं गंवाया और आरोप लगाया कि कांग्रेस ने सभी सावधानियों और अर्थशास्त्र को नज़रअंदाज़ कर राज्य को उस स्थिति में पहुंचा दिया, जहां आम लोग खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं।

यह कथानक कांग्रेस पर चिपक रहा है और सरकार बैकफुट पर है, सरकार जो बचाव पेश कर रही है उस पर लोग विश्वास करने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं, भले ही यह तथ्यों के आधार पर सही हो।

यह सही है, बेंगलुरु मैट्रो में किराया वृद्धि बहुत ज्यादा है, कुछ मामलों में पहले से लगभग दोगुनी और स्वाभाविक रूप से, भाजपा ने इस मुद्दे पर सरकार को जमकर निशाने पर लिया है और कहा है कि राज्य सरकार लोगों को हर तरीके से लूट रही थी ताकि अपनी वोट-बटोरने वाली मुफ्त योजनाओं के लिए धन जुटा सके।

भाजपा की आलोचना का जवाब देते हुए, राज्य के परिवहन मंत्री के रामलिंग रेड्डी ने कहा कि मैट्रो किराया वृद्धि जो दो दिन पहले लागू हुई थी, में राज्य सरकार की बिल्कुल भी कोई भूमिका नहीं थी। किराया वृद्धि केंद्रीय सरकार द्वारा चलाए जा रहे मैट्रो कॉर्पोरेशन द्वारा तय और लागू की गई थी। रेड्डी ने कहा कि भाजपा हमेशा किसी भी चीज़ का श्रेय लेने में सबसे आगे रहती है, लेकिन जब दोष लेने का समय आता है तो वे दूसरे पर डाल देती हैं।

मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने यह बात शुरु की, उन्होंने कहा कि बेंगलुरु मैट्रो केंद्र, राज्य सरकार और मैट्रो कॉर्पोरेशन का संयुक्त ऑपरेशन है और इसके सी.ई.ओ. केंद्रीय शहरी विकास सचिव भी हैं और किराए में वृद्धि का निर्णय उन अधिकारियों द्वारा लिया गया था, जिन पर केंद्रीय सरकार का नियंत्रण है।

सिद्धारमैया ने भाजपा नेताओं के खिलाफ अभियान छेड़ा और कहा भाजपा नेता हमेशा मैट्रो परियोजना का श्रेय लेने में आगे रहते हैं और किराया वृद्धि पर सार्वजनिक आक्रोश होने पर कांग्रेस को दोषी ठहराते हैं। भाजपी नेता झूठ व आधा सच फैला रहे हैं ताकि 5 साल बाद हुई किराया वृद्धि पर तथ्यों को तोड़मरोड़ सकें।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- भाजपा, कर्नाटक की कांग्रेस सरकार पर आरोप लगा रही है कि सस्ती लोकप्रियता के लिये ''रेवड़ियाँ'' बांटने के कारण राज्य सरकार ने ''इकॉनमी'' को तहस-नहस कर दिया है तथा आम आदमी से मैट्रो किराया वृद्धि जैसी स्कीमों से पैसा लूट कर, ''रेवड़ियाँ'' बाँटने के लिये पैसे इकट्ठे कर रही है और यहीं से मैट्रो का किराया दोगुना करने की दुखंतिका की शुरुआत हुई है।
- कांग्रेस का कहना है कि किराया वृद्धि में उसकी कोई भूमिका नहीं है। बैंगलोर मैट्रो केन्द्रीय सरकार का प्रोजैक्ट है तथा भारत सरकार के नगरीय विकास सचिव इस प्रोजैक्ट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी हैं तथा सरकार और अफसरों से मिलजुल कर मैट्रो का किराया बढ़ाने का निर्णय लिया है।
- यह भी सच है कि 2017 में जब मैट्रो का किराया निश्चित किया गया था तब मैट्रो 42.30 किलोमीटर चलती थी, पर, अब 175.55 किलोमीटर लंबा है, मैट्रो का नैटवर्क। अतः, किराया तो बढ़ना ही है।

मुख्य पुजारी आचार्य सत्येन्द्र दास का निधन

लखनऊ, 12 फरवरी। अयोध्या में रामलला मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास का 80 साल की उम्र में निधन हो गया। बुधवार सुबह 7 बजे लखनऊ पीजीआई में उन्होंने आखिरी सांस ली। 3 फरवरी को ब्रेन हेमरेज के बाद उनको अयोध्या से लखनऊ रैफर किया गया था।

पीजीआई निदेशक डॉक्टर आर.के. धीमान ने बताया, डॉक्टरों की निगरानी में लगातार उनका इलाज चल रहा था। ब्रेन स्ट्रोक के अलावा सत्येंद्र दास को कई अन्य बीमारियां भी थीं। काफी प्रयास के बावजूद उनकी जान नहीं बचाई जा सकी।

आचार्य सत्येंद्र दास का पार्थिव शरीर अयोध्या के सत्य धाम गोपाल मंदिर आश्रम में अंतिम दर्शन के लिए रखा गया है। आचार्य सत्येंद्र दास के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- प्रधानमंत्री मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी ने शोक जताया।

'फोन टैपिंग आज की हो या पहले की, निष्पक्ष जाँच होनी चाहिए'

पायलट ने कहा, आरपीएससी पर हाई कोर्ट की टिप्पणी बहुत कुछ बयां कर रही है

जयपुर, 12 फरवरी। राजस्थान में फोन टैपिंग के मुद्दे पर छिड़े सियासी घमासान के बीच जहां डॉक्टर किरोड़ी लाल मीणा ने भाजपा की ओर से मिले नोटिस का जवाब देते हुए अपनी गलती मान ली है,वहीं दूसरी ओर कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने कहा है कि यह कोई छोटा-मोटा मुद्दा नहीं है। यह गंभीर अपराध है। विशेष रूप से जब मंत्री खुद कह रहे हैं कि उनका फोन टैप हो रहा है।

पायलट ने कहा कि अगर कांग्रेस के लोग कहें तो आप कहोगे कि यह राजनीति से प्रेरित है। अब इस पर क्या कहेंगे। उन्होंने कहा कि इस तरह की कोई भी घटना चाहे आज की हो या पहले की, उसकी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

पायलट बोले, हर गलती सजा मांगती है। कोई गलती करेगा तो सजा मिलनी चाहिए। कांग्रेस सरकार के समय लगे फोन टैपिंग के आरोपों पर उन्होंने कहा कि यह मामला कोर्ट में विचाराधीन है। सच सामने आ जाएगा।

कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने जयपुर में अपने आवास पर राजस्थान में फोन टैपिंग के मुद्दे पर मीडिया से वार्ता की।

पायलट ने कहा कि सरकार के एक मंत्री हैं, जिन्होंने सार्वजनिक मंच पर आरोप लगाया कि उनका फोन टैप हो रहा है। वो खुद कह रहे हैं कि उनका फोन टैप हुआ है। उन पर उनका दल नोटिस देकर जवाब मांगने की कार्रवाई करता है। यह उनका अंदरूनी मामला है।

पायलट ने कहा कि हाईकोर्ट ने आरपीएससी को लेकर जो टिप्पणी की है, वह अपने आप में बहुत कुछ बयां कर रही है। आरपीएससी नौजवानों का भविष्य तय करने वाली संस्था है। हमने पहले भी कहा है कि आरपीएससी की कार्यप्रणाली पूरी तरह से कम्प्रोमाइज़्ड हो चुकी है।

उन्होंने कहा कि ईआरसीपी को लेकर पहले राजस्थान को जितना पानी मिलना चाहिए था। अब सामने आया है कि नए एमओयू में उतना पानी नहीं मिल रहा है। इस पर भी सरकार को सदन में जवाब देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि समरवता में हुई घटना के बाद हमने न्यायिक जांच की मांग की थी। हमने कहा था कि प्रशासनिक और पुलिस जांच से सच सामने नहीं आएगा। न्यायिक जांच से ही पीड़ितों को न्याय मिल सकता है, लेकिन सरकार नहीं चाहती कि पीड़ितों के साथ न्याय हो।

- उन्होंने कहा कि नये एमओयू में राजस्थान को पहले से कम पानी मिल रहा है। सरकार को विधानसभा में इस पर जवाब देना चाहिये।
- समरावता की घटना पर पायलट ने कहा, ''हमने पहले कहा था कि प्रशासनिक और पुलिस जाँच से सच सामने नहीं आयेगा, न्यायिक जाँच से ही पीड़ितों को न्याय मिल सकता है।

भाजपा ने दिल्ली की हारी हुई सीटों पर मंथन किया

नयी दिल्ली, 12 फरवरी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की दिल्ली प्रदेश की बुधवार को चुनाव प्रबंध समितियों की समीक्षा बैठक हुयी, जिसमें पार्टी कार्यकर्ताओं को धन्यवाद दिया गया और हारी हुई विधानसभा सीटों का आकलन किया। दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और पार्टी प्रभारी बैजयंत जय पांडा की अध्यक्षता में हुयी इस बैठक पार्टी के सह प्रभारी अतुल गर्ग, केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा, सांसद प्रवीण खंडेलवाल, सांसद बांसुरी स्वराज, सांसद रामवीर सिंह बिधुड़ी और भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव तरुण

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- भाजपा की दिल्ली की चुनाव प्रबंध समितियों ने बैठक में चुनाव जीत के लिए कार्यकर्ताओं का आभार जताया गया।

विचार बिन्दु

प्रत्येक कार्य अपने समय से होता है उसमें उतावली ठीक नहीं, जैसे पेड़ में कितना ही पानी डाला जाय पर फल वह अपने समय से ही देता है। –वृंद

मोदी ने मन की बात में हौसला अफजाई के साथ अध्यापकों और पैरेंट्स को दिया संदेश

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात के 8वें संस्करण में बच्चों की हौसला बढ़ाने के साथ ही अध्यापकों और अभिभावकों को भी स्पष्ट संदेश दिया है। आज आवश्यकता बालक मन को समझने, उसकी प्रतिभा को निखारने, प्रस्पिर्धा के स्थान पर क्रियेटिविटि को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। बच्चों में परीक्षा के नाम से भय ना होकर उत्साह और सकारात्मक सोच होना चाहिए। डर नहीं बल्कि कुछ पाने की चाह होनी चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक बार फिर परीक्षाओं से पहले देश के परीक्षार्थी बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों से मन की बात के माध्यम से संवाद कायम कर मोटिवेट करने की बडी पहल की है। मन की बात में परीक्षा पर चर्चा के आठवें संस्करण का महत्व इसलिए महत्वपूर्ण और सामयिक हो जाता है कि आने वाले दिनों में सीबीएसई और राज्यों के बोर्डों की परीक्षाएं होने जा रही है। देश के प्रधानमंत्री की संपूर्ण परीक्षा व्यवस्था और इसके साइड इफेक्ट को समझते हुए संवाद कायम करना अपने आप में महत्व रखता है। देश के लगभग सभी कोनों से तनाव, शिक्षकों और अभिभावकों की अतिमहत्वाकांक्षा के चलते बच्चों द्वारा डिप्रेशन में जाने और अपनी जीवन लीला समाप्त करने के समाचार आम होते जा रहे हैं। हांलाकि शिक्षा नगरी कोटा बच्चों की आत्महत्या के लिए बदनाम हो गया है पर कोटा से अधिक आत्महत्याएं देश के अन्य हिस्सों में भी हो रही है। हांलाकि कोचिंग हब कोटा को आत्महत्याओं के दाग को धोने के लिए सार्थक प्रयास करने होंगे। खैर यह विषयांतर होगा। खास बात यह है कि प्रधानमंत्री मोदी ने एक जिम्मेदार अभिभावक की भूमिका निभाते हुये ना केवल परीक्षार्थियों की हौशला अफजाई की है अपितु अध्यापकों और पैरेंट्स को भी स्पष्ट संदेश दिया है।

इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए कि बच्चों के कोमल मन को प्रतिस्पर्धा के बोझ तले दबाने में आज घर, परिवार, समाज, शिक्षा केन्द्र और सोशियल मीडिया प्रमुखता से नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। पता नहीं शिक्षा व्यवस्था में भी यह किस तरह का बदलाव है कि 20-21वीं सदी में दसवीं पास करना बड़ी बात माना जाता था तो परीक्षा देने वाले लाखों बच्चों में से फर्स्ट डिविजन कुछ हजार तक ही रहते थे उसके बाद लगभग दोगुणे द्वितीय श्रेणी में व बाकी तीसरी डिविजन में संतोष कर लेते थे। आज हालात यह है कि परीक्षा देने वाले अधिकांश बच्चों के मार्क्स तो 90 प्रतिशत या इससे अधिक ही होते हैं। 80 से 90 प्रतिशत तक उससे कम और उनसे भी कम बच्चें इससे कम प्रतिशत में होते हैं। यहां सवाल परीक्षा प्रणाली को लेकर हो जाता है तो दूसरी और प्रतिस्पर्धा की यह खिचड़ी 90 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले बच्चों और खासतौर से उनके पैरेंटस में होने लगी है। अब तो हो यह गया है कि पैरेंट्स की प्रतिष्ठा के लिए बच्चों की बली चढ़ाई जाने लगी है। प्रधानमंत्री मोदी ने सही ही कहा है कि कूकर के प्रेशर की तरह बच्चों को प्रेशर में रखना ही अभिभावकों और शिक्षकों की भूमिका में आ गया है। अब अभिभावक दिशा देने वाले के स्थान पर अपनी कुंठा को बच्चों से पूरा कराने में जुटे हैं। यह वास्तविकता है। बच्चें की लगन किसी और दिशा में होती है और उससे अपेक्षा कुछ और करने या बनाने की होने लगती है। कुछ बच्चों का कोमल मन यह प्रेशर सहन नहीं कर पाता है और डिप्रेशन या मौत को गले लगा लेते हैं और फिर पैरेंट्स आंसू पूछते रह जाते हैं।

परीक्षा पर चर्चा की अच्छी बात यह है कि देश के 3.30 करोड़ बच्चों, 20 लाख शिक्षकों और साढ़े पांच लाख से अधिक अभिभावक इससे जुड़े। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए क्रिकेट का उदाहरण देते हुए बैटिंग करने वाले खिलाड़ी की भूमिका निभाने का संदेश दिया तो टाइम मैनेजमेंट पर फोकस करने, लिखने की आदत ड़ालने, खुल कर अपनी बात कहने, मन को शांत रखने, केवल किताबी कीड़ा नहीं बनने, रोबोट नहीं इंसान बनने और पूरी नींद लेने के लिए मोटिवेट किया। सबसे खास बात यह कि बच्चों को स्वयं से प्रतिस्पर्धा करने का संदेश दिया।

परीक्षा पर चर्चा की अच्छी बात यह है कि देश के 3.30 करोड़ बच्चों, 20 लाख शिक्षकों और साढ़े पांच लाख से अधिक अभिभावक इससे जुड़े। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए क्रिकेट का उदाहरण देते हुए बैटिंग करने वाले खिलाड़ी की भूमिका निभाने का संदेश दिया तो टाइम मैनेजमेंट पर फोकस करने, लिखने की आदत ड़ालने, खुल कर अपनी बात कहने, मन को शांत रखने, केवल किताबी कीड़ा नहीं बनने, रोबोट नहीं इंसान बनने और पूरी नींद लेने के लिए मोटिवेट किया। सबसे खास बात यह कि बच्चों को स्वयं से प्रतिस्पर्धा करने का संदेश दिया। हमें दूसरे के स्थान पर स्वयं से प्रतिस्पर्धा करनी है। स्वयं से प्रतिस्पर्धा करेंगे तो आत्मविश्वास बढ़ेगा। दरअसल होता यह है कि दूसरे प्रतिस्पर्धा करने के चक्कर में नकारात्मकता अधिक आती है। होना तो यह चाहिए कि अपनी कमियों को ही सबक बनाकर बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

आज बच्चों को खुला आसमान चाहिए। जहां वह अपनी क्षमता का बेहतर प्रदर्शन कर सकें। मोदी जी ने बच्चों को मोटिवेट करते हुए कहा है कि विफलताओं से निराश नहीं होकर उससे सबक लेना चाहिए। जीवन में सफल होने के लिए बहुत कुछ होता है। मोदी जी ने मन की बात में बच्चों, परिजनों और टीचर्स तीनों को ही संदेश देने का प्रयास किया है। होता यह है कि जो बच्चें हौशियार होते हैं या प्रभावशाली परिवार के हैं तो टीचर्स का उन पर विशेष ध्यान होता है और जो बच्चें कमजोर होते हैं तो पीटी मीटिंग के माध्यम से पैरेंट्स को नीचा दिखा कर इतिश्री कर लेते हैं। बच्चों की नाकामी पर कभी किसी स्कूल ने या टीचर ने जिम्मेदारी ली हो यह आज तो लगभग असंभव ही है। चाहे आप पढ़ाई के नाम पर स्कूल को कितनी ही फीस देते हो आप पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष तौर पर बच्चें को ट्यूशन कराने का दबाव तो आ ही जाता है। यदि शिक्षण संस्थानों में कमजोर और औसत बच्चों पर अधिक ध्यान दिया जाएं तो तस्वीर का पहलू दूसरा ही हो सकता है। इसी तरह से पैरेंट्स को भी नसीहत देने में मोदी जी पीछे नहीं रहे हैं। पैरेंट्स को बच्चों की लगन, रुचि को समझना होगा। अपनी अपेक्षाएं उस पर लादने के स्थान पर दिशा देने के प्रयास करने होंगे। बच्चों के साथ बैठकर खुलकर बात करें। उनकी ईच्छा लगन और कोई परेशानी है तो उसे समझने का प्रयास करें। बच्चों में परस्पर तुलना करके बालक मन को कुंठित नहीं करना चाहिए। बच्चों को निराश करने के स्थान पर मोटिवेट करने के समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। बच्चों को मशीन नहीं बनाया जाना चाहिए। बच्चों को समझाया यह जाना चाहिए कि 24 घंटें का समय सभी के पास होता है, इस समय को किस प्रकार से उपयोग करना है इस पर फोकस हो तो निश्चित रुप से अच्छे परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। कहने का अर्थ यह है कि बच्चों का मनोबल बढ़ाने उनमें सकारात्मकता विकसित करने की दिशा में हमें काम करना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने परीक्षाओं से पहले अपने प्रधानमंत्री काल में 8वीं बार परीक्षा पर चर्चा करते हुए बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों को संदेश देने का सार्थक प्रयास किया गया है। अब सबका दायित्व हो जाता है कि इन सकारात्मक पक्षों को बच्चों तक पहुंचाया जाएं। बच्चों को समझाना होगा कि बड़ी बात जीवन में सफल होना है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

क्या विज्ञान ही वास्तविक अलौकिकता है?

डॉ. रामावतार शर्मा

यदि हम आज से हजारों साल पहले की दुनिया के बारे में कल्पना करें और यदि धर्म कथाओं की किंवदंतियों को छोड़ दिया जाए जो कि वास्तविकता में बहुत बाद में प्रकाशित हुई हैं, तो हम स्पष्ट तरह से अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे अति प्राचीन पुरखों ने एयरोप्लेन, कार, कंप्यूटर, मोटरबाइक आदि डिजाइन करने के बारे में नहीं सोचा होगा। एक समय ऐसा भी रहा होगा जब आदि मानव ने घर या चारपाई तक के बारे में भी कल्पना न की होगी। ज्यादा दूर नहीं जाएं तो भी हम पाएंगे कि आज से चंद दशकों पहले किसी ने माइक्रोचिप और आधुनिक मोबाइल के बारे में सोचा भी नहीं होगा। यदि ध्यान से सोचा जाए तो उपरोक्त सभी विकास और आधुनिक तकरीबन सारी वस्तुएं भूतकाल में कभी भी पृथ्वी पर मानव जीवन और जीवन के प्रति सोच का हिस्सा नहीं रही है जबकि हम चौथी विकास क्रांति के तो अभी प्रारंभ में ही हैं। इस मानवीय विकास का कोई व्यक्ति विशेष प्रणेता भी नहीं है और 17वीं से 20वीं सदी के नायक वैज्ञानिकों की तरह आज जन सामान्य में सर्व विदित वैज्ञानिक भी नहीं हैं जिन्हें इस क्रांतिकारी विकास का बड़ा श्रेय दिया जा सके। आज का विज्ञान एक संस्थागत, व्यावसायिक और व्यापक आधार वाला तंत्र है जहां उपभोक्ता भी आविष्कार के विकास में सहायक है। उदाहरण के लिए उपभोक्ता मोबाइल फोन और कार आदि के विकास में भी सहायक होते हैं, इनपुट्स देते है और एक तरह से आर्थिक भागीदारी करते हैं क्योंकि बड़ी मात्रा में उपभोग निर्माताओं के पास बहुत बड़ी मात्रा में धन प्रवाहित करता है। धन की यह उपलब्धता और नई खोज को जन्म देती है।

हमारे पूर्वजों ने तारे, सूरज, चांद, बादल आदि को बहुत ही गौर से देखा होगा। वे अचंभित भी हुए होंगे और कितनी ही तीव्र उत्सुकताओं ने उनके मस्तिष्क के उन्हीं भागों को क्रियाशील बनाया होगा जिन भागों को आज की वैज्ञानिक उपलब्धित सक्रिय करती हैं। माना कि उनके पास दवाएं, उपकरण, कृषि ज्ञान, स्वचालित हथियार और घरेलू संसाधन नहीं थे परंतु मानव जीवन की प्रारंभिक अवस्था के हजारों साल बाद उन्होंने इस सब आयामों के बारे में कल्पना करना अवश्य प्रारंभ किया होगा फिर चाहे ऐसे लोग बहुत कम संख्या में ही क्यों न रहे होंगे। उन्होंने आकाशीय और तटीय घटनाओं को देखा होगा और उनका विश्लेषण करने के प्रयास भी किए होंगे परंतु ज्ञान एवं संसाधनों के अभाव में वे ज्यादा कुछ कर नहीं पाए। आज का वैज्ञानिक आधारभूत ढांचा तो आज से 20-25 वर्ष पहले तक ही उपलब्ध नहीं था। ऐसे हालातों में यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि बीती सदियों में हजारों साल के मापदंड पर देखा जाए तो किसी व्यक्ति के जीवन में एक भी क्रांतिकारी घटना या खोज न हुई हो क्योंकि उस समयकाल में क्रांतिकारी खोज तो सैकड़ों सालों में एक दो बार हुआ करती थी जैसे कि आग को पैदा करना, धातु तैयार करना, धनुष का विकास आदि।

मनुष्य ने निश्चित तौर पर उस दौरान भी एक आरामदायक और सुरक्षित जीवन के बारे में प्रयास किया होगा। विकास को गति देने की कोशिशें जरूर हुई होंगी लेकिन संसाधन नहीं होने से बात आगे नहीं बढ़ती थी। ऐसे में लोग कल्पनाएं करते थे जो आगे चलकर किवदंतियां बनी और एक समयकाल के बाद धार्मिक ग्रंथों का हिस्सा बन कर आज तक हमारे सोच पर छाई हुई है। मिथक की अपनी एक जीवन शक्ति होती है जो सदियों बाद भी उसे सजीव जैसा रखती है क्योंकि यह मिथक मानव मस्तिष्क के एक विशेष हिस्से को सदियों तक जागृत किए रखे था। मिथक से मुक्ति पाना आसान नहीं है फिर चाहे कोई विज्ञान पढ़े या मनोविज्ञान का अध्ययन करे। यहां एक भय यह है यदि एआई ने इस मानवीय मिथक कमजोरी को पकड़ लिया तो भविष्य में यह नई शक्ति मनुष्य को पछाड़ कर उसके अस्तित्व पर हावी हो सकती है।

18वीं सदी के मध्य से आधुनिक औद्योगिक क्रांति कोयले की खोज से प्रारंभ हुई और 21वीं सदी के आते आते तो विकास की घटनाएं बड़ी तेज गति से बढ़ी। आज स्थिति यह कि कोई 7 लाख किलोमीटर प्रति घंटे की गति से अग्रसर सूर्य यान हमें अचंभित नहीं करता, इस बारे में आज का जन समूह बात तक नहीं करता, कोई नई खोज हमें उत्साहित तो करती है पर हम विस्मित नहीं होते है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि अब हमारे सौ साल के अपेक्षित जीवन में हजार के आसपास नई वस्तुएं हमारे आसपास निर्मित हो रही हैं और असंख्य छोटे-बड़े आविष्कार लगातार सामने आते रहते हैं। आविष्कार की निरंतरता ने आविष्कार से चमत्कृत होने के हमारे स्वभाव को समाप्त कर दिया है। ऐतिहासिक रूप में प्रबोधन या अलौकिकता को सत्ता ने अध्यात्म एवं धर्म से जोड़े रखा है।

यह एक सूक्ष्म तरीके का षडयंत्र है जिसके द्वारा सत्ता में बैठे लोग हर एक व्यक्ति को नियंत्रित रख सकें। विज्ञान की क्रांति ने एक विशेष प्रकार की अलौकिकता का विकल्प हमारे सामने रखा है। विज्ञान का ज्ञान हर समय हर जगह उपलब्ध है। आपका मोबाइल फोन विश्व की किसी भी लाइब्रेरी से कितने ही गुना अधिक सूचनाएं एवं विचार आप तक तुरंत प्रभाव से पहुंचा सकता है। ज्ञान की यह उपलब्धता एक क्रांति है जो सत्ता में बैठे लोगों के लिए बड़ी चुनौती बन कर उभर रही है।

यही कारण है कि पूरे विश्व में लोगों को वापस पुराने धार्मिक ग्रंथों की तरफ धकेला जा रहा है। माना कि इन ठांथों में कुछ बेहतरीन ज्ञान है परन्तु इनमें अधिकता तो कट्टर स्व: मताभिमान (डोगमा) की ही पाई जाती है। इन ग्रंथों में उपस्थित मिथ्या को इंगित करना जानलेवा हो सकता है। इसके विपरीत विज्ञान में हर थ्योरी का विरोध हुआ है, होता रहेगा और यह आलोचना ही विज्ञान के विकास का कारण रहा है। विज्ञान में हर सिद्धांत को सिद्ध होने की कसौटी से गुजरना ही पड़ेगा और यह बात ही विज्ञान के विकास का सबसे बड़ा कारण है।

यह एक बड़ा कारण है जिसके कारण विज्ञान को व्यापार के साथ गठबंधन में डाल कर सत्ता ने इसकी आलौकिकता को नष्ट कर दिया है ताकि लोग विज्ञान को अलौकिक मार्ग की बजाय धनोपार्जन का माध्यम मात्र मान लें। ऐसा करने में विश्व की सत्ताएं सफल हो रही है जो कि एक दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। सामान्य लोग सत्ता में बैठे लोगों का अंधानुकरण कर विज्ञान का उपयोग नहीं कर पा रहे है बल्कि इसके दुरुपयोग द्वारा टारगेटेड झूठ के प्रसारण में सहायक हो रहे हैं। यह एक ऐसा कारण है जो विज्ञान के माध्यम से अलौकिकता तक पहुंचने में बड़ी बाधा बन रहा है।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

कुलधरा में मांडणा आर्ट प्रदर्शनी का आयोजन

मांडणा आर्ट प्रदर्शनी का पर्यटकों ने लुत्फ उठाया

देशी-विदेशी सैलानियों ने स्थानीय मांडणों को बारिकी से देखा एवं अपने कैमरों में कैद किया।

जैसलमेर, (निसं)। मरू महोत्सव के अंतिम दिवस 12 फरवरी बुधवार को प्राचीन ऐतिहासिक कुलधरा गांव में मांडणा आर्ट प्रदर्शनी व रंगोली का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मांडणा आर्ट प्रदर्शनी व रंगोली को देशी-विदेशी सैलानियों ने उत्साह के साथ देखा एवं वहां पर स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा दी जा रही सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का लुत्फ उठाया।

जैसलमेर विकास समिति के सचिव चन्द्रप्रकाश व्यास के निर्देशन में प्राचीन घरों पर मांडणा भी बेहतरीन व आकर्षक बनाये गये। वहीं रंगोली भी उकेरी गई। यहां पर आये देशी-विदेशी सैलानियों ने सहित कई लोगों ने स्थानीय मांडणों को बारिकी से देखा एवं अपने कैमरों में कैद किया।

पांचवीं-आठवीं बोर्ड परीक्षा फार्म भरने की अंतिम तिथि बढ़ी

सरकारी और प्राइवेट स्कूलों ने अब तक नहीं भरे एग्जाम फॉर्म, दूसरी बार डेट बढ़ाई

- **पांच फरवरी तक केवल 80 फीसदी अभ्यर्थियों की ओर से ही परीक्षा फॉर्म भरे गए हैं**
- **फॉर्म भरने से कुल वंचित अभ्यर्थियों में 40 हजार आठवीं और 80 हजार पांचवी के विद्यार्थी शामिल हैं**

बीकानेर, (निसं)। पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षा ने पांचवीं और आठवीं बोर्ड पैटर्न परीक्षा के एग्जाम फॉर्म की लास्ट डेट दूसरी बार बढ़ाई है। अब 15 जनवरी तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं शिक्षा विभाग ने साफ कर दिया है कि ये अंतिम अवसर है। इसके बाद डेट्स में बढ़ोतरी नहीं होगी।

पंजीयक नरेंद्र सोनी ने बताया कि अभी भी बड़ी संख्या में प्राइवेट और सरकारी स्कूल के प्रिंसिपल ने ऑनलाइन आवेदन लॉक नहीं किए हैं। ऐसे में स्टूडेंट्स को ध्यान में रखते हुए दूसरी बार डेट बढ़ाई गई है। दोनों क्लास में करीब 26 लाख रुपए स्टूडेंट्स है, जिसमें एक लाख से ज्यादा स्टूडेंट्स के फॉर्म बुधवार तक भी अधूरे थे। आमतौर पर शिक्षा विभाग हर साल दो बार लास्ट डेट्स बढ़ा देता है। पंजीयक शिक्षा विभागीय परीक्षाएं राजस्थान बीकानेर ने परीक्षा फार्म बनाने का प्रोसेस 20 जनवरी से शुरू किया था। पूर्व में अंतिम तिथि 5 फरवरी निर्धारित की गई थी। 5 फरवरी तक केवल 80 फीसदी अभ्यर्थियों की ओर से ही परीक्षा फॉर्म भरे गए। ऐसे में शिक्षा विभाग ने अंतिम तिथि में सप्ताह भर की और बढ़ोतरी की थी। पंजीयक ने बताया कि अब अंतिम तिथि में बढ़ोतरी की संभावना कम है। संबंधी संस्था प्रधानों को निर्धारित समय 12 फरवरी तक आवेदन की प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश दिए गए हैं। दो दिन पहले तक करीब 1.20 लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा फॉर्म नहीं भरा है। इन अभ्यर्थियों के पास अब दो दिन का समय शेष है। फॉर्म भरने से कुल वंचित अभ्यर्थियों में 40 हजार आठवीं और 80 हजार पांचवी के विद्यार्थी शामिल हैं।

माघ मास की पवित्र पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने पुष्कर सरोवर में डुबकी लगाई

पुष्कर/अजमेर, (निसं)। माघ मास की पवित्र पूर्णिमा के मौके पर बुधवार को पुष्कर सरोवर में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने स्नान व पूजन कर धर्मलाभ कमाया। श्रद्धालुओं ने जगतपिता ब्रहमा मंदिर में दर्शन कर पूजा-अर्चना की। आचार्य पवन शर्मा ने बताया कि धर्मशास्त्रों में माघ पूर्णिमा के स्नान, पूजन व दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है, जिसके चलते हजारों श्रद्धालु पुष्कर पहुंचे। वहीं शाम को जयपुर घाट पर सरोवर की दिव्य महाआरती का आयोजन किया गया।

माघ पूर्णिमा के मौके पर बुधवार की शाम पुष्करराज दिव्य महाआरती संघ की ओर से जयपुर घाट पर सरोवर की महाआरती की गई। संघ के संरक्षक अजय शर्मा ने बताया कि पं. कैलाशनाथ दाधीच के आचार्यत्व में सरोवर का अभिषेक किया गया। इसके साथ ही पं. चंद्रशेखर गौड़, ईशान गौड़, यश गौड़ ने तीन मंचों से सरोवर की दिव्य महाआरती की।

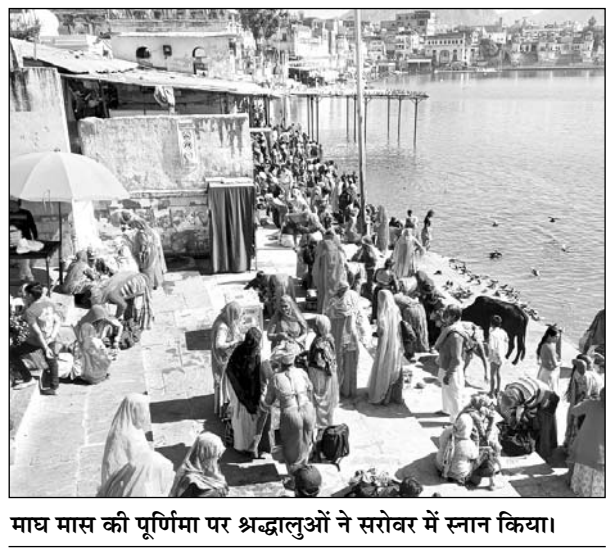

माघ मास की पूर्णिमा पर श्रद्धालुओं ने सरोवर में स्नान किया।

इस अवसर पर नगर सुधार न्यास अजमेर के पूर्व अध्यक्ष धर्मेश जैन, मांगीलाल, विकास खटाना, इंद्रसिंह पवार, बाबूलाल दग्दी, अर्पित सांखला, गायत्री शर्मा, अर्चना गौड़, अरुणा शर्मा, अर्चना जैन, विक्रम सिंह, रवि मेहता, कथावाचक स्वामी केशवचार्य महाराज काफी संख्या में धर्मप्रेमी महिला पुरूषों ने महाआरती में भाग लिया।

- **विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने पुष्कर में पवित्र सरोवर का दुग्धाभिषेक कर पूजा-अर्चना की**

स्नान के बाद श्रद्धालुओं ने जगतपिता ब्रह्मा मंदिर, रंगनाथ वेणुगोपाल मंदिर, वराह मंदिर, रमा बैकुंठ मंदिर, कल्याणजी मंदिर सहित सावित्री व पाप मोचनी पहाड़ी के दर्शन किए। माघ पूर्णिमा के अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने बुधवार को तीर्थ नगरी पुष्कर में पवित्र सरोवर का दुग्धाभिषेक कर पूजा-अर्चना की और जगतपिता ब्रह्माजी की पूजा-अर्चना कर दर्शन कर आशीर्वाद लिया। सिंधी समाज के कुलगुरु काली टोपी परिवार के पंडित सुरेश पाराशर और पंडित रवि पाराशर ने वेदोक्त मंत्रोच्चार के साथ विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी पुष्कर सरोवर में विशेष पूजा-अर्चना संपन्न करवाई। इस अवसर पर बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

इस अवसर देवनानी ने कहा कि माघी पूर्णिमा का दिन आध्यात्मिक ऊर्जा, पुण्य और मोक्ष प्राप्ति का विशेष अवसर है। इस शुभ दिवस पर तीर्थराज पुष्कर सरोवर पर पूजन व जगतपिता ब्रह्माजी के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर उन्होंने देश व प्रदेश के लोगों के लिए सुख समृद्धि और शांति की कामना करते हुए प्रार्थना की।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 13 फरवरी, 2025

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2081, मघा नक्षत्र रात्रि 9:07 तक, शोभन योग प्रात: 7:31 तक, बालव करण प्रात: 7:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज शब-ए-बारात है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:32 तक, चर 11:18 से 12:41 तक, लाभ-अमृत 12:41 से 3:27 तक, शुभ 4:50 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:09, सूर्यास्त 6:13

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धन हानि का भय है। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

तुला
आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों में परेशानी अभी यथावत बनी रहेगी। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सार-समाचार

मरीजों को फल वितरित

कोटा, (निसं)। आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की 201वीं जयंती पर एमबीएस अस्पताल के कैंसर वार्ड व जेके लोन मातृ शिशु अस्पताल में मरीजों को फल वितरित किए। आर्य समाज के मीडिया प्रभारी मुकेश चड्डा ने बताया कि एमबीएस अस्पताल के कैंसर विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आरके तँवर का स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया व सर्वे सन्तु निरामया की भावना तथा वेद मन्त्रों के साथ वार्ड में फल वितरित किए। इस अवसर पर डॉ.आर के तँवर ने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती महान समाज सुधार थे। समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों, बुराईयों को मिटाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया, महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार व सिद्धांत स्पष्ट व जन कल्याणकारी थे। इस अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा संभाग के प्रधान अरविंद पाण्डेय, डीएवी स्कूल कोटा की प्राचार्य पल्लवी अरोड़ा, धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य, वैदिक विदुषी डॉ.सुदेश आहूजा, कोषाध्यक्ष राधाबल्लभ, राकेश चड्डा, प्रदीप शर्मा, जय प्रकाश श्रीवास्तव, किशन आर्य हरियाणा उपस्थित रहे। जेके लोन अस्पताल के नर्सिंग अधीक्षक मोहन लाल बैरवा ने मातृ शिशु वार्ड में फल वितरण में सहयोग प्रदान किया।

राज्यसभा सांसद सुधांशु त्रिवेदी दो को कोटा आएंगे

कोटा, (निसं)। भाजपा के ख्यातनाम प्रवक्ता, राज्यसभा सांसद एवं सनातन के ओजस्वी वक्ता सुधांशु त्रिवेदी 2 मार्च को कोटा प्रवास पर रहेंगे। जितेंद्र गोयल तथा रवि अग्रवाल ने बताया कि सुधांशु त्रिवेदी कोटा के दशहरा मैदान में भारत विकास परिषद् एवं जनमंच की ओर से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। भारत विकास परिषद सुभाष शाखा की बुधवार को हुई आमसभा में कार्यक्रम को लेकर जिम्मेदारियां सौंपी गई। जिसमें जनमंच अध्यक्ष के जितेंद्र गोयल ने कहा कि सुधांशु त्रिवेदी प्रसिद्ध, अपने विचारों के धनी, हिन्दुत्व को बदनाम करने वालों का पर्दाफाश करने वाले सनातनी, राज्यसभा के सम्मानित सदस्य हैं। बैठक में जनमंच अध्यक्ष जितेंद्र गोयल, गोविंद माहेश्वरी, सुरेश अग्रवाल, शाखा अध्यक्ष तेजेश-रीमा, सचिव विकास-सौम्या, सतीश-ज्योति, दीप-अभिलाशा, प्रवीण-उषा, विष्णु-शशि, कमल- उमादेवी, वेदप्रकाश, बालमुकुंद, मुकुट बिहारी, अनिल, रवि अग्रवाल उपस्थित रहे।

किशोर लापता

छबड़ा (निसं)। बापचा क्षेत्र निवासी एक किशोर लापता हो गया। जिसे परिजनों ने हर जगह तलाश किया, किन्तु इसका कोई सुराग नही लगा। जानकारी अनुसार बापचा थाना निवासी माणकचौक निवासी मोहित लोधा (15) पुत्र जगदीश लोधा, जो यहां के मारुति नगर में किराए के मकान में रहकर पढ़ाई करता है। यह अभी कक्षा 10वीं में अध्ययनरत है। जो मंगलवार को सुबह 11 बजे से कमरे से बिन बताए लापता हो गया। यह किशोर मानसिक रूप से कमजोर भी बताया जा रहा है।

विकसित भारत की नींव आधार है, केन्द्रीय बजट : गोपाल कृष्ण अग्रवाल

कोटा, (निसं)। भाजपा राष्ट्रीय प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने केन्द्रीय बजट की परिचर्चा को लेकर कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वप्न के विकसित भारत निर्माण की नींव है प्रस्तुत बजट। जिससे जब भारत अपना 100वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा होगा, तब भारत में जीरो गरीबी हो जायेगी। भारत गरीबी की समस्या से मुक्त होकर पूर्ण विकसित देश बनेंगा।

राष्ट्रीय प्रवक्ता गोपाल कृष्ण अग्रवाल ने कहा कि भारत को विकसित बनाने के लिए बहुआयामी लक्ष्य तय करके, पूरी जवाबदेही से कार्यों को पूरा करने की रणनीति से प्रधानमंत्री मोदी की सरकार काम कर रही है। जिससे भारत पूर्ण विकसित राष्ट्र बनें। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी की सरकार नें बजट में कर प्रणाली को आसान किया है और मध्यमवर्ग को बड़ी राहत दी है।

अग्रवाल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व में सबसे तेज और व्यवस्थित गति से आगे बढ़ रही है। जिसकी जीडीपी दर विश्व में सबसे तेज है। वहीं विदेशी मुद्रा भंडार में हम आत्मनिर्भर हैं, इतिहास का सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार वर्तमान में भारत के पास है।

देश अपनी सभी आयात जरूरत को पूरा करने में आत्मनिर्भर है, सक्षम है। देश ने अर्थव्यवस्था के सभी मापदंडों पर श्रेष्ठता हासिल की हुई है। इस तरह से भारत विश्व में सबसे तेज गति वाली अर्थव्यवस्था वाला देश प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बन चुका है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के विजन आत्मनिर्भर भारत-2047 के लिए वर्तमान बजट में चार ग्रोथ इंजन तय किए गए हैं यह है कृषि, लघु उद्योग, निवेश और निर्यात। जिन पर विशेष फोकस करके देश की प्रगति को नई ऊंचाई प्रदान करने की कोशिश की जाएगी।

राष्ट्रीय प्रवक्ता अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान को केंद्रीय बजट से सभी प्रकार की घोषणाओं एवं योजनाओं और कल्याणकारी कार्यों का जमीनी स्तर तक लाभ प्राप्त होगा। वहीं केंद्र के बजट में नए एयरपोर्ट, नए टूरिज्म सेंटर, जल जीवन मिशन, नेशनल हाईवे, पॉवर सेक्टर , रेलवे जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में भी अतिरिक्त निवेश का लाभ मिलेगा।

इस अवसर पर मंचस्थ रहे रेड क्रॉस सोसायटी प्रदेश अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष राकेश जैन, मीडिया कोटा संभाग संयोजक अरविंद सिसोदिया, जिला उपाध्यक्ष रितेश चित्तौड़ा, सोशल मीडिया प्रदेश संयोजक मयंक सेठी स्वागत जिला अध्यक्ष राकेश जैन ने किया और संचालन मीडिया संभाग संयोजक अरविंद सिसोदिया नें किया।

मनोज दुबे तालाब बचाओ संघर्ष समिति के अध्यक्ष नियुक्त

- तालाबों पर भूमाफियाओं के द्वारा लगातार हो रहे अवैध अतिक्रमण चिंता का विषय
- तालाब बचाओ संघर्ष समिति करेंगी आंदोलन
- 'तालाबों को बचाने व संरक्षण की अति-आवश्यक है'

कोटा, (निसं)। मनोज दुबे को तालाब बचाओ संघर्ष समिति का अध्यक्ष चुना गया हैं। आज जल संरक्षण के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं की बैठक मे तालाब बचाओं संघर्ष समिति का गठन किया गया है। जो कुंओं तालाबों एवं बावडियों को बचाने के लिए आंदोलन करेंगी।

तालाब बचाओं संघर्ष समिति के नवनियुक्त अध्यक्ष मनोज दुबे ने कहा की भारत में जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय है। तथा तालाबों का अवैध भरान भी चिंता का विषय है।तालाब बचाओ संघर्ष समिति तालाबों पर हो रहे अवैध अतिक्रमण का पुरजोर विरोध करेंगी। तालाबों पर हो रहे अवैध अतिक्रमणों को खाली करवाकर तालाबों के स्वरुप मे लाया जाएगा।

मनोज दुबे ने कहा कि तालाब जल संरक्षण का बहुत बड़ा स्रोत है। हमारे भू-जल को बनाए रखने मे तालाबों की बहुत बड़ी भूमिका है।

तालाब रहेंगे तो हमें जल मिलता रहेगा। तालाब नष्ट होंगे तो हमें पानी के लिए परेशान होना पड़ेगा। तालाबों पर भू-माफियाओं के द्वारा लगातार हो रहे अवैध अतिक्रमण चिंता का विषय हैं। जिस ओर सरकार व जिला प्रशासन का ध्यान आकर्षित कर तालाबों से अतिक्रमण हटवाया जाएगा।

मनोज दुबे ने कहा की तालाब जहाँ बरसात के पानी को बचाने व जल स्तर को बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते है।

वही गांव बस्तियों को भारी वर्षा के कारण आने वाली बाढ़ से भी बचाव करते है। ऐसे में तालाब हमारे लिए बहुत उपयोगी है। तालाबों को बचाने व संरक्षण की अति-आवश्यक है।

कारागृह का निरीक्षण किया

कोटा, (निसं)। जिला प्रशासन व पुलिस प्रशासन की संयुक्त टीम ने बुधवार को केन्द्रीय कारागृह का औचक निरिक्षण किया। शहर पुलिस अधीक्षक डॉ.अमृता दुहन ने बताया कि अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट शहर अनिल कुमार सिंघल एवं शहर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिलिप सैनी के निर्देशन में पुलिस उपअधीक्षक वृत प्रथम योगेश शर्मा, पुलिस उपअधीक्षक वृत चतुर्थ मनीश शर्मा, पुलिस उपअधीक्षक एससी एसटी सेल के हरिराम सोनी एवं विभिन्न थानों के 20 थानाधिकारी सहित केन्द्रीय कारागृह के जेल अधीक्षक राजेन्द्र कुमार, सहित पुलिसकर्मियों ने गहनता से तलाशी ली।

होलिका रोपण किया

बून्दी (निसं)। हर वर्ष की भांति सनातन परंपरा का निर्वहन करते हुए वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ श्री रेतवाली महादेव मन्दिर पर होलिका पूर्णिमा पर होलिका का रोपण किया गया। समाज सेवी कालू कटारा ने बताया कि होली रोपण के साथ ही फाल्गुन माह की शुरुआत होने से प्रतिदिन मन्दिर पर होली के भजनों पर गुलाल एवं फूलों की होली खेली जायेगी एवं 13 मार्च को होलिका दहन शुभ मुहूर्त में कर दिया जायेगा। श्री रेतवाली महादेव पर करीब 80 वर्ष से होलिका दहन होता आ रहा है।

सार-समाचार

अवैध शराब व हथियार सहित गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। बूढ़ादीत थाना इलाके मे पुलिस टीम ने दो अलग-अलग मामलों में कार्यवाही करते हुए अवैध देशी शराब के 50 पव्वो एवं अवैध हथियार छुर्रा सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। कोटा ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि इटावा के पुलिस उपअधीक्षक शिवम जोशी के सुपरविजन में बूढ़ादीत थाने के उपनिरीक्षक रघुवीर सिंह हाड़ा के नेतृत्व मे गठित टीम ने दो अलग-अलग कार्यवाही करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम ने टाकरवदा रोड़ बूढ़ादीत के पास गोशाला के सामने कार्यवाही करते हुए अवैध देशी शराब को परिवहन करते हुए 50 पव्वों सहित बड़ा तलाब मोहल्ला बूढ़ादीत निवासी नरेश कुमार मीणा (32) को गिरफ्तार किया। वहीं टीम ने इलाके के किशनगंज नहर के समीप कार्यवाही करते हुए एक व्यक्ति को डिटेन कर तलाशी के दौरान उसके पास से अवैध हथियार छुर्रा बरामद किया। पुलिस ने मौके पर आर्म्स एक्ट में कार्यवाही करते हुए बूढ़ादीत निवासी देशराज (30) को गिरफ्तार किया। पकड़े गये दोनों आरोपियो से अनुसंधान जारी है।

श्रीमद्भागवत कथा का समापन

कोटा, (निसं)। स्टेशन स्थित श्रीराम मंदिर के माधव भवन में 5 फरवरी से चल रही श्रीमद् भागवत कथा का समापन बुधवार को हुआ। श्रीमद् भागवत कथा में वृंदावन से आये हुए कथा वाचक राहुल पराशर ने भागवत कथा में शिव-पार्वती विवाह वामन अवतार, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, गोवर्धन पूजा, रूकमणी मंगल व सुदामा चरित्र की कथा का वाचन किया। जिसे उपस्थित भक्तों ने श्रवण किया। श्रीमद् भागवत कथा के समापन के अवसर पर पूर्णाआहुति हुई और प्रसाद का वितरण किया गया। आयोजककर्ता राहुल पाराशर ने बताया कि पहली बार श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन श्रीराम मंदिर परिसर में कराया गया था। जिसमें बढ़-चढ़कर श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

शिविर में 74 मरीजों को परामर्श दिया

कोटा, (निसं)। सीएमएचओ डॉ. नरेन्द्र नागर के निर्देशन में बुधवार को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तत्वाधान में शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गोविंद नगर की ओर से वार्ड 11, काली माता मंदिर सूर्य नगर मे निःशुल्क आउटरीच चिकित्सा एव परामर्श शिविर लगाया गया। कैम्प में वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ.परवेज खान, फिजिशियन डॉ.हिदायत पठान, शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ.टीसी आचार्य ने सेवाएं दी। कैंप प्रभारी गिरीश शर्मा ने बताया कि कैम्प में 74 मरीजों को निःशुल्क परामर्श व दवाईयां दी गई। शिविर में एनसीडी स्क्रीनिंग, टीकाकरण भी किया गया। आभा आईडी, मां वाउचर योजना, आयुष्मान कार्ड वितरण सहित विभिन्न योजनाओं की जानकारी व मौसमी बीमारियों से बचाव के उपाय बताए गए।

कार्यालय कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ-15/कृ.भू.रू./2025/3308 **विज्ञप्ति** दिनांकः-12.02.2025

सर्व साधारण को जर्ये विज्ञप्ति सूचित किया जाता है कि ग्राम बालीता में स्थित कृषि भूमि योजना मेपल पार्क भूखंड संख्या 11 खसरा नं. 233 आवेदक/आवेदिका श्री इन्द्र राज एवं श्री जितेन्द्र पिसरान श्री किशनलाल निवासी हनुमान मंदिर के पास खण्ड गांवड़ी सिविल लाईन कोटा राज. द्वारा ऑनलाईन नाम हस्तान्तरण हेतु प्राधिकरण कार्यालय में आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखंड का पट्टा क्रमांक 1929 दिनांक 22.12.2022 को श्री बृजेश योगी पुत्र श्री लाल योगी के पक्ष में जारी किया गया था। पट्टाधारी द्वारा उक्त भूखंड का बैचान जर्ये रजि. विक्रय पत्र दिनांक 03.05.2024 को जर्ये मुख्तारआम श्री विपुल महाजन पुत्र श्री श्याम सुन्दर गुप्ता द्वारा आवेदकों के पक्ष में किया गया है।

अतः श्री इन्द्र राज एवं श्री जितेन्द्र पिसरान श्री किशनलाल के पक्ष में नाम हस्तान्तरण जारी किये जाने में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर 7 योम कार्यालय में उपस्थित होकर अथवा लिखित में अद्योहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करें। मियाद गुजर जाने के बाद आपत्ति मान्य नही होगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक 4891 **जाहिर आम सूचना** दिनांक - 6.2.25

आवास संख्या 3-बी-4 महावीर नगर तृतीय कोटा का आवंटन मंडल द्वारा श्री मोहन लाल पुत्र श्री नाथूलाल को किया गया था। इस आवास का नियमितिकरण श्री उमाशंकर साह पुत्र श्री सुख देव शाह के नाम दिनांक 31.12.1994 को किया गया। इस आवास का पंजीयन श्री उमाशंकर साह पुत्र श्री सुख देव शाह के नाम दिनांक 31.12.1994 को किया गया। मृत्यु प्रमाण पत्र श्री उमाशंकर साह पुत्र श्री सुख देव शाह की मृत्यु दिनांक 17.11.2020 को हो चुकी है। इनकी मृत्यु उपरांत इनके वारिसानों में श्रीमती भगवती देवी पत्नी स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह, श्रीमती मधु गुप्ता पत्नी श्री सतीश गुप्ता पुत्री स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह, श्रीमती पूनम गुप्ता पत्नी श्री आशीष गुप्ता पुत्री स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह द्वारा उक्त आवास में निहित अपने अविभाजित हिस्से का त्याग जरिये रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) आलेखित कर दिनांक 26.02.2024 को श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह के पक्ष में किया गया। श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 3-बी-4 महावीर नगर तृतीय कोटा को उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन आवेदन पत्र, क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, घोषणा पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) के आधार पर करने हेतु आवेदन किया गया।

अतः उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन आवेदन पत्र, क्षतिपूर्ति बन्धक पत्र, शपथ पत्र, घोषणा पत्र, मृत्यु प्रमाण पत्र एवं रिलीज डीड (हक त्याग पत्र) के आधार पर श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह के नाम करने में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुये कि उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह के नाम किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त आवास का हस्तांतरण/प्रतिस्थापन श्री नरेन्द्र कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री उमाशंकर उर्फ उमाशंकर साह के नाम कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांक-एफ11/विक्रय/2025/760 दिनांक 31.1.2025

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

नगर विकास न्यास कोटा द्वारा योजना केशवपुरा-7 बसंत विहार आवास संख्या 695 का आवंटन क्रमांक 380 दिनांक 19.06.1885 को श्रीमती शशिकला शर्मा पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद शर्मा के नाम आवंटन किया गया था। जिसके उपरान्त क्रेता श्रीमती शशिकला शर्मा की मृत्यु दिनांक 03.04.2011 हो गयी है। मृत्यु उपरान्त श्रीमती शशिकला शर्मा पुत्री श्री दुर्गा प्रसाद शर्मा के विधिक वारिसान द्वारा प्रस्तुत रिलीज डीड (हक त्याग पत्र), मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, आईडी इत्यादि के आधार पर श्री मयंक शर्मा पुत्र श्री गिरीश कुमार शर्मा द्वारा उक्त आवास संख्या 695 केशवपुरा-7 बसंत विहार अपने नाम हस्तान्तरण करने की स्वीकृति नगर विकास न्यास कोटा से चाही जा रही है।

अतः जरिये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त आवास संख्या 695 केशवपुरा-7 बसंत विहार का नाम हस्तान्तरण श्री मयंक शर्मा पुत्र श्री गिरीश कुमार शर्मा के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उप सचिव, कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक-4771 **जाहिर आम सूचना** दिनांक 29.1.25

आवास संख्या 9/83 स्वामी विवेकानन्द नगर, कोटा का आवंटन मण्डल द्वारा श्री परमानंद वर्मा पुत्र श्री भवरलाल को किया गया था। इस आवास का नियमितिकरण श्री मंयक जैन पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन के नाम दिनांक 14.05.2013 को किया गया। इस आवास का पंजीयन श्री मंयक जैन पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन द्वारा दिनांक 12.06.2013 को अपने पक्ष में करवाया जा चुका है। पंजीयन उपरान्त श्री मंयक जैन पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन द्वारा उक्त आवास का बैचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 06.08.2013 को श्री दुर्गालाल मीणा पुत्र श्री हजारीलाल मीणा को किया गया। श्री दुर्गालाल मीणा पुत्र श्री हजारीलाल मीणा का नाम दिनांक 06.11.2015 को विक्रय पत्र के आधार पर उक्त आवास के मण्डल अभिलेख में दर्ज किया गया है। तत्पश्चात श्री दुर्गालाल मीणा पुत्र श्री हजारीलाल मीणा द्वारा उक्त आवास का बैचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 15.11.2022 को श्री प्रेमचन्द मीणा पुत्र श्री रामकिशोर मीणा को किया गया। श्री प्रेमचन्द मीणा पुत्र श्री रामकिशोर मीणा द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 9/83 स्वामी विवेकानन्द नगर कोटा को विक्रय पत्र के आधार पर अपना नाम आवास के मण्डल अभिलेख में दर्ज करने हेतु आवेदन किया गया है।

अतः उक्त आवास के मण्डल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री प्रेमचन्द मीणा पुत्र श्री रामकिशोर मीणा का नाम दर्ज करनें में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुए कि इस आवास के मण्डल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री प्रेमचन्द मीणा पुत्र श्री रामकिशोर मीणा का नाम दर्ज किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त आवास के मण्डल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री प्रेमचन्द मीणा पुत्र श्री रामकिशोर मीणा का नाम दर्ज कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक-4877 **जाहिर आम सूचना** दिनांक 6.2.25

आवास संख्या 4-सी-5 दादाबाडी, कोटा का आवंटन मण्डल द्वारा श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी पुत्र स्व.श्री श्रीनारायण सिंह को किया गया था। श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी पुत्र स्व.श्री श्रीनारायण सिंह की मृत्यु हो जाने के उपरान्त उक्त आवास का हस्तांतरण दिनांक 17.05.1991 को इनकी पत्नी श्रीमती सीता सोलंकी के नाम किया गया। इस आवास का पंजीयन श्रीमती सीता सोलंकी पत्नी स्व. श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी के नाम दिनांक 30.09.1991 को अपने पक्ष में करवाया गया। श्रीमती सीता सोलंकी पत्नी स्व.श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी की मृत्यु दिनांक 07.04.2015 को हो जाने के उपरांत उक्त आवास का हस्तांतरण हकत्याग पत्र (रिलीज डीड) के आधार पर दिनांक 15.05.2023 को श्री राजवीर सिंह सोलंकी पुत्र श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी के पक्ष में किया गया। तत्पश्चात श्री राजवीर सिंह सोलंकी पुत्र श्री देवेन्द्र कुमार सोलंकी द्वारा उक्त आवास का बैचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 30.08.2024 को श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा पिसरान स्व.श्री जमना प्रसाद शर्मा को संयुक्त रूप से किया गया। श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा पिसरान स्व.श्री जमना प्रसाद शर्मा द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 4-सी-5 दादाबाडी कोटा को विक्रय पत्र के आधार पर अपना नाम आवास के मण्डल अभिलेख में संयुक्त रूप से दर्ज करने हेतु आवेदन किया गया है।

अतः इस आवास के मण्डल अभिलेख में श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा पिसरान स्व.श्री जमना प्रसाद शर्मा का नाम विक्रय पत्र के आधार पर संयुक्त रूप से दर्ज करनें में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुए कि इस आवास के मण्डल अभिलेख में श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा पिसरान स्व.श्री जमना प्रसाद शर्मा का नाम विक्रय पत्र के आधार पर संयुक्त रूप से दर्ज किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त आवास के मण्डल अभिलेख में श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री नरेन्द्र प्रसाद शर्मा एवं श्री सुरेन्द्र प्रसाद शर्मा पिसरान स्व.श्री जमना प्रसाद शर्मा का नाम विक्रय पत्र के आधार पर संयुक्त रूप से दर्ज कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

कार्यालय नगर पालिका अन्ता जिला बारां (राज0)

कोटा बारां रोड़, अन्ता 325202 दूरभाष-07457-244404 फैक्स-244404 Email : antanagarpalika@gmail.com, nagarpalikaanta1@gmail.com

क्रमांक : न.पा.अ./निर्माण/2024-25/4615 दिनांकः- 05/02/2025

निविदा सूचना- 18/2024-25

नगर पालिका अन्ता द्वारा निर्माण संबधित कार्य हेतु विभिन्न विभागों में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से ई-निविदा पद्धति से निम्नानुसार ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। संवेदक निविदा प्रपत्र लोक उपापन की वेबसाईट http://Sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in से प्राप्त कर सकेगें।

NIB No - DLB2425A5524

UBN No - DLB2425WSOB16737

अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका अन्ता

राज.संवाद/सी/24/11544

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति "विशिष्ट श्रेणी" बून्दी (राज0)

क्रमांक :- राजकाज 13316990 दिनांक :- 30/01/2025

सूचना

मण्डी समिति की आवंटन सूचना क्रमांक 1059-69 दिनांक 30.06.2017 एवं संशोधित सूचना क्रमांक 1086-96 दिनांक 07.07.2017 एवं 800-822 दिनांक 29.07.2021 एवं 259-274 दिनांक 10.06.2022 एवं 655-679 दिनांक 14.10.2024 एवं संशोधित आवंटन सूचना 685-705 दिनांक 17.10.2024 से नवीन कृषि उपज मण्डी प्रांगण (कुंवारती) बून्दी में द्वितीय एवं पश्चातवर्ती चरणों के आवंटन के क्रम में निर्धारित दिनांक 15.11.2024 तक प्राप्त आवेदन पत्रों की अस्थाई सूची आज दिनांक 30.01.2025 को जारी कर दी गई है, जिसका नोटिस बोर्ड कार्यालय नवीन कृषि उपज मण्डी प्रांगण कुवांरती बून्दी में अवलोकन किया जा सकता है।

अस्थाई सूची के सम्बन्ध में दिनांक 17.02.2025 तक आपत्तियां मण्डी समिति कार्यालय में प्रस्तुत की जा सकेगी। प्राप्त आपत्तियों पर आवंटन समिति द्वारा लिया गया निर्णय अन्तिम होगा।

राज.संवाद/सी/24/11576 सचिव

कोटा विकास प्राधिकरण, कोटा

क्रमांकः-एफ11/विक्रय/2025/833 दिनांकः-05.02.2025

नाम हस्तान्तरण चाहने बाबत आम सूचना

कोटा विकास प्राधिकरण कोटा द्वारा योजना श्रीरामकृष्णपुरम-ए आवास संख्या 466 का आवंटन क्रमांक 672 दिनांक 05.05.1997 को श्री खुमान सिंह पुत्र श्री लखपत सिंह के नाम आवंटन किया गया था। जिसके उपरांत क्रेता श्री खुमान सिंह पुत्र श्री लखपत सिंह की मृत्यु दिनांक 15.09.2020 को हो गयी है। मृत्यु उपरांत श्री खुमान सिंह पुत्र श्री लखपत सिंह के विधिक वारिसान द्वारा प्रस्तुत रिलीज डीड (हक त्याग पत्र), मृत्यु प्रमाण पत्र, शपथ पत्र, आईडी इत्यादि के आधार पर श्रीमती सावित्री देवी पत्नी स्व. श्री खुमान सिंह द्वारा उक्त आवास संख्या 466 श्रीरामकृष्णपुरम-ए अपने नाम से नामहस्तान्तरण करने की स्वीकृति नगर विकास न्यास कोटा से चाही जा रही है।

अतः जरीये आम सूचित किया जाता है कि यदि इस नाम हस्तान्तरण की स्वीकृति देने में किसी को भी कोई ऐतराज हो तो विज्ञप्ति जारी होने के 7 दिवस के अन्दर अन्दर अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा मियाद गुजरने के पश्चात उक्त आवास संख्या 466 श्रीरामकृष्णपुरम-ए का नाम हस्तांतरण श्रीमती सावित्री देवी पत्नी स्व. श्री खुमान सिंह के नाम स्वीकृति जारी कर दी जावेगी।

उपसचिव कोटा विकास प्राधिकरण कोटा

राजस्थान आवासन मण्डल कोटा वृत्त कोटा

क्रमांक 4707 **जाहिर आम सूचना** दिनांक - 23.1.25

आवास संख्या 4-एल-24 महावीर नगर विस्तार योजना कोटा का आवंटन मंडल द्वारा श्रीमती रुकमणी शर्मा पत्नी श्री विष्णु दत्त शर्मा को किया गया था। इस आवास का नियमितिकरण श्रीमती चन्द्रकला दाधीच पत्नी स्व. श्री नरेन्द्र कुमार दाधीच के नाम दिनांक 31.03.2003 को किया गया। इस आवास का पंजीयन श्रीमती चन्द्रकला दाधीच पत्नी स्व. श्री नरेन्द्र कुमार दाधीच द्वारा दिनांक 25.07.2003 को अपने पक्ष में करवाया जा चुका है। पंजीयन उपरांत श्रीमती चन्द्रकला दाधीच पत्नी स्व. श्री नरेन्द्र कुमार दाधीच द्वारा उक्त आवास का बैचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 28.12.2004 को श्री वशिष्ठ कुमार दाधीच पुत्र श्री हरि बल्लभ शर्मा को किया गया। श्री वशिष्ठ कुमार दाधीच पुत्र श्री हरि बल्लभ शर्मा का नाम दिनांक 08.07.2024 को विक्रय पत्र के आधार पर उक्त आवास के मंडल अभिलेख में दर्ज किया गया। तत्पश्चात श्री वशिष्ठ कुमार दाधीच पुत्र श्री हरि बल्लभ शर्मा द्वारा उक्त दुकान का बैचान जरिये विक्रय पत्र आलेखित कर दिनांक 08.08.2024 को श्री कैलाश सैनी पुत्र श्री छोटूलाल सैनी एवं श्री मनीष सैनी पुत्र श्री विष्णु सैनी को संयुक्त रुप से किया गया। श्री कैलाश सैनी पुत्र श्री छोटूलाल सैनी एवं श्री मनीष सैनी पुत्र श्री विष्णु सैनी द्वारा इस कार्यालय में प्रतिवेदन प्रस्तुत कर आवास संख्या 4-एल-24 महावीर नगर विस्तार योजना कोटा को विक्रय पत्र के आधार पर अपना नाम आवास के मंडल अभिलेख में दर्ज करने हेतु आवेदन किया गया है।

अतः उक्त आवास के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री कैलाश सैनी पुत्र श्री छोटूलाल सैनी एवं श्री मनीष सैनी पुत्र श्री विष्णु सैनी का नाम संयुक्त रुप से दर्ज करने में किसी भी पक्षकार/व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो 15 दिवस के अन्दर इस कार्यालय को सूचित करें। अन्यथा यह मानते हुये कि उक्त आवास के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री कैलाश सैनी पुत्र श्री छोटूलाल सैनी एवं श्री मनीष सैनी पुत्र श्री विष्णु सैनी का नाम संयुक्त रुप से दर्ज किये जाने में किसी भी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति नहीं है। उक्त आवास के मंडल अभिलेख में विक्रय पत्र के आधार पर श्री कैलाश सैनी पुत्र श्री छोटूलाल सैनी एवं श्री मनीष सैनी पुत्र श्री विष्णु सैनी के नाम संयुक्त रुप से दर्ज कर दिया जावेगा।

उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल, कोटा वृत्त कोटा

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

क्रमांकः-LU2012/KOT/2024-25/100887 **लोक सूचना** दिनांकः-12.02.2025

श्री M.H. BOHRA ENTERPRISES PVT LTD. JARIYE DIRECTOR SHABBIR HUSSAIN पुत्र श्री TAJAMMUL HUSSAIN जाति MUSALMAN निवासी JAMALI MANZIL, JAIN MANDIR ROAD, KOTA JN. KOTA ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का औद्योगिक प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारी के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात:-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं.	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	क्षेत्रफल (हैक्टे.)
1.	किशनपुरा तकिया लाडपुरा कोटा	M.H. BOHRA ENTERPRISES PVT LTD. JARIYE DIRECTOR SHABBIR HUSSAIN S/O TAJAMMUL HUSSAIN NATRAJ CINEMA KE PASS STATION ROAD KOTA KHATEDAR	1020/1017	210	0.021
2.	किशनपुरा तकिया लाडपुरा कोटा	M.H. BOHRA ENTERPRISES PVT LTD. JARIYE DIRECTOR SHABBIR HUSSAIN S/O TAJAMMUL HUSSAIN JAMALI MANZIL JAIN MANDIR ROAD KOTA JN. KOTA	1018/769	4800	0.48
				कुल	0.501

इसलिये, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिये भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर अपनी एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के आभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नही है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जावेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज दिनांक 12.02.2025 को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी कोटा विकास प्राधिकरण (केडीए)

नाम परिवर्तन

मैंने अपना पुराना विष्णु कुमार सोनी (VISHNU KUMAR SONI) से बदलकर नया नाम विष्णु सोनी (VISHNU SONI) रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना पहचाना जावे।

पता-विष्णु सोनी पुत्र गोपाल लाल सोनी 6/101 तुलसी सदन नियर सुरपीन होटल स्टेशन रोड कोटा जंक्शन कोटा

आम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पक्षकार श्री गजेन्द्र सिंह चौहान पुत्र खुमान सिंह आयु 56 वर्ष जाति राजपूत नि. 140 विज्ञान नगर इन्द्रा कालोनी कोटा के दो पुत्र गगन सिंह व रघुवीर सिंह तथा एक पुत्री ज्योति कंवर है। मेरे पक्षकार के द्वारा पुत्र गगन सिंह व ज्योति कंवर का विवाह कर दिया गया है तथा छोटा पुत्र रघुवीर सिंह अविवाहित है और प्राईवेट जॉब करता है और मेरे पक्षकार व परिवार से अलग निवास करता है, जो कि मेरे पक्षकार व परिवार तथा रिश्तेदारों एवं सामाजिक रीति रिवाजों को नहीं मानता है और ना ही मेरे पक्षकार का कहा सुनता है, अपनी मनमानी करता है और अपने अनुसार ही जीवन जीता है। मेरे पक्षकार व परिवार के प्रति किसी भी दायित्व का निर्वहन नहीं करता है तथा आए दिन मेरे पक्षकार व परिवार से वाद विवाद करता है, कलह कर क्लेश का माहौल उत्पन्न करता है। मेरे पक्षकार व परिवार तथा रिश्तेदारों के द्वारा समझाने के बावजूद भी नहीं समझ रहा है इसलिए मेरे पक्षकार ने निर्णय लिया और घोषणा पत्र आलेखित कर चल अचल सम्पत्ति व परिवार के सभी सामाजिक दायित्वों व रीति रिवाज से बेदखल करते हुए निष्पादित किया है। इस कारण मैं मेरे पक्षकार की ओर से सूचित करता हूं कि कोई भी व्यक्ति मेरे पक्षकार के पुत्र रघुवीर सिंह से किसी भी प्रकार से संव्यवहार करेगा या कोई भी विवाह इत्यादि संबंध स्थापित करेगा तो उसकी जिम्मेदारी उसकी स्वयं की होगी, जिसके लिए मेरा पक्षकार किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होगा। सूचित हो।

भवदीय
अशोक कुमार एडवोकेट

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मोहनलाल सुनारिया पुत्र हीरालाल की खरीदशुदा सम्पत्ति भूखण्ड संख्या 41, जयहिन्द नगर, कोटडी कोटा पैमाईश 166.67 वर्गगज में स्थित है। मोहनलाल सुनारिया के द्वारा एचडीएफसी लि. से ऋण लिया हुआ था तथा उक्त सम्पत्ति के समस्त असल दस्तावेजात एचडीएफसी लि. में रहन कर रखे है। मोहनलाल सुनारिया का दिनांक 20.10.24 को देहान्त हो चुका है, मोहनलाल सुनारिया की पत्नी श्रीमती रेखा कुमारी ने जाहिर किया है कि उनके अतिरिक्त स्व.मोहनलाल सुनारिया के पुत्री सुनयना, शालिनी, हिमानी व सृष्टि तथा पुत्र पीयूष ही विधिक वारिसान है, इनके अतिरिक्त और अन्य कोई विधिक वारिसान नहीं है। उक्त सम्पत्ति के पेटे लिए हुए ऋण की पूर्ण अदायगी एचडीएफसी बैंक लि. को की जा चुकी है, स्व.मोहनलाल सुनारिया की पत्नी श्रीमती रेखा कुमारी उक्त सम्पत्ति के समस्त असल दस्तावेजों को प्राप्त करना चाहती है। यदि इस सम्बन्ध में किसी भी दीगर व्यक्ति/संस्था/कम्पनी को किसी प्रकार की आपत्ति हो तो मय दस्तावेज सूचना प्रकाशन की तिथि से 7 दिवस की अवधि में अद्योहस्ताक्षरकर्ता या एचडीएफसी बैंक लि. शाखा विज्ञान नगर कोटा के समक्ष लिखित आपत्ति मय दस्तावेज प्रस्तुत करें। बाद गुजरने मियाद सूचना कोई भी आपत्ति मान्य एवं प्रभावी नही होगी।

संदीप जैन, एडवोकेट
583-ए तलवण्डी, कोटा
मो.नं. 9829180432

चंबल ब्रेवरीज और डिस्टलरीज लिमिटेड

पंजीकृत कार्यालय: हाउस नंबर 30, दूसरी मंजिल, डी.ए.वी स्कूल केई पास, तलवंडी, कोटा, 324 005 (राजस्थान)
वेबसाइट: www.chambalkota.in दूरभाष न.: 0744-3500607
ईमेल आईडी: chambalbreweries@gmail.com CIN: L99999RJ1985PLC046460

समाप्त तिमाही 31.12.2024 के गैरलेखा परीक्षित वित्तीय परिणाम

(रु. लाख में)

क. नं.	विवरण	समाप्त तिमाही 31.12.2024 गैरलेखा परीक्षित	चालू अवधि के लिए समाप्त तारीख तक आंकड़े 31.12.2024 गैरलेखा परीक्षित	गत साल की समाप्त तिमाही के आंकड़े 31.12.2023 गैरलेखा परीक्षित
1	प्रचालन से कुल आय	2.00	6.82	2.11
2	अवधि के लिए शुद्ध लाभ/(हानि) (असाधारण कर ओर/ या असाधारण मद्दो से पहले)	-0.53	-4.74	-12.40
3	अवधि के लिए कर से पहले शुद्ध लाभ / (हानि) (असाधारण ओर / या असाधारण मद्दो के बाद)	-0.53	-4.74	-42.24
4	अवधि के लिए कर से बाद शुद्ध लाभ/(हानि) (असाधारण ओर/ या असाधारण मद्दो के बाद)	-0.53	-4.74	-42.24
5	अवधि के लिए कुल व्यापक आय	-0.53	-4.74	-42.24
6	इक्विटी शेयर पूंजी	748.88	748.88	748.88
7	पिछली वर्ष की ऑडिट बेलेंस शीट में दिखाए अनुसार रिजर्व (रिवेल्यूएशन रिजर्व को छोड़कर)	-	-	-
8	आय प्रति शेयर (रु.10 / - प्रत्येक) (बेसिक और डायलूटेड)	-0.01	-0.06	-0.56

उपरोक्त समाप्त हुई तिमाही 31.12.2024 गैरलेखा परीक्षित वित्तीय परिणामों के विस्तृत स्वरूप का एक संक्षिप्त स्वरूप है जो सेबी (लिस्टिंग और अन्य प्रकटीकरण की आवश्यकता) नियमन 2015 के नियमन 33 के तहत स्टॉक एक्सचेंज में दायर की गई है गैरलेखा परीक्षित वित्तीय परिणामों का पूरा प्रारूप समाप्त तिमाही 31.12.2024 के लिए स्टॉक एक्सचेंज वेबसाइट (www.bseindia.com) और कंपनी की वेबसाइट (www.chambalkota.in) पर उपलब्ध हैं।

दिनांक: 12.02.2025
स्थान : कोटा

चंबल ब्रेवरीज और डिस्टिलरीज लिमिटेड के लिए
एसडी/-
प्रबंध निदेशक

न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
न्यूक्लियर पावर कारपोरशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम) (ए गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया एंटरप्राइज)
रावतभाटा राजस्थान साइट रावतभाटा राजस्थान साइट

चेतावनी सूचना

राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर में/जयपुर बैंच
डीबी/एसबी सिविल रिट याचिका संख्या/ 2025

गिरफ्तार याचिकाकर्ता — एनपीसीआईएल का कोई भी व्यक्ति/कर्मचारी/पूर्व कर्मचारी

बनाम

केवेटर/प्रस्तावित प्रतिवादी — न्यूक्लियर पावर कॉपारेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड और अन्य

राजस्थान उच्च न्यायालय के नियम 159 के तहत कैविएट में प्रवेश के लिए आवेदन

माननीय सदस्यों, कृपया वह स्वीकार करें-

विनम्र आवेदक राजस्थान उच्च न्यायालय नियम के नियम 159 के तहत कैविएट दर्ज करना चाहता है और जब तक मामले में आवेदकों की सुनवाई नहीं हो जाती, तब तक कुछ भी नहीं होने देना चाहता है। रिट याचिका का विवरण, जो दायर होने की संभावना है, नीचे दिया गया है-

रिट याचिका निम्नलिखित में से किसी भी व्यक्ति द्वारा दायर की जा सकती है एनपीसीआईएल का कोई भी व्यक्ति/कर्मचारी/पूर्व कर्मचारी रिट याचिका संभवत निम्नलिखित के विरूद्ध दायर की गई है

1. न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटड, मुंबई।, 2. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी), न्यूक्लियर, पावर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल), मुबई।, 3. निदेशक (मानव संसाधन), एमपीसीआईएल,मुम्बई।, 4. साइट निदेशक, एनपीसीआइएल, रावतभाटा साइट, 5. एनपीसीआईएल के निदेशक मंडल

रिट याचिका एनपीसीआईएल के किसी भी व्यक्ति/कर्मचारी/पूर्व कर्मचारी द्वारा एनपीसीआईएल परिभाषित अंशदान पेंशन योजना 2025 (स. एनपीसीआईएल/एचआरपी/45/1/18/2025/25, महाप्रबंधक (एचआरपी), एनपीसीआईएल, मुंबई द्वारा जारी) के अनुसरण में दायर किए जाने की संभावना है। एनपीसीआईएल परिभाषित अंशदान पेंशन योजना 2025 से संबंधित दायर की गई ऐसी किसी भी डीबी/एसबी सिविल रिट याचिका का हमारे द्वारा विरोध किया जाएगा।

जो याचिका दायर की जाएगी वह रिट याचिका होगी।

एनपीसीआईएल की ओर से वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), एनपीसीआईएल, रावतभाटा द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित बकालतनामा यहां प्रस्तुत किया गया है।

अतः विनम्र निवेदन है कि आवेदन की सुनवाई होने तक मामले में कुछ भी न किया जाए।

दिनांक-12.02.2025
जोधपुर/जयपुर

विनम्र आवेदक के माध्यम से
ललित परिहार (एडवोकेट)
मोबाइल नं. 9571176368

CBC 48157/12/0001/2425

फाइनेंस कर्मी से 36 लाख लूट मामले में तिहाड़ जेल से दो आरोपी गिरफ्तार

पुलिस इस मामले में अब तक चार आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी है

कोटा, (निसं)। गुमानपुरा इलाके में फाइनेंस कर्मचारी से 36 लाख रुपये लूट के मामले में पुलिस टीम ने तिहाड़ जेल रोहिणी दिल्ली से प्रोडेक्शन वारंट पर दो आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया। पुलिस इस मामले में अब तक चार आरोपियों को गिरफ्तार कर चुकी हैं, जिसमे से दो आरोपियों को पूर्व में न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया है।

शहर पुलिस अधीक्षक डॉ.अमृता दुहन ने बताया कि गुमानपुरा ईलाके के टीचर्स कॉलोनी मे फाइनेंस कर्मचारी से 36 लाख लूट के मामले मे वांछित आरोपियों की गिरफ्तारी के लिये पुलिस उपअधीक्षक योगेश शर्मा के निर्देशन में गुमानपुरा थानाधिकारी अनिल कुमार टेलर के नेतृत्व में गठित टीम ने कार्रवाई करते हुए तिहाड़ जेल रोहिणी दिल्ली से प्रोडेक्शन वारंट पर रामा विहार नई दिल्ली निवासी राहुल गुप्ता उर्फ नकटा (34) एवं कमलजीत उर्फ तोती (33) को बापर्दा गिरफ्तार किया है। शहर एसपी ने बताया कि गिरफ्तार दोनों आरोपियों से मामले में अनुसंधान के बाद न्यायालय में पेश किया गया। जहां से दोनों को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया। शहर एसपी ने बताया कि इस मामले में पुलिस टीम ने पूर्व में दो आरोपी संजीव चौपड़ा उर्फ शेरा व अमित भाई को गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया गया।

शहर एसपी अमृता दुहन ने बताया कि 25 नवम्बर 2011 को टीचर्स कॉलोनी निवासी फरियादी ने गुमानपुरा थाने में रिपोर्ट दी थी।

36 लाख की नगदी लूट के मामले में दो आरोपियों को बापर्दा गिरफ्तार किया।

- आरोपियों में से कुछ ने पुलिस की वर्दी पहनकर वारदात को अंजाम दिया था

फरियादी ने शिकायत में कहा था कि वह कोटा में किराये से रहता है उसके पास तीन लोग आये जिसमें से दो जनों से पुलिस वर्दी पहन रखी थी और उससे कहा कि ड्रग्स बेचता है और उसके कमरे की तलाशी ली तो अलमारी में रखे काले रंग का बैग जिसमें 36 लाख रूपये थे। उस बैग और मुझे कार में ले गये और रावतभाटा रोड पर फोरलेन के पास उतार दिया और पैसों से भरा बैग लेकर फरार हो गये। शहर एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर मामले में कार्रवाई करते हुए पूर्व में पुलिस की वर्दी पहन कर वारदात को अंजाम देने वाले दो आरोपियों को गिरफ्तार किया था। वहीं मामले में वांछित चल रहे दो आरोपियों को प्रोडेक्शन वारंट पर तिहाड़ जेल से बापर्दा गिरफ्तार किया है।

12 हजार रुपए भरण-पोषण देने का आदेश

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर पारिवारिक न्यायालय संख्या-3 के पीठासीन अधिकारी दलपतसिंह राजपुरोहित ने एक बीएड डिग्रीधारी महिला को उसके 12वीं पास पति से गुजारा भत्ता देने का आदेश दिया है। कोर्ट ने इस संबंध में महिला और उसकी दोनों बच्चों को मासिक 12 हजार रुपए भरण- पोषण देने का आदेश दिया। जानकारी के अनुसार वेणु पंवार (42) ने न्यायमित्र हेमंत बावेजा के माध्यम से कोर्ट में मुकदमा दायर किया। इसमें बताया कि वर्ष 2013 में उसकी शादी बागर चौक निवासी महेन्द्र सिंह सांखला के साथ हिंदू रीति रिवाज से हुई थी। इससे उसके 2 बच्चों का जन्म हुआ। इसके बाद से ही उसे कम दहेज लाने के लिए शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित कर घर से निकाल दिया गया। वहीं, पति महेंद्र कुमार (52) ने सभी आरोपों को झूठा बताते हुए कहा कि वह 12वीं पास है। वह पूर्ण स्वस्थ व हष्ट-पुष्ट होने के बावजूद बेरोजगार है, जबकि, उसकी पत्नी व्यवसायिक डिग्री बीएड शिक्षित होकर महीने की आय प्राप्त कर रही है। इसके बाद कोर्ट ने पति की दलीलों को खारिज करते हुए आदेश दिया कि अप्रार्थी का पत्नी व नाबालिग बच्चों को अपने आर्थिक व सामाजिक स्तर के अनुरूप भरण पोषण करे। इसके साथ ही कोर्ट ने वर्तमान समय में महंगाई सूचकांक, जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान कराने का पत्नी के पक्ष में निर्णय दिया।

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

विज्ञप्ति दिनांक-10.02.2025

आयोग के वि.सं. 18/2024-25 दिनांक 22.10.2024 द्वारा चिकित्सा शिक्षा विभाग के लिए सहायक आचार्य की Nuchlear Medicine एवं Endocrinology विशिष्टताओं के क्रमशः 01 एवं 03 पदों पर भर्ती हेतु ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये थे। विभाग द्वारा पदों की संख्या में 50 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि किये जाने के फलस्वरूप उक्त पदों हेतु दिनांक 12.02.2025 से दिनांक 21.02.2025 को रात्रि 12.00 बजे तक ऑनलाईन आवेदन पत्र पुन आमंत्रित किये जात है। इसके पश्चात लिंक निष्क्रिय हो जाएगा। ऑनलाईन आवेदन प्रक्रिया, विभाग सेप्राप्त संशोधित वर्गवार वर्गीकरण एवं अन्य सूचना के संबंध में अभ्यर्थी आयोग की वेब-साईट पर जारी शुद्धि पत्र संख्या 20/2024-25 का अवलोकन कर सकते हैं।

DIPR/C/1914/2025 (रामनिवास मेहता) सचिव

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड नाथद्वारा जिला राजसमन्द राजस्थान

क्रमांक : 14 **निविदा सूचना संख्या 12/2024-25** दिनांक : 05.02.2025

NIB : PWD2425A4051

नवीन सड़को एवं भवनों के निर्माण कार्य हेतु ईच्छुक संवेदको से निविदा दिनांक 20.02.2025 सायं 06:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। निविदा के सम्बन्ध में अन्य विवरण उपापन वेबसाईट (http://www.eproc.rajasthan.gov.in और http://www.sppp.rajasthan.gov.in) पर देखा जा सकता है। उपापन की कुल अनुमानित राशि 137.00 लाख रुपया है।

S.No.of Work	UBN No.
1	PWD2425WSOB14535
2	PWD2425WSOB14536

(भानु प्रकाश माथुर)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड नाथद्वारा

DIPR/C/1670/2025

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- अ.अ./विद्युत-II/राजकाज 13523021 दिनांक :- 11/02/2025

ई-बिड सूचना संख्या :- जोन विद्युत-II/09/2024-25

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग में नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत निविदादाताओं से मुहरबंद निविदाएं आंमत्रित की जाती है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **www.sppp.raj.nic.in** पर देखी जा सकती है।

NIB CODE :- JOD2425A0167
UBN/TENDER ID :- JOD2425WSOB00370, JOD2425WSOB00371
कार्य की अधिकतम अनुमानित लागत – रूपये 47,79,326/–

राज.संवाद/सी/24/11547 अधिशाषी अभियंता (विद्युत-II)

कार्यालय नगरपालिका, आहोर (जिला–जालोर)
(हॉस्पीटल चौराहा, रेल्वे स्टेशन रोड़, जालोर–343001)

क्रमांकः/नपाआहोर/विकास/2024–25/3125 दिनांकः 11.02.2025

:: निविदा सूचना संख्या 13/2024–25 ::

नगरपालिका, आहोर में विधायक स्थानीय विकास योजनान्तर्गत स्वीकृत निर्माण कार्य हेतु राजस्थान के विभिन्न विभागों/निगमो/स्वायत्तशासी संस्था/बोर्डो/राजकीय उपकमों में AA एवं A श्रेणी में पंजीकृत तथा स्वायत्त शासन राजस्थान के अधीन विभागों/संस्थानों नगर पालिका/परिषद/निगम व बोर्डो में निर्धारित श्रेणी में निविदा जारी होने की दिनांक को पंजीकृत एवं मान्यता प्राप्त संवेदकों से निर्धारित शर्तो के अनुसार ऑनलाईन ई–निविदा आमंत्रित की जाती है। उक्त ई–निविदा https://sppp.rajasthan.gov.in एवं https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी तथा डाउनलोड की जा सकती है।

NIB CODE – DLB2425A5523
UBN CODE – DLB2425WSOB16736

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका, आहोर

राज.संवाद/सी/24/11542

लापता छात्रा का कुण्ड में तैरता मिला शव

परिजनों ने हत्या करने अथवा आत्महत्या के लिये उकसाने का अंदेशा जताया

मालपुरा, (निसं)। मालपुरा उपखण्ड क्षेत्र के लाम्बाहरिसिंह कस्बे के हरि सागर कुण्ड में बुधवार को एक किशोरी का लावारिस शव संदिग्ध परिस्थितियों में तैरता मिला। ग्रामीणों के सहयोग से शव को पुलिस ने बाहर निकाल पुलिस सुरक्षा में लिया। शव की पहचान लाम्बाहरिसिंह कस्बा निवासी प्रिया पुत्री सुरेश जांगिड़ के रूप मे की गई, जो कि रविवार की शाम से ही घर से निकली थी। परिजनों ने प्रिया की हत्या या फिर आत्महत्या करने के लिये उकसाने का अंदेशा जता नामजद रिपोर्ट देकर आरोपी की गिरफ्तारी की मांग कर शव लेने से इंकार कर दिया।

मृतक प्रिया के पिता सुरेश कुमार जांगिड की और से थाना पुलिस को दी जानकारी मे बताया कि उसकी बेटी प्रिया जो कि राजकीय बालिका विद्यालय में कक्षा 10 में पढ़ती थी। डेठाणी गांव निवासी एक युवक उसकी पत्नी के मोबाइल पर बने प्रिया के इंस्टाग्राम पर चैटिंग कर आये दिन परेशान करता था। स्कूल जाने व आने के दौरान भी उसे परेशान करता था, जिससे वो तनाव में थी। रविवार को वो अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक काम से बाहर गया हुआ था। शाम को लोटा तो उसके परिवारजनों ने बताया कि प्रिया शाम से ही घर पर नहीं है। जगह–जगह तलाश की गई, लेकिन प्रिया का कोई सुराग नहीं मिला। प्रिया के पास मोबाइल भी नहीं था। बुधवार की दोपहर बाद जरिये दूरभाष के ग्रामीणों द्वारा सूचना मिली कि हरिसागर कुण्ड में एक किशोरी का शव मिला है। सूचना पर वो मौके पर पहुंच शव को देखा तो वो शव उसकी बेटी प्रिया का ही था। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुये शव को पुलिस सुरक्षा मे ले मालपुरा जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। जहां परिजनों की मांग पर पुलिस वृत्ताधिकारी आशीष प्रजापत व थानाधिकारी राजकुमार की मौजूदगी मे मेडिकल बोर्ड से शव का पोस्टमार्टम करवाया गया। बुधवार की शाम साढे सात बजे तक शव अस्पताल के मुर्दाघर में पुलिस सुरक्षा में रखा हुआ था। छात्रा प्रिया के पिता ने डेठाणी निवासी युवक के विरूद्ध नामजद रिपोर्ट दे उसकी बेटी प्रिया की हत्या कर शव पानी मे फैंक देने अथवा प्रिया को आत्महत्या के लिये उकसाने का अंदेशा जताते हुये शव लेने से इंकार कर दिया। छात्रा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत की सूचना पर जांगिड़ समाज के प्रबुद्धजन सहित बडी संख्या में लोगों ने अस्पताल पहुंच पुलिस वृत्ताधिकारी से मिलकर मामले में निष्पक्ष व त्वरित कार्यवाही व जांच कर दोषी की गिरफ्तारी की मांग की।

डीएसपी ने रिपोर्ट के आधार पर मामला दर्ज कर पोस्टमार्टम के विसरा एफएसएल टीम को भेजने तथा मामले मे अनुसंधान अधिकारी से निष्पक्ष जांच करवाने का विश्वास दिलाते हुये शव उठाने की समझाइश की, लेकिन परिजन व समाज बंधुओं ने शव लेने से इंकार कर दिया।

नशे में उपयोग होने वाली टैबलेट्स बरामद

पाली, (नि.सं.)। जिला कलेक्टर एलएन मंत्री व पुलिस अधीक्षक पाली के नशे के विरूद्ध अभियान के अन्तर्गत एवं आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण राजस्थान के निर्देशन में बुधवार को नशे के उपयोग में ली जाने वाली टैबलेट्स बरामद की।कार्यालय जिला खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रण पाली के सहायक औषधि नियंत्रक भरत गोस्वामी ने बताया केवलचन्द्र पुत्र कुम्भाराम निवासी कुम्हारों का वास, ग्राम केलवाद सोजत जिला पाली के रहवासीय मकान से नशे मे उपयोग होने वाली गैर एनडीपीएस घटक की पांच हजार टैबलेट्स बरामद की गयी।

रिश्वत लेते पटवारी गिरफ्तार

झालावाड़, (निसं)। ए.सी.बी. मुख्यालय के निर्देश पर ए.सी.बी. की झालावाड़ चौकी द्वारा रामनिवास बैरवा पटवारी पटवार हल्का पिण्डोला तहसील मनोहरथाना जिला झालावाड़ को परिवादी से चार हजार रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि ए.सी.बी. की झालावाड़ चौकी को परिवादी द्वारा शिकायत दी गई कि, प्रार्थी पिछले 10 साल से चारागाह भूमि पर खेती करता आ रहा है, जो करीब 2.5 बीघा है, जिसका सरकार की तरफ से जुर्माना आता था, जिसको प्रार्थी समय पर जमा करवा देता था।

पिछले दो साल से जमीन का जुर्माना आना बन्द हो गया, तो परिवादी पिण्डोला हल्का के पटवारी रामनिवास से मिला तो उसने जुर्माना चालू करने की एवज में पांच हजार रूपये रिश्वत मांग कर एक हजार रूपये पूर्व में प्राप्त किये तथा चार हजार रूपये रिश्वत राशि की मांग की जा रही है।

इस पर 11 फरवरी को रिश्वत मांग का सत्यापन करवाये जाने पर परिवादी से आरोपी द्वारा रिश्वत की मांग करना प्रमाणित पाया गया। जिस पर 12 फरवरी को ट्रेप कार्यवाही का आयोजन कर ए.सी.बी. कोटा रेंज कोटा के उप महानिरीक्षक पुलिस शिवराज मीना के सुपरवीजन में ए.सी.बी. झालावाड़ चौकी के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जगराम मीना द्वारा मय टीम के कार्यवाही करते हुए आरोपी रामनिवास बैरवा पटवारी पटवार हल्का पिण्डोला तहसील मनोहरथाना जिला झालावाड़ को परिवादी से 4,000 रूपये रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया है। एसीबी की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव के निर्देशन में आरोपी से पूछताछ तथा कार्यवाही जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान किया जायेगा।

राजस्थान–सरकार

कार्यालय आबकारी आयुक्त, राजस्थान,

आबकारी भवन 2-गुमानियावाला, पंचवटी, उदयपुर-313001

कमांक F.32(B)(1)(After Policy-2025-26)EX/L/2025-04359-6914704-Part File(2)/1496 दिनांक 12.02.2025

कम्पोजिट रिटेल ऑफ मदिरा दुकानों के वर्ष 2024–25 के अनुज्ञाधारियों को वर्ष 2025–26 के लिये अनुज्ञापत्र नवीनीकरण के लिये आवेदन (विकल्प, प्रस्तुत करने की नियत तिथि को बढाई जाने की सूचना

इस कार्यालय की समसंख्यक विज्ञप्ति कमांक 1480 दिनांक 03.02.2025 के सन्दर्भ में राज्य के कम्पोजिट रिटेल ऑफ मदिरा दुकानों के वर्ष 2024–25 के समस्त अनुज्ञाधारियों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2025–26 के लिए अनुज्ञापत्रों के नवीनीकरण के लिए पात्र एवं इच्छुक अनुज्ञाधारी अपना नवीनीकरण आवेदन (विकल्प) पत्र मय निर्धारित आवेदन शुल्क के साथ **दिनांक 15.02.2025 तक संबंधित जिला आबकारी अधिकारी कार्यालय** में प्रस्तुत किये जा सकेगें। **दिनांक 15.02.2025 तक** नवीनीकरण आवेदन (विकल्प) प्राप्त नही होने पर अनुज्ञाधारी का नवीनीकरण करवाने का विकल्प समाप्त हो जायेगा तथा दुकान/समूह (Cluster) का आवंटन ई–नीलामी/ई–निविदा द्वारा किया जाएगा।

वर्ष 2025–26 हेतु अनुज्ञापत्र नवीनीकरण से संबंधित समस्त जानकारी के लिए विभागीय वेबसाइट https://excise.rajasthan.gov.in का अवलोकन करे।

अन्य सभी शर्ते पूर्वानुसार यथावत रहेगी।

आबकारी आयुक्त,राजस्थान

मदिरा दुकानों के बंदोबस्त में अभूतपूर्व सफलता

प्रदेश में वर्षों बाद फरवरी माह के द्वितीय सप्ताह में ही मदिरा दुकानों के नवीनीकरण का 85 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है

- प्रदेश में आबकारी नीति के तहत प्रदेश में पुरानी मदिरा दुकानों के नवीनीकरण के तहत क्रमशः जालौर, बांसवाड़ा, टोंक, राजसमन्द, बहरोड़, धौलपुर, पाली जिले अव्वल रहे

उदयपुर, (निसं)। राजस्थान आबकारी एवं मद्यसंयम नीति वर्ष 2025–29 के तहत आबकारी आयुक्त शिवप्रसाद नकाते के निर्देशन में अनुज्ञाधारियों के विश्वास व उत्साह को कायम रखते हुए मदिरा दुकानों का बंदोबस्त पारदर्शिता, सुगमता व सरलीकरण के साथ करते हुए अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की गई है। प्रदेश में वर्षों बाद फरवरी माह के द्वितीय सप्ताह में ही मदिरा दुकानों के नवीनीकरण का 85 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया है।

आबकारी आयुक्त के अनुसार राजस्थान आबकारी एवं मद्यसंयम नीति वर्ष 2025–29 के तहत पुरानी मदिरा की दुकानों के नवीनीकरण की प्रक्रिया के तहत प्रदेश में 7665 मदिरा दुकानों में से 6500 दुकानों के नवीनीकरण के साथ 85 प्रतिशत लक्ष्य बुधवार सांय सात बजे तक प्राप्त कर लिया गया है। यह आंकड़ा रात्रि 12 बजे तक 90 प्रतिशत तक रहने की संभावना है। इसी क्रम में फरवरी माह के दूसरे सप्ताह में ही दुकानों के बंदोबस्त में अभूतपूर्व सफलता मिली है जो कि बीते कई वर्षों से अधिक है। मदिरा दुकानों के सफलतापूर्वक हुए बंदोबस्त से राजस्व लक्ष्यों की वांछित पूर्ति हो सकेगी साथ ही अनुज्ञाधारियों, निर्माता व आपूर्तिकर्ताओं को भी लाभ होगा।

अतिरिक्त आबकारी आयुक्त प्रदीप सिंह सांगावत ने बताया कि आबकारी आयुक्त निर्देशानुसार राजस्थान आबकारी एवं मद्यसंयम नीति वर्ष 2025–29 के तहत नवीनीकरण से शेष रही मदिरा दुकानों का बंदोबस्त अथवा सेटलमेन्ट भी फरवरी माह में नियमानुसार कर लिया जाएगा। उन्होंने अनुज्ञाधारियों को नियत समय में मदिरा दुकानों के नवीनीकरण के लिए बधाई देते हुए आबकारी नीति के अनुरूप दुकानों के संचालन की बात कही। आबकारी आयुक्त ने प्रदेश के समस्त जोन के अतिरिक्त आबकारी आयुक्त, जिला आबकारी अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे आबकारी नीति की पालना के साथ समस्त अनुज्ञाधारियों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण के लिए प्रतिबद्धता से कार्य करें। प्रदेश में आबकारी नीति के तहत प्रदेश में पुरानी मदिरा दुकानों के नवीनीकरण के तहत क्रमशः जालौर, बांसवाड़ा, टोंक, राजसमन्द, बहरोड़, धौलपुर, पाली जिले अव्वल रहे।

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर

क्रमांक-निदे/अ.ख.अ.नीलामी/नीलामी (ML Bajri 04) /2025/ई-10076

ई-नीलामी विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली 2017 के अध्याय-III के तहत विभाग के अप्रधान खनिज बजरी के खननपट्टों के आवंटन के लिए निम्नांकित प्लॉट ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर खुली बोली आमंत्रित की जाती है। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

जिला	तहसील	राजस्व ग्राम	प्लॉट्स की संख्या
पाली	रोहट	कुलथाना व घींगाणा	1
		कलाली	1
		भूरियासनी	1
		राखाणा व घींगाणा	1
		चाटेलांव व जेतपुर	1
		चाटेलांव, जेतपुर गढवाडा	1
		जेतपुर व गढवाडा	2
		गढवाडा	1
		गढवाडा व घोलेरिया जागीर	1
अजमेर	भिनाय	खेडी व गुढा खुर्द	1
		देवलिया कला	4
		योग	15

विशेष नोट- 1. प्लॉटों का विस्तृत विवरण, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण ई-ऑक्शन की शर्तें विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthn.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC Ltd की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।

DIPR/C/1618/2025 (भगवती प्रसाद) IAS, निदेशक

भीलवाड़ा में "विधायक आपके वार्ड" अभियान की शुरुआत

विधायक द्वारा वार्ड नम्बर 59 में बैठक कर "विधायक आपके वार्ड" का शुभारंभ किया गया।

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर विधायक अशोक कोठारी निरंतर जनता से कार्यालय पर जनसुनवाई करते हुए नजर आ रहे हैं। तो कभी जनसंवाद तो कभी नए-नए नवाचार करके जनता की समस्या का समाधान कर रहे हैं। विधायक द्वारा एक नवाचार का शुभारंभ वार्ड नम्बर 59 में बैठक कर "विधायक आपके वार्ड" का किया गया।

मीडिया प्रभारी पंकज आडवाणी ने बताया कि, विधानसभा क्षेत्र की जन समस्या का समाधान करने के लिए एक नया नवाचार किया है। इस अभियान का नाम "विधायक आपके वार्ड" है। निरंतर हर वार्ड के लोगों के साथ बैठक कर समस्या सुनेंगे और अतिशीघ्र समस्या का समाधान करवाएंगे। विधायक आपके वार्ड अभियान के तहत प्रदेश व केंद्र सरकार की जनहित योजना की उपलब्धियां गिनाते हुए जनता की समस्याएं सुनी। कोठारी ने युवाओं से नवाचार को बढ़ावा देने तथा नए शोध करने का आग्रह किया। वार्ड संख्या 59 में बैठक कर आमजन की समस्या सुनी, विधायक कोठारी ने जनता के हर विषयों को पूरा सुना, समझा व विधायक स्तर के सभी कार्य यूआईटी व विधायक कोष के माध्यम से करवाने का भरोसा दिलाया। साथ ही नगर निगम कार्य हेतु, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि दौलत माली को जिम्मेदारी दी, निगम के कार्य निगम द्वारा करवाकर जनता को शीघ्र राहत प्रदान करें। इस दौरान विधायक के साथ आनंद चपलोत, शम्भू वैष्णव, बाबूलाल टाक, गजेंद्र सिंह राठौड़, कमल कोठारी के साथ ही वार्ड के कैलाश गग्गड, देवीलाल माली, कन्हैयालाल तेली, राकेश कसारा, सुरेश शर्मा, पार्षद प्रतिनिधि दौलत माली, बुद्धिप्रकाश आदि मौजूद थे।

जंगल में लगी भीषण आग, 500 हैक्टेयर एरिया में फैली

विराटनगर के छितोली, लुहाकना, बाणयावास तन जंगल में आग लगी

- कई जंगली जानवर भी आग की चपेट में आ गए, विभाग की टीम ने ग्रामीणों के सहयोग से आग पर काबू पाया
- पहाड़ी पर दलकम नहीं पहुंचने से पारम्परिक तरीके से आग बुझाने का प्रयास किया

पावटा, (निसं)। विराटनगर के छितोली, लुहाकना, बाणयावास, गोगेरा एवं भैरू जी का मंदिर के आस-पास जंगल और पहाड़ी पर आग लगने से हड़कंप मच गया। बुधवार सुबह अचानक आग लगने से आसमान में चारों तरफ धुंआ ही धुंआ हो गया। लोगों ने आग लगने की सूचना वन विभाग और दमकल को दी। सूचना मिलते ही शाहपुरा, विराटनगर, पावटा से दमकल की गाड़ियां और वन विभाग के कर्मचारी–अधिकारी मौके पर पहुंचे और दमकल कर्मियों व पानी के टैंकरों से आग बुझाने का प्रयास शुरू किया। वहीं, पहाड़ी पर दमकल नहीं पहुंचने की वजह से वन विभाग के कर्मचारियों ने पारंपरिक तरीके से आग बुझाने का प्रयास किया।

भारतीय किसान संघ जिला सहमंत्री भगवत, कांग्रेस नेता दौलत सिंह, प्रहलाद भगत, गोकुल मीना, नरपत सिंह ने बताया कि पावटा के फायर इंचार्ज प्रकाश सिंह शेखावत, विकास, सतवीर ने अपने टीम के साथ बहुत विकट रास्ते में गाड़ी ले जाकर आग बुझाने का सराहनीय प्रयास किया। इस दौरान हवा के साथ आग लगातार जंगल में आगे पहाड़ी की ओर बढ़ती गई।

आग से 500 हैक्टेयर तक पहाड़ी और जंगल में पेड़–पौधे और वनस्पति जलकर राख हो गए। वहीं, कई जंगली जानवर भी आग की चपेट में आ गए। विभाग की टीम के साथ ग्रामीणों के सहयोग से 3 से 4 घंटे में आग पर काबू पाया। वन इलाके क्षेत्र में आग से बड़ी संख्या में पेड़–पौधे जलकर राख हो गए। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। वन विभाग के अधिकारियों ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि जंगल और आसपास में जलती हुई बीड़ी–सिगरेट नहीं फेंके. इसके लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा।

कार्यालय नगरपरिषद् चूरू (राजस्थान)

क्रमांक : न.प./सफाई शाखा/2024–25/13444787 दिनांक :– 06.02.2025

ई–निविदा सूचना 109 वर्ष 2024–25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से नगरपरिषद, द्वारा कार्य की निविदा आईडी नम्बर **DLB2425A5482** आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in पर तथा कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगरपरिषद चूरू के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकता है।

UBN Code :- DLB2425SLOB16628, DLB2425SLOB16629

राज.संवाद/सी/24/11554 आयुक्त, नगरपरिषद, चूरू

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग खण्ड मालपुरा
पता-व्यास सर्किल के पास, सदरपुरा रोड जलदाय विभाग केम्पस, मालपुरा जिला टोंक
Mobile No. 8279108410 E-mail ID- eemal.ton.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक-अ.अ./जन स्वा./माल./2024-25/4285-98 दिनांक-05.02.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 109 से 119/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जन स्वा.अभि. विभाग खण्ड मालपुरा के अधीन विभिन्न क्षेत्रों में कार्यो हेतु उपयुक्त श्रेणी में जन स्वा.अभि.विभाग में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्यसरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग/डाक एवं दूर संचार विभाग/रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों जो कि राजस्थान सरकार के सक्षम श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो से निर्धारित पपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया के तहत ऑन लाइन निविदाऐ आमंत्रित की जाती है।

निविदा फार्म ऑन लाइन वेबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in से निम्न विवरण में अंकित अनुसार अवधि में निविदा प्रपत्र प्राप्त कर जा कराये जा सकते है। निर्धारित तिथि को यदि किसी कारणवश अवकाश रहता है। तो उसके अगले कार्यदिवस में उसी समय परतकनीकी बिड खोली जाएगी। निम्न हस्ताक्षरकर्ता को बिना कारण बताये किसी भी निविदा अथवा भाग को निरस्त करने का अधिकार होगा। निविदा की लागत कम व अधिक की जा सकती है।

विस्तृत विवरण ऑन लाइनवेबसाईट http://dipr.rajasthn.gov.in/tenders.asp.sppp.rajasthan.gov.in, http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है। इच्छुक संवदकों का अपने digital Signature certificate (DSC) के माध्यम से वबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाया आवश्यक है उक्त निविदाओं का वेबसाइट sppp.rajsthan.gov.in पर यूनिक बिड नं. निम्नानुसार है

निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि	05.02.2025 से 19.02.2025 सायं 06 बजे तक
निविदा अपलोड करने की अंतिम तिथि	05.02.2025 से 19.02.2025 सायं 06 बजे तक
निविदा तकनीकी बिड खोलने की तिथि व समय	20.02.2025 को प्रात 11.00 बजे

S.NO.	Nit No.	NIB CODE	UBN NO.
1	109/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09198
2	110/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09199
3	111/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09200
4	112/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09201
5	113/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09202
6	114/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09203
7	115/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09204
8	116/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09205
9	117/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09206
10	118/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09207
11	119/2024-25	PHE2425A4297	PHE2425WSOB09209

अधिशाषी अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग
खण्ड मालपुरा

DIPR/C/1627/2025

आर.पी.एस.सी. बताए भर्ती प्रक्रिया के दौरान पेपर लीक की कितनी शिकायतें मिली : हाईकोर्ट

- याचिकाकर्ताओं की ओर से कहा कि परीक्षा की तीनों पारियों के पेपर लीक हुए थे और उसी दिन पूरे प्रदेश में 11 एफ.आई.आर. दर्ज हो गई थी। इसके बावजूद आर.पी.एस.सी. की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई
- याचिकाकर्ता की ओर से यह भी कहा गया कि इस परीक्षा के दौरान कोई फोन के जैमर इस्तेमाल नहीं किये गये थे, जो ऐसी परीक्षाओं में किया जाना आम बात है। इसके अलावा परीक्षा में वीडियोग्राफी भी नहीं की गई थी

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट में पुलिस उपनिरीक्षक भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में बुधवार को याचिकाकर्ता पक्ष की बहस पूरी हो गई है। राज्य सरकार की ओर से गुरुवार को बहस जारी रखी जाएगी। वहीं अदालत ने आरपीएससी के अधिवक्ता एमएफ बेग को यह बताने को कहा है कि भर्ती प्रक्रिया के दौरान आयोग को पेपर लीक को लेकर कितनी शिकायतें मिली। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मेजर आरपी सिंह और अधिवक्ता हरेंद्र नील ने कहा कि परीक्षा की तीनों पारियों के पेपर लीक हुए थे और उसी दिन पूरे प्रदेश में 11 एफआईआर दर्ज हो गई थी। इसके बावजूद आरपीएससी की ओर से कोई कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने अदालत को बताया कि हाल ही में ईओ-आरओ भर्ती परीक्षा की जांच के दौरान केवल तीन एफआईआर दर्ज की थी जिसके बाद पूरी भर्ती परीक्षा को रद्द कर दिया गया था। इसके अलावा याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि एसआई भर्ती परीक्षा के दौरान कोई फोन के जैमर इस्तेमाल नहीं किये गये थे, जो ऐसी परीक्षाओं में किया जाना आम बात है। आर.पी.सिंह ने बताया कि परीक्षा में वीडियोग्राफी भी नहीं की गई थी।

याचिकाकर्ता का कहना है कि बड़ी विचित्र बात है कि आरपीएससी ने इस परीक्षा के लिये एक दिन में परीक्षा आयोजित करने के आदेश दिये परंतु नाटकीय रुप से इसे तीन दिन कर दिया गया और फिर संभागीय जिलों के बाहर जाकर नये परीक्षा केंद्र बनाये जो कि नियम विरुद्ध था, बल्कि ऐसे ही एक परीक्षा केंद्र जो पाली में स्थित है में पेपर लीक होने और चीटिंग के आरोप लगाते हुए एक एफआईआर भी दर्ज की गई। याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि इन सभी तथ्यों की वजह से आरपीएससी का पेपर लीक में भूमिका ओर भी संदिग्ध होती है।

याचिकाकर्ता का कहना है कि पेपर लीक के कारण कई ऐसे अभ्यर्थी का चयन किया गया है जिनका आपराधिक बैकग्रांउड है या उनके माता-पिता अपराधी रहे हुए हैं या अपराधी संगठन से तालमेल रखते हैं। याचिकाकर्ताओं का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका है कि जहां दागी अभ्यर्थियों को चिन्हित नहीं किया जा सकता, उस स्थिति में भर्ती को रद्द किया जा सकता है। ऐसे में भर्ती को रद्द किया जाए।

दूसरी ओर राज्य सरकार की ओर से अतिरिक्त महाधिवक्ता विज्ञान शाह ने बताया कि याचिका कई महीनों बाद दायर की गई है। याचिकाकर्ताओं में से कुछ लिखित परीक्षा में फेल हुए, कुछ फिजिकल के बाद बाहर किए गए और कई साक्षात्कार में अंक नहीं ला पाए। यदि याचिकाकर्ता पास हो जाते तो फिर याचिका पेश नहीं की जाती। इसके अलावा एक याचिकाकर्ता तो एसओजी में ही कांस्टेबल पद पर कार्यरत है, लेकिन इनकी जानकारी नहीं दी गई। सुनवाई के दौरान अदालती समय समाप्त होने के कारण अदालत ने प्रकरण की सुनवाई गुरुवार को तय की है।

आर.पी.सिंह ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि वो सरकार के जबाव देने के बाद पुन: जबाव पेश करेंगे।

जयपुर-आभानेरी-भानगढ़ यात्रा के पोस्टर का विमोचन

उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने होटल एवं रेस्टोरेंट एसोसिएशन राजस्थान के प्रतिनिधियों के साथ जयपुर-आभानेरी-भानगढ़-जयपुर यात्रा के पोस्टर का विमोचन किया।

जयपुर। होटल एवं रेस्टोरेंट एसोसिएशन राजस्थान के प्रतिनिधियो ने पर्यटन सचिव रवि जैन से मुलाकात कर जयपुर-आभानेरी-भानगढ़-जयपुर यात्रा के पोस्टर का विमोचन किया। साथ ही उप मुख्यमंत्री दीया कुमारी ने भी पोस्टर का विमोचन किया। जयपुर-आभानेरी-भानगढ़-जयपुर की यात्रा में पर्यटकों को 1 दिन के टूर में आभानेरी-चाँद बावड़ी, हर्षत माता मंदिर, आभानेरी विलेज के साथ लंच शाहपुरा आभानेरी रिसोर्ट में करवाया जायेगा। इसके साथ विश्व प्रसिद्द भानगढ़ किले का इतिहास भी बताया जायेगा। इस टूर में गाइड भी साथ रहेगा। इस टूर में प्रति व्यक्ति 2750 रुपए खर्च होगा।

पोस्टर विमोचन के दौरान होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन राजस्थान अध्यक्ष तरुण कुमार बंसल, अधिराज सिंह शाहपुरा, सचिव, कुलदीप सिंह चंदेला, अध्यक्ष, असीम पारख, कोषाध्यक्ष, हुसैन खान, अध्यक्ष रणविजय सिंह, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कौशल राठौड़, उपस्थित थे। अधिराज सिंह ने बताया कि इस यात्रा के दौरान जो पर्यटक खुद के व्हीकल से नहीं जा सकता या उसका बजट नहीं है कि वो पर्सनल कार वहन कर सके उनके लिए ये यात्रा है तथा उनके बजट में यह यात्रा सही है। जयपुर आने वाले पर्यटक एक दिन ज्यादा ठहराव करेंगे जिससे जयपुर में होटलों को इसका सीधा फयदा पहुंचेगा। इस यात्रा से घरेलु कलाकार, दुकानदार को भी फायदा होगा तथा ग्रामीण पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। ग्रामीण लोगो को रोजगार भी उपब्ध होगा। आने वाले दिनों में जयपुर-पुष्कर-जयपुर एवं जयपुर-सांभर-जयपुर के बीच में भी इस तरह कि यात्रा की शुरुआत करेगा। इस पोस्टर के विमोचन के दौरान पर्यटन सचिव ने धन्यवाद दिया। दिया कुमारी ने इसे सराहनीय कदम बताया जिससे राजस्थान के पर्यटन में इजाफा होगा तथा जयपुर के आसपास पर्यटकों की आवाजाही बढ़ेगी।

भाजपा सरकार में किसी भी विधायक-मंत्री का कोई फोन टैप नहीं हुआ : बेढ़म

- गृह राज्यमंत्री का कांग्रेसी नेता सचिन पायलट के बयान पर पलटवार
- 'राज्य सरकार के एक साल के सुशासन को देखकर कांग्रेस घबराई'

जयपुर। गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने कहा कि कांग्रेस के नेताओं ने ओछी राजनीति शुरू कर दी है। यह भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का आपसी मामला है और मामला भी एक झूठी खबर का है। उन्होंने कहा कि इसका जवाब किरोड़ी लाल मीणा ने दे दिया, उन्होंने बता दिया कि उनका कोई फोन टैप नहीं हुआ और मैं गृह राज्यमंत्री के तौर पर कहता हूं कि हमारी सरकार में किसी भी विधायक, किसी भी मंत्री के फोन टैप नहीं हुए।

बेढ़म ने कहा कि कांग्रेस के बयानवीर नेता सचिन पायलट को इस मुद्दे पर सिर्फ अपनी उपस्थिति दर्ज करानी है। वे शायद भूल चुके हैं कि कांग्रेस के राज में खुद होटल में बंद रहे थे और इनको अपमानित भी किया गया था। इनके गुट के एक विधायक ने तो स्पष्ट रूप से प्रेस के सामने आकर भी कहा था कि उनके फोन टैप हो रहे हैं। उस समय अपनी ही सरकार और मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के ऊपर कांग्रेस के नेता हमलावर थे लेकिन चुप रहे और बाद में गलबहियां भर रहे थे। गृह राज्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने अपनी कमियों से बचने के लिए सदन में मुख्यमंत्री का राज्यपाल के अभिभाषण पर जवाब बाधित करने का षडयंत्र किया। लेकिन फिर भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राज्य सरकार के 1 साल के सुशासन की बात जनता के सामने स्पष्ट रूप से रखी। बेढ़म ने कांग्रेस के नेताओं को इस ओछी राजनीति को बंद करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जनता सब देख रही है और इसी कारण उपचुनाव में आपका पत्ता भी साफ कर दिया। फिर भी कांग्रेस के लोग बयानबाजी करके जनता को गुमराह करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि अब जनता गुमराह नहीं होगी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के राजस्थान के विकास को देखकर जनता कांग्रेस को पूरी तरह नकार चुकी है।

बैंकिंग सेक्टर से जुड़ा आमजन : मदन राठौड़

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रत्येक बैंक रहित परिवार को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ने के लिए 2014 में राष्ट्रीय वित्तीय समावेशन मिशन की शुरूआत की और इसका परिणाम यह हुआ कि जनवरी 2025 तक देशभर में 54.58 करोड़ से अधिक जन धन खाते खोले गए। इनमें 55 प्रतिशत खाता धारक महिलाएं है। मोदी सरकार की ओर से विभिन्न वंचित वर्गों के लिए प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, मुद्रा योजना, स्टैंड अप इंडिया और प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना जैसी कई योजनाओं को शुरू किया।

डॉक्टर किरोडी लाल मीणा ने स्वीकारी अपनी गलती

- 'अनुशासन तोड़ा तो नोटिस मिला, मैंने नोटिस का जवाब दे दिया'

जयपुर। फोन टैपिंग मामले पर अपनी ही सरकार को कठघरे में खड़ा करने वाले कृषि मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने नोटिस मिलने के साथ अपनी गलती को स्वीकार कर लिया है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ की ओर से दिए नोटिस के जवाब में मीणा ने अपनी गलती स्वीकार कर ली है। बुधवार को एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे मंत्री किरोड़ी मीणा ने अपने नोटिस और कांग्रेस के हंगामे पर जवाब दिया। नोटिस में क्या जवाब दिया, ये किरोड़ी ने नहीं बताया लेकिन उन्होंने इस बात को स्वीकार कर लिया कि उनसे अनुशासनहीनता हुई है, जिसकी वजह से पार्टी अध्यक्ष ने उन्हें नोटिस दिया।

गौरतलब है कि किरोड़ी लाल मीणा को भाजपा ने अनुशासनहीनता का सोमवार को नोटिस जारी किया था। वहीं, बुधवार को मीणा ने नोटिस का जवाब संगठन को भेज दिया है। मीणा ने कहा कि मेरे से जो गलती हुई है, नोटिस में वह दर्शाई हुई है। गलती हुई थी, उसका जवाब दे दिया है। किरोड़ी कोई नाराजगी नहीं है। कोई नाराजगी होती तो मैं मुस्कुराता नहीं हूं। अनुशासन तोड़ा है तो यह प्रदेश अध्यक्ष का अधिकार है। अगर वो जवाब से संतुष्ट नहीं होते हैं तो वो ही कार्रवाई के बारे में बता सकते हैं। कार्रवाई के बारे में मंत्री झाबर सिंह खर्रा और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भी नहीं बता सकते।

बता दें कि भाजपा प्रदेशाध्यक्ष ने सोमवार को कैबिनेट मंत्री किरोड़ी लाल मीणा को अनुशासनहीनता का नोटिस भेजा था। पार्टी ने किरोड़ी के फोन टैपिंग के बयान को अनुशासनहीनता माना था। किरोड़ी को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा गया है, जिसका बुधवार को आखिरी दिन था।

दरअसल, किरोड़ी लाल के बयानों के कारण कांग्रेस ने विधानसभा में सरकार को जमकर घेरा था। इसके बाद पार्टी हाईकमान एक्टिव हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने मदन राठौड़ से इस बारे में चर्चा की थी। इसके बाद उन्हें नोटिस भेजा गया। नोटिस में कहा गया था कि सार्वजनिक रूप से बयान देकर भाजपा नीत सरकार पर फोन टैप करने का आरोप लगाया, जो असत्य है। आपने बयान देकर भाजपा की बहुमत वाली सरकार की प्रतिष्ठा को धूमिल करने का काम किया है।

ने इस दौरान फिर से कहा कि वह पार्टी के अनुशासित कार्यकर्ता हैं, तभी पार्टी ने उनको टिकट दिया है और तभी वे विधायक बने हैं, मंत्री बने हैं।

उधर पार्टी से नाराजगी के सवाल पर किरोड़ी लाल ने कहा कि नाराजगी तो उनकी पत्नी गोलमा देवी से भी हो जाती है। गोलमा देवी यह कहती हैं कि तुम चुप रहा करो, ज्यादा मत बोला करो, फिर भी मैं आपके बीच में बोल रहा हूं। किरोड़ी मीणा ने इस दौरान विधानसभा सत्र में शामिल नहीं होने पर बीमारी का हवाला दिया और साथ ही कहा कि जब बीमारी सही हो जाएगी तो वह विधानसभा सत्र में शामिल होंगे।

नोटिस से संतुष्ट नहीं होने के सवाल पर किरोड़ी लाल ने कहा कि मैंने क्या जवाब दिया, यह नहीं बताऊंगा। मेरी

राजस्थान पर्यटन नीति और राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति को बनाया जा रहा है आसान : दिया कुमारी

जयपुर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा है कि राजस्थान पर्यटन नीति और राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति को आसान बनाया जा रहा है इससे पर्यटन और फिल्म पर्यटन दोनों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि राजस्थान की राजधानी जयपुर में 8 व 9 मार्च को आईं आईं एफ ए 25 पुरस्कार समारोह आयोजित होना है, इससे राजस्थान पर्यटन को विश्व में भव्य पहचान मिलेगी। इससे राजस्थान में फिल्मों की शूटिंग्स में भी बढ़ोतरी होगी।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने शासन सचिव पर्यटन विभाग रवि जैन एवं पर्यटन आयुक्त विजय पाल सिंह की उपस्थिति में बुधवार को पर्यटन भवन में राजस्थान पर्यटन नीति और राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति को अंतिम रूप दिए जाने के सम्बन्ध आयोजित बैठक के पश्चात पत्रकारों से बात करते हुए उक्त जानकारी दी।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने इससे पूर्व बैठक में विभिन्न बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा कर अधिकारियों को बिंदुवार आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने निर्देश दिए कि राजस्थान पर्यटन नीति तथा राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति में सरलता होनी चाहिए ताकि राजस्थान में पर्यटन को अधिकतम बढ़ावा मिले। उन्होंने कहा राजस्थान पर्यटन का वैश्विक स्तर पर सशक्त ब्रांडिंग हो इस पर दोनों ही नीतियों में फोकस किया जाए।

दिया कुमारी ने कहा कि पर्यटन नीति के द्वारा सेगमेंटवाइज नवाचार किए जाए जिससे पर्यटन से जुड़ी इकइयां और स्टेकहोल्डर्स तथा अन्य सभी राजस्थान पर्यटन को बढ़ावा देने में अपना अधिकतम योगदान दें सके। उन्होंने कहा कि पर्यटन नीति में डिजिटल इनीशिटिव को भी शामिल किया जाए।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आईं आईं एफ ए 25 पुरस्कार समारोह साकार रूप लेने जा रहा है। इसके सफल आयोजन की तैयारियां चल रही। इससे सम्बंधित कई तरह की शूटिंग भी राजस्थान की विभिन्न लोकेशन्स पर चल रही हैं। राजस्थान फिल्म पर्यटन प्रोत्साहन नीति को इस दौरान लाँच किया जाना है। उन्होंने निर्देशित किया कि फिल्म नीति सरल बनाया जाए ताकि राजस्थान में अधिक से अधिक फिल्मों की शूटिंग हो जिससे राजस्थान पर्यटन को बढ़ावा मिले। उपमुख्यमंत्री ने कहा दोनों नीतियों से राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा इसके साथ ही यहां के लोगों को रोजगार के नये अवसर मिलेंगे।

सुधांशु महाराज 15-16 फरवरी को जयपुर प्रवास पर

सुधांशु महाराज

जयपुर । विश्व जागृति मिशन (विजामि) के संस्थापक और देश के जाने माने आध्यात्मिक संत आचार्य सुधांशु महाराज के पावन सानिध्य में गुलाबी नगर वासियों को दिव्य भक्ति सत्संग में धर्म और अध्यात्म की गंगा में डुबकी लगाने का सुअवसर मिलेगा। विजामि प्रमुख आचार्य सुधांशु महाराज शनिवार और रविवार को अपने जयपुर प्रवास के दौरान विशेष सत्रों में श्रद्धालुओं को धर्म और अध्यात्म के मार्ग पर चलते हुए जीवन में सकारात्मकता, आनंद और उल्लास के साथ प्रगति के नए सोपान तय करने के गुर सिखाएंगे।

विश्व जागृति मिशन जयपुर मंडल की ओर से आयोजित किए जा रहे इस दिव्य भक्ति सत्संग के लिए आचार्य सुधांशु जी महाराज शनिवार को जयपुर पहुंचेंगे। प्रधान श्री मदन लाल अग्रवाल ने बताया कि आचार्य श्री सुधांशुजी महाराज शनिवार को गुलाबी नगरी पहुंचने के बाद आदर्श नगर में बीस दुकान स्थित सोमश्वर महादेव मंदिर परिसर में स्थित जयपुर मंडल के आश्रम में श्रद्धालुओं और शिष्यों से मुखातिब होंगे और जयपुर मंडल द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों का अवलोकन करेंगे।

जयपुर मंडल प्रधान ने बताया कि रविवार को जवाहर नगर के सैक्टर-4 में माहेश्वरी पब्लिक स्कूल के तक्षिशला ऑडिटोरियम में दिव्य भक्ति सत्संग के दो विशेष सत्रों का आयोजन होगा। पहला सत्र प्रात:: 10 से 12 बजे तक तथा दूसरा सत्र शाम 4 से 6 बजे तक आयोजित होगा। इन सत्रों में प्रवेश नि:शुल्क रहेगा, गुलाबी नगर वासियों को पहले आओ-पहले स्थान पाओ के आधार पर ऑडिटोरियम में प्रवेश दिया जाएगा। आचार्य श्री सुधांशु जी महाराज इसी दिन दोपहर 12 बजे तक्षिशला ऑडिटोरियम में ही नए श्रद्धालुओं को दीक्षा देंगे।

'ईआरसीपी में 13 जिलों को मिलेगा पेयजल'

जयपुर। राज्यसभा सांसद और भाजपा के वरिष्ठ नेता घनश्याम तिवाड़ी ने सदन में ईआरसीपी को लेकर सवाल पूछा जिसके जवाब में जल शक्ति मंत्रालय ने इस एमओयू की जानकारी प्राप्त हुई। घनश्याम तिवाड़ी ने बजट सत्र के दौरान राज्यसभा में ईआरसीपी को लेकर एमओयू की जानकारी मांगी थी जिसके बाद मंत्रालय से प्राप्त लिखित जवाब में बताया गया कि राजस्थान को पेयजल के लिए 1744 एमसीएम, दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रीय कॉरिडोर को 205 एमसीएम और सिंचाई के लिए 1360 एमसीएम पानी देने की बात कही गई है।

तिवाड़ी ने कहा है कि इस जवाब के बाद यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नए ईआरसीपी प्रोजेक्ट में राजस्थान को न केवल सिर्फ़ पीने का पानी मिलेगा बल्कि सिंचाई के लिए जल भी उपलब्ध हो सकेगा। उन्होंने कहा कि अब कांग्रेस के इस समझौते को लेकर लगाए गए आरोप बिल्कुल बेबुनियाद साबित हो गए हैं।

कानून का दुरुपयोग कर दायर जनहित याचिका खारिज

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने कानूनी अधिकारों का दुरुपयोग कर जेडीए की योजनाओं को चुनौती देने वाली जनहित याचिका को खारिज कर दिया है। इसके साथ ही अदालत ने याचिकाकर्ता पर एक लाख रुपए का हर्जाना भी लगाया है। सीजे एमएम श्रीवास्तव और जस्टिस उमाशंकर व्यास की खंडपीठ ने यह आदेश भगवान सहाय चौधरी की ओर से दायर जनहित याचिका पर दिए। अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता पूर्व में भी समान मुद्दे पर जेडीए के विकास को रोकने के लिए एक अन्य प्रार्थी के साथ याचिकाकर्ता बनकर पीआईएल दायर की थी। उस याचिका को अदालत ने 5000 रुपए हर्जाने सहित खारिज किया था। पीआईएल के नाम पर कानून के दुरुपयोग करने का एक ट्रेंड बनता जा रहा है। यह याचिका एक तुच्छ प्रकृति की है। अदालत ने याचिकाकर्ता को निर्देश दिया कि वह एक लाख रुपए की हर्जाना राशि राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण में जमा कराए।

जेडीए के अधिवक्ता अमित कुडी ने बताया कि याचिकाकर्ता ने जेडीए की रोजदा फार्म हाउस योजना जालसू, फार्म हाउस एंड इको फ्रेंडली हाउसिंग स्कीम जयरामपुरा, रामपुरा डाबरी व अटलविहार आवासीय योजना, नारी का बास को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। याचिकाकर्ता का कहना था कि यह स्कीम चारागाह जमीन पर विकसित की जा रही हैं। इसलिए इन योजनाओं की क्रियान्विति को रोका जाए। इसके जवाब में जेडीए का कहना था कि यह स्कीमें कानूनी प्रावधानों के अनुसार ही विकसित की जा रही हैं। याचिकाकर्ता पहले भी फार्म हाउस योजना को जनहित याचिका के जरिए चुनौती दे चुका है।

कृत्रिम गर्भाधान के क्षेत्र में राजस्थान को देश में पहले स्थान पर लाना हमारी प्राथमिकता : कुमावत

- पशुपालन मंत्री ने तरल नत्रजन भंडारण के लिये 13 जिलों के लिए साइलो का वर्चुअल लोकार्पण किया

जयपुर। पशुपालन, गोपालन और डेयरी मंत्री जोराराम कुमावत ने बुधवार को राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के सभागार में राष्ट्रीय गोकुल मिशन के अंतर्गत 13 जिलों में तरल नत्रजन भंडारण हेतु 3000 लीटर के साइलो का वर्चुअल लोकार्पण किया। उन्होंने बताया कि तरल नत्रजन पशु नस्ल सुधार के लिए किए जाने वाले कृत्रिम गर्भाधान में काम आता है। तरल नत्रजन की भण्डारण व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने के लिए राज्य के 16 जिलों में 3- 3 हजार लीटर क्षमता के वर्टिकल साइलो पूर्व में स्थापित हो चुके हैं। इस तरह अब राज्य के 29 जिलों में वर्टिकल साइलो की स्थापना हो जाने से तरल नत्रजन भंडारण की कुल क्षमता 93 हजार लीटर हो गई है। जयपुर और उदयपुर के साइलो की क्षमता 6-6 हजार लीटर की है।

वर्चुअल लोकार्पण के बाद कुमावत ने वीसी से जुड़े जिलों के पशु चिकित्सा अधिकारियों से बात की और साइलो की कार्यप्रणाली को समझा। उन्होंने जिलों के अधिकारियों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि सरकार पशुपालकों और पशुओं के हित के लिए उनकी सभी मांगों पर गंभीरता से विचार करेगी। उन्होंने कहा कि कृत्रिम गर्भाधान के लिए आवश्यक सभी सुविधाएं जिलों में पहुंचा दी गई हैं। अब राजस्थान को इस क्षेत्र में पहले नंबर पर लाना विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों के ऊपर निर्भर करता है।

इस अवसर पर पशुपालन मंत्री ने जयपुर जिले के मैत्री कार्यकर्ताओं को ए आई किट का वितरण भी किया। उन्होंने मैत्री कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि वे पूरी निष्ठा और मेहनत से काम करें और कृत्रिम गर्भाधान में राजस्थान को देश में पहला स्थान दिलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। शासन सचिव पशुपालन, गोपालन और मत्स्य डॉ. समित शर्मा ने कहा कि आज दौसा, टोंक, बाड़मेर, सवाईमाधोपुर, बारां, जैसलमेर, जालोर, प्रतापगढ़, राजसमंद, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर और चुरू जिलों में 218 लाख रुपये के नवीन वर्टिकल साइलो का लोकार्पण किया गया। 5 अन्य जिलों धौलपुर, सिरोही, झालावाड़, बून्दी और कुचामनसिटी में 3 हजार लीटर की क्षमता वाले साइलो की स्थापना आने वाले दिनों में भारत सरकार से बजट प्राप्त होने पर कर दी जाएगी।

इस अवसर पर राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा पशुपालन निदेशक डॉ. आनंद सेजरा, पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ सुरेशचंद मीना सहित विभाग के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारीगण मौजूद थे।

राजस्थान में वर्ष 2025-26 में 4.40 लाख करोड़ रु. के ऋण वितरण का आंकलन किया नाबार्ड ने

सहकारिता और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री गौतम कुमार दक ने नाबार्ड द्वारा बुधवार को आयोजित स्टेट क्रेडिट सेमिनार के दौरान वित्त वर्ष 2025-26 के लिए तैयार किए गए स्टेट फोकस पेपर (एसएफपी) का विमोचन किया।

जयपुर (कासं)। राजस्थान में एकीकृत और सतत ग्रामीण समृद्धि सुनिश्चित करने के उद्देश्य से, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए रु 4.40 लाख करोड़ के प्राथमिकता क्षेत्र ऋण वितरण का अनुमान लगाया है। ऋण की संभावित राशि पिछले वर्ष के अनुमान की तुलना में 22 प्रतिशत अधिक है।

नाबार्ड द्वारा बुधवार को आयोजित स्टेट क्रेडिट सेमिनार के दौरान सहकारिता और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री गौतम कुमार दक ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए तैयार किए गए स्टेट फोकस पेपर (एसएफपी) का विमोचन किया। इस मौके पर सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव मंजू राजपाल, एसकेएनएयू, जोबनेर के कुलपति बलराज सिंह, राजफैड के प्रबंध निदेशक टीकम चंद बोहरा, और नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. राजीव सिवाच भी मौजूद थे।

सहकारिता मंत्री ने नाबार्ड द्वारा तैयार की गई ऋण योजना और स्टेट फोकस पेपर 2025-26 की सराहना की। उन्होंने बैंकों संबंधित विभागों और अन्य हितधारकों को नाबार्ड द्वारा स्टेट फोकस पेपर में किए गए अनुमानों को प्राप्त करने के लिए एकजुट होकर काम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने प्राथमिक कृषि क्रेडिट समितियों का कंप्यूटरीकरण, नई बहुउद्देश्यीय की स्थापना, सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना, सहकारिता में सहकार पर राष्ट्रव्यापी अभियान और ग्रामीण क्षेत्रों में सहकारी बैंकां की मजबूती को शामिल किया है।

सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव मंजू राजपाल ने राज्य फोकस पेपर 2025-26 के महत्व पर जोर दिया। राजपाल ने प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) के कम्प्यूटरीकरण में नाबार्ड के प्रयासों का उल्लेख किया और मई 2025 तक 5000 पैक्स को "गो लाइव" करने के सरकार के लक्ष्य को साझा किया। उन्होंने बताया कि राज्य में भंडारण और खरीद सुविधाओं में सुधार के लिए सहकारी क्षेत्र में 500 से 1000 मीट्रिक टन क्षमता वाले 150 गोदाम बनाये जा रहे है।

नाबार्ड के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. राजीव सिवाच ने स्टेट फोकस पेपर के विषय में बताते हुए कहा कि कुल अनुमानित ऋण संभाव्यता में 47 प्रतशत कृषि और संबद्ध कार्यों के लिए आंकलित किया गया है। एमएसएमई क्षेत्र के लिए 45 प्रतिशत और अन्य प्राथमिकता वाले क्षेत्रों जैसे कि आवास, शिक्षा आदि के लिए 8 प्रतिश आकलित किया गया है। उन्होने बताया कि एसएफपी में आकलित ऋण संभाव्यता का उपयोग वर्ष 2025-26 के लिए वार्षिक ऋण योजना तैयार करने के लिए एक आधार दस्तावेज़ के रूप में किया जाएगा। डॉ. सिवाच ने आगे यह कहा कि कृषि आधारभूत सुविधाओं में निवेश में वृद्धि, कृषि उपज के समूहीकरण, मूल्य संवर्धन और किसानों को किसान उत्पादक संगठनों में संगठित करके कृषि की उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है। सेमीनार के दौरान, राज्य में वर्ष 2024-25 के दौरान सहकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स), जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों और कृषक उत्पादक संगठनों को भी सम्मानित किया गया।

- सहकारी आंदोलन को सशक्त बनाने में नाबार्ड का महत्वपूर्ण योगदान : दक

प्रदेश में हुये अलग-अलग तीन सड़क हादसों में सात जनों की मौत

नोखा, धौलपुर, श्रीमाधोपुर में हुये सड़क हादसे, पुलिस ने पोस्टमॉर्टम कराकर शव परिजनों को सुपुर्द किया

हाइवे किनारे खड़े ट्रोले में घुसी कार, दो दोस्तों की मौत

नोखा, (निसं)। होटल से खाना खाकर लौट रहे दो दोस्तों की कार बेकाबू होकर सड़क किनारे खड़े कबाड़ से भरे ट्रोले से टकरा गई।

- देर रात को होटल से खाना खाकर लौट रहे थे दोनों दोस्त
- बेकाबू होकर सड़क किनारे खड़े कबाड़ से भरे ट्रोले से टकरा गई कार

सड़क दुर्घटना में कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई।

टक्कर इतनी भीषण थी कि कार को पहचानना मुश्किल हो गया। लेफ्ट साइड से कार पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में दोनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। आसपास के लोगों ने पुलिस को पुलिस को जानकारी दी। मामला नोखा थाना इलाके के चरकड़ा गांव के पास नोखा-नागौर रोड का देर रात करीब बारह बजे का है।

नोखा एसएचओ अमित स्वामी ने बताया कि बेरासर निवासी राकेश शर्मा (25) और कक्कू निवासी शिवनारायण जाट (26) दोनों दोस्त हैं। दोनों देर रात नोखा से करीब नौ किमी दूर नागौर रोड़ स्थित एलिशन होटल पर खाना खाने के लिए गए थे। जहां से वापस लौटते समय चरकड़ा गांव के मिस्त्री मार्केट के पास उनकी कार बेकाबू होकर सड़क किनारे कबाड़ से भरे ट्रोले से टकरा गई। एसएचओ ने बताया कि हादसे में दोनों युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि कार के परखच्चे उड़ गए। हादसे के बाद आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और घटना की जानकारी नोखा पुलिस को दी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों के शवों को बागड़ी अस्पताल की मॉर्च्युरी में रखवाया, जहां पोस्टमॉर्टम कर शव परिजनों को सुपुर्द किया गया। जानकारी के अनुसार, राकेश शर्मा और शिवनारायण जाट दोनों की शादी नहीं हुई थी। राकेश दिल्ली में कूरियर का काम करता था। राकेश के पिता श्रीकिशन शर्मा की रायसिंहनगर के पास परचून की दुकान है। राकेश के एक भाई और एक बहन है। शिवनारायण शेयर मार्केट का काम करता था। शिवनारायण के पिता मजदूरी का काम करते हैं। शिव की दो बहनें हैं।

सड़क हादसे में देवर, भाभी व भतीजी की दर्दनाक मौत

अज्ञात वाहन ने बाइक सवार देवर-भाभी एवं भतीजी को टक्कर मार दी थी

धौलपुर, (निसं)। मनिया थाना इलाके में बुधवार को आगरा-मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित सुआ का बाग चौराहे के नजदीक अज्ञात वाहन ने बाइक सवार देवर-भाभी एवं भतीजी को टक्कर मार दी। इस दर्दनाक हादसे में तीनों की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं भतीजा दूर जाकर गिर गया, जिससे बाल-बाल बच गया। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी शवों को कब्जे में लेकर मनिया सरकारी अस्पताल की मोर्चरी पर रखवाया है।

मृतक देवर राकेश व भाभी नूतन।

- भतीजा बाल-बाल बचा, रिश्तेदारी में धार्मिक आयोजन में शामिल होने जा रहे थे

जानकारी के मुताबिक सदर थाना क्षेत्र के फिरोजपुर गांव निवासी 22 वर्षीय विकास पुत्र राकेश अपनी भाभी 21 वर्षीय नूतन उर्फ नत्थो पत्नी सोनू और भतीजी 7 वर्षीय अनुष्का एवं एक भतीजे को बाइक पर बिठाकर ड़डोली गांव में किसी धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने जा रहा था। बाइक सवार जैसे ही सुआ का बाग चौराहे के पास पहुंचा तो पीछे से आ रहे तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने रौंद दिया। इस सड़क हादसे में विकास, नूतन एवं अनुष्का की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं एक बच्चा दूर जाकर गिर गया, जिससे वह बाल-बाल बच गया। घटना से मौके पर चीख-पुकार मच गई। हादसे को देख स्थानीय ग्रामीण मौके पर पहुंच गए, जिन्होंने घटना की सूचना पुलिस को दी।

थाना प्रभारी रामनरेश मीणा घटनास्थल पर पहुंच गए। घटना से पुलिस ने मृतक के परिजनों को अवगत करा दिया है। परिजनों के पहुंचने के बाद पोस्टमार्टम कराया जाएगा। घटना को लेकर थाना प्रभारी मीणा ने बताया अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार देवर, भाभी एवं एक भतीजी की मौत हुई है। अज्ञात वाहन चालक दुर्घटना को अंजाम देकर फरार हो गया है। हाईवे पर नाकाबंदी पॉइंट लगाए गए हैं। हाईवे पर लगे सीसीटीवी कैमरे भी देखे जा रहे हैं। आरोपी को शीघ्र गिरफ्तार किया जाएगा। मुकदमा दर्ज कर मामले में कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

आगरा से खाटूश्याम जा रही कार टोल बॉक्स से टकराई, दंपती की मौत

श्रीमाधोपुर, (निसं)। कस्बे के निकट रलावता-खंडेला टोल में बुधवार अलसुबह हुए सड़क हादसे में एक अनियंत्रित कार डिवाइडर और बंद पड़े टोल बॉक्स से टकराकर पलटी खा गई। हादसे में आगरा निवासी पति-पत्नी अजित सिंह व सीमा की मौत हो गई, जबकि तीन बच्चों सहित छह लोग घायल हो गए।

रलावता-खंडेला टोल में हुये सड़क हादसे में पति-पत्नी की मौत हो गई।

- हादसे में तीन बच्चों सहित छह लोग घायल, अस्पताल में भर्ती कराया
- कार सवार सभी लोग खाटूश्यामजी के दर्शन के लिए जा रहे थे

जानकारी के अनुसार, यह सभी लोग खाटूश्याम जी के दर्शन के लिए जा रहे थे। परी जिन्होंने बताया कि उम्र तक अजीत सिंह खेती का कार्य करता है । हादसे हालत गंभीर होने पर उनको जयपुर रेफर किया गया। अचानक सड़क हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और आसपास के लोग दौड़कर आए। स्थानीय पुलिस तथा 108 एंबुलेंस को सूचना देकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया। 108 एंबुलेंस ईएमटी हेमंत कुमार सैनी, चालक संजय सिंह ने बताया कि अजीत सिंह ने सड़क हादसे में मौके पर ही दम तोड़ दिया था। उसकी पत्नी सीमा ने जयपुर रेफर के दौरान रास्ते में दम तोड़ दिया। वहीं सड़क हादसे में अन्य घायलों का इलाज जयपुर के एसएमएस अस्पताल में जारी है। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि यह परिवार आगरा से खाटूश्याम जी दर्शन करने के लिए रवाना हुआ था, लेकिन रास्ता भटक जाने के कारण वे श्रीमाधोपुर से निकल रहे थे, लेकिन खंडेला श्रीमाधोपुर रोड रलावता के पास टोल टैक्स से टकराने से सड़क हादसे के शिकार हो गए।

महाकुंभ जा रहा परिवार यूपी में हादसे का शिकार, दो की मौत

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर के प्रताप नगर थाना क्षेत्र में रहने वाला एक परिवार प्रयागराज महाकुंभ में स्नान करने जा रहा था।, इस दौरान कार को उत्तरप्रदेश के झांसी जिले में अन्य वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में कार सवार एक महिला की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि प्राथमिक उपचार के बाद भीलवाड़ा लौटते समय 13 साल के बालक ने यहां दम तोड़ दिया। शव को बुधवार सुबह पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया।

- कार को उत्तरप्रदेश के झांसी जिले में अन्य वाहन ने टक्कर मार दी थी

प्रताप नगर थाना पुलिस ने बताया कि चंद्रशेखर आजाद नगर निवासी दीपक दाधीच, अपने बेटे 13 वर्षीया अर्थव के साथ ही भीमा देवी व मकराना निवासी कान कंवर के साथ 10 फरवरी की सुबह महाकुंभ में स्नान करने जाने के लिए कार से प्रयागराज रवाना हुए। 10-11 फरवरी की मध्य रात्रि को ये लोग उत्तरप्रदेश के झांसी जिले के पूंछ थाना इलाके में पहुंचे थे कि इनकी कार को पीछे से एक अन्य वाहन ने टक्कर मार दी।

टक्कर के बाद कार असंतुलित होकर खाई में जा गिरी, हादसे में कान कंवर की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि अर्थव घायल और बाकी लोग चोटिल हो गये। अर्थव दाधीच को वहां प्राथमिक उपचार कराने के बाद यह परिवार भीलवाड़ा लेकर आ रहा था। यहां सुवाणा गांव के नजदीक अर्थव अचानक बेसुध हो गया। उसे तत्काल शहर के निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां से उसे एमजी अस्पताल भिजवा दिया गया। एमजी अस्पताल में प्राथमिक परीक्षण के बाद अर्थव को डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। शव को मोर्चरी में सुरक्षित रखवाया गया, जिसका बुधवार सुबह प्रताप नगर पुलिस ने पोस्टमार्टम करवा, शव परिजनों के सुपुर्द कर दिया।

पार्षद पर हमला

भीलवाड़ा, (निसं)। अपने ही बोर्ड से चुने महापौर द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना भाजपा के पार्षद को उस वक्त महंगा पड़ गया, जब महापौर के चहेते पार्षदों ने उन पर जानलेवा हमला कर दिया। भाजपा से चुने गए वार्ड 25 के पार्षद राजेश सिसोदिया निगम में फैले भ्रष्टाचार के खिलाफ लगातार अपनी आवाज बुलंद कर रहे हैं। कार्यपालिका से लेकर न्यायपालिका तक अपनी शिकायत पहुंचाने के बाद गत दिनों महापौर राकेश पाठक और आयुक्त हेमाराम चौधरी द्वारा किए गए भ्रष्टाचार के दो मामलों में एसीबी में परिवाद दर्ज होने के बाद से महापौर पाठक बौखलाए हुए हैं। शिकायतकर्ता सिसोदिया का आरोप है कि आज रोजमर्रा की तरह जब वो निगम पहुंचे तो महापौर के इशारे पर उनके चहेते पार्षद उदयलाल तेली ने अपशब्दों का प्रयोग करते हुए उन्हें जलील करने का प्रयास किया यही नहीं भाजपा से ही वार्ड 12 के पार्षद हेमंत शर्मा ने भी सिसोदिया को अपशब्द कहते हुए हमला कर दिया।

13 भूखण्डों को बेचकर करोड़ों का गबन, आरोपी गोवा से गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। शहर की उदयमंदिर पुलिस ने फर्जी आम मुख्तयारनामा के आधार पर 13 भूखंडों को बेचने के बाद करोड़ों रूपए हड़पने के आरोपी को गोवा से गिरफ्तार किया है। आरोपी काफी समय से फरार चल रहा था। उसके गोवा में होने की जानकारी मिलने पर पुलिस की टीम वहां पहुंची और दस्तयाब कर लाई। उसका एक अन्य साथी भी पुलिस के हाथ लगा है। वहीं तीसरे साथी की तलाश की जा रही है जोकि फरार हो गया।

थानाधिकारी सीताराम खोजा ने बताया कि धोखाधड़ी के आरोपी दवेश शर्मा निवासी बोड़ों की घाटी, नवचौकिया को गिरफ्तार किया गया है। उसके साथ में एक अन्य साथी हरीश वैष्णव को भी गिरफ्तार किया गया है। आरोपी दवेश शर्मा भूखंडों का बेचान कर फर्जीवाड़ा करते हुए मडगांव गोवा में जाकर रहने लगा था। एक अन्य आरोपी पीयूष दाधिच फरार हो गया, जिसकी तलाश जारी है।

थानाधिकारी खोजा ने बताया कि मामले में रामबाग रोड कागा निवासी कौशल्या देवी बंग पत्नी पुखराज बंग ने रिपोर्ट दी थी। इसके अनुसार उसके स्वयं की ठााम दइजर की जमीन का फर्जी व कुटरचित आम मुतख्यारनामा तैयार कर भूखण्डों को आगे अलग अलग व्यक्यिों को बेचान कर दिया है। थानाधिकारी खोजा ने बताया कि सह आरोपी हरिश वैष्णव पुत्र गंगादास वैष्णव निवासी चूने की चौकी, ब्रह्मपुरी जोधपुर को भी गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में भिजवाया गया।

पहाड़ी एवं नगर में ठेकेदार वसूल कर रहा अधिक रॉयल्टी

भरतपुर, (निसं)। जिला डीग की तहसील पहाड़ी एवं नगर में जिस कंपनी ईआरसीसी का ठेका संचालित है उस कंपनी का ठेकेदार रॉयल्टी के नाम पर निर्धारित दर से अधिक रॉयल्टी वसूल कर रहा है। ठेका नियमों का पालन नहीं किया जा रहा है। खान विभाग द्वारा ठेकेदार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। ठेकेदार की की कारगुजारी का खनन विभाग के अधिकारियों को बखूबी पता होने के बावजूद भी नियमों का पालन नहीं करवाया जा रहा है। ठेका नियमों के तहत रॉयल्टी राशि रुपए 49.28 पैसे निश्चित है लेकिन ठेकेदार पत्थर पर रॉयल्टी 70 से 80 प्रति टन वसूल कर रहा है। गलत तरीके से ठेकेदार द्वारा पत्थर पर रॉयल्टी गाड़ियों पर फिक्स करके वसूल की जा रही है जो ठेका नियमों के अनुसार गलत है। ठेका नियमों में गाड़ी में जितना माल हो उस माल की रॉयल्टी दर के अनुसार रॉयल्टी वसूल करना अनिवार्य है लेकिन यहां ठेकेदार 70 से 80 तक प्रतिदिन वसूल कर रहा है जो गैरकानूनी है। क्रशर से पिसे हुए खनिज की रॉयल्टी दर 60 प्रति टन के हिसाब से वसूल कर रहा है। ठेका क्षेत्र में कोई भी खान संचालक या क्रशर संचालक अधिक राशि वसूल करने के विरोध में शिकायत करता है या आवाज उठाता है तो उस आवाज को उठाने वाले व्यक्ति के खिलाफ पुलिस एवं खान विभाग द्वारा कार्रवाई करवाने की धमकी दी जाती है जिसके कारण दबाव में यह अवैध वसूली का खेल चल रहा है। खान विभाग द्वारा जारी प्रपत्र फार्म संख्या 44 के बिना ही अवैध वसूली का खेल चल रहा है वह ठेकेदार द्वारा खनन विभाग द्वारा निर्धारित दर से अधिक राशि वसूल करना ठेका नियमों के खिलाफ है। ठेकेदार एवं ठेका कर्मचारियों ने एक व्हाट्सएप ग्रुप चला रखा है जो अवैध पर्चियों से गाड़ियों का परिवहन किया जा रहा है वहां पर ठेका नियमों का किसी भी प्रकार से पालन नहीं किया जा रहा है। रॉयल्टी ठेकेदार की इस कार गुजारी के कारण ठेका और अवैध खनन को बढ़ावा मिल रहा है एवं खान विभाग व पुलिस ठेकेदार के दबाव के कारण कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं।

- खान विभाग द्वारा ठेकेदार के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है

वांटेड ड्रग्स तस्कर और सप्लायर गिरफ्तार

पाली, (निसं)। पाली पुलिस ने ड्रग्स तस्करी के मामले में वांटेड ड्रग्स तस्कर और सप्लायर को करीब 15 दिन की मशक्कत के बाद आखिरकार पकड़ने में कामयाबी हासिल की। दोनों को पुलिस प्रतापगढ़ से दस्तयाब कर लाई। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि आरोपियों का प्रदेश में मेवाड़ से लेकर मारवाड़ तक में नेटवर्क फैला हुआ है। इसको लेकर पुलिस पड़ताल में जुटी है।

- आरोपियों ने मेवाड़ से लेकर मारवाड़ तक नशे का कारोबार फैला रखा था

सदर थाना के सहदेव चौधरी ने बताया कि 29 जनवरी को सोनाईमांझी टोल प्लाजा पर मेवाड़ से मारवाड़ लाई जा रही 561 ग्राम एमडीएमए ड्रग्स सहित एक ड्रग्स सप्लायर को गिरफ्तार कर मामला दर्ज किया था। उससे मिली जानकारी के अनुसार मामले में वांछित ड्रग्स तस्कर व सप्लायर को पकड़ने के लिए टीम गठित की, जो आरोपियों की तलाश में उदयपुर, चित्तौड़गढ़, निम्बाहेड़ा, प्रतापगढ़ में कई दिनों तक घूमती रही। आखिरकार आरोपियों के प्रतापगढ़ में छुपे होने की सूचना पर टीम प्रतापगढ़ पहुंची। जहां से ड्रग्स तस्कर अजरूदीन पुत्र शमशेर खान पठान निवासी मुसलमानों का बास कोठड़ी प्रतापगढ़ और सप्लायर दिलीप पुत्र मांगीलाल कीर निवासी कोठड़ी प्रतापगढ़ को दस्तयाब कर पाली लाए। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया कि आरोपियों ने मेवाड़ से लेकर मारवाड़ तक नशे का कारोबार फैला रखा है। इसको लेकर उनसे पूछताछ की जा रही है।

मां-बाप ने नवजात को कंटीली झाड़ियों में छोड़ा

पाली, (निसं)। पाली में मां-बाप 10 से 15 दिन की नवजात को कंटीली झाड़ियों में मरने के लिए छोड़ कर चले गए। रास्ते से गुजर रहे एक किसान ने बच्ची के रोने की आवाज सुनी तो उसे उठाकर अपने सीने से लगा लिया। पानी और दूध पिलाकर चुप कराया। नवजात को हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां बच्ची की हालत खतरे से बाहर है। जानकारी के अनुसार सदर थाना क्षेत्र में बुधवार सुबह किसान इकलास खान सिंधी बाइक पर अपने खेत से निम्बाड़ा स्थित घर की ओर जा रहे थे।

- नवजात को हॉस्पिटल पहुंचाया, जहां बच्ची की हालत खतरे से बाहर है

भालेलाव-निम्बाड़ा गांव के बीच झाली के पास उन्हें बच्ची के रोने की आवाज सुनाई दी। झाड़ियों में जाकर देखा तो एक मासूम रो रही थी। उन्होंने तुरंत उसे संभाला और निम्बाड़ा, भालेलाव, निम्बली के ग्रामीणों का सूचना दी। उन्होंने मासूम को संभाला और सीने से लगाकर चुप करवाने का प्रयास किया। इस बीच मौके पर ग्रामीण पानी और दूध लेकर पहुंचे। सूचना पर सदर थाना पुलिस भी मौके पर पहुंची। मासूम को तुरंत इलाज के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लेकर पहुंचे, जहां उसे भर्ती कर लिया गया है। मासूम की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। ग्रामीण ओमप्रकाश मेघवाल ने बताया कि मासूम को अच्छे कपड़े और पैरों में मौजे पहना रखे थे। बेबी टॉवेल में लिपटा कर उसे छोड़ा गया। उसके बाल बनाए हुए थे और आंखों में काजल भी लगाया हुआ था। पूरा श्रंगार कर उसे परिजन उसे झाड़ियों में छोड़कर चले गए। डॉक्टर बोले कि बच्ची एकदम स्वस्थ है, जांचें करवा रहे हैं। मामले में बांगड़ हॉस्पिटल के चाइल्ड विभाग के एचओडी डॉ. आरके विश्नोई ने बताया कि बच्ची का जन्म 10 से 15 दिन पहले हुआ है। बच्ची का वजन 2.6 है। प्रारंभिक जांच में वह स्वस्थ नजर आ रही है। फिर भी आवश्यक जांचें करवा रहे हैं, जिससे पता चले सके कि उसे किसी तरह का इन्फेक्शन या कोई बीमारी तो नहीं है। मामले में सदर थाने के सब इंस्पेक्टर ओमप्रकाश विश्नोई ने बताया कि मासूम को इलाज के लिए बांगड़ हॉस्पिटल में भर्ती करवाया है। बाल कल्याण समिति को भी सूचना दी। शुरुआती जांच में बच्ची स्वस्थ है। डॉक्टरों की टीम मॉनिटरिंग कर रही है।

चोरों ने सूने मकान को निशाना बनाया

अजमेर, (कासं)। सिविल लाइन थाना क्षेत्र में चोरों ने आरपीएफ में तैनात कांस्टेबल के सूने मकान को निशाना बनाते हुए चोरी की वारदात अंजाम दी और मकान से 80 हजार नकदी सहित सोने-चांदी के जेवरात पर हाथ साफ कर फरार हो गए। पीड़ित ने पुलिस थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

घूघरा कायड़ रोड निवासी राजभंवर आरपीएफ में कांस्टेबल के पद पर तैनात हैं। उन्होंने बताया कि अपने परिवार के साथ पुलिस लाइन अजमेर स्थित अपने रिश्तेदार के घर एक दिन के लिए गए थे। अगले दिन वापस लौटे तो घर के ताले टूटे हुए मिले। अंदर जाने पर अलमारी और लॉकर भी खुले हुए थे। पलंग पर सारा सामान बिखरा पड़ा था। सूना मकान होने की वजह से चोरों ने आराम से घर की तलाशी ली। राजभंवर ने बताया कि चोरों ने तीन सोने के मंगलसूत्र, गले का चिक सेट, रखड़ी का सेट, तीन जोड़ी सोने के झुमके अन्य चांदी के जेवरात और 80 हजार रुपए नकद चोरी कर लिए। चोरों ने वारदात को इतनी सफाई से अंजाम दिया कि पडोसियों को भनक तक नहीं लगी।

12 लाख रुपए की नशीली दवाओं की खेप पकड़ी, महिला समेत तीन गिरफ्तार

नशीली दवाएं गुजरात से आती है और राजस्थान के जरिए पंजाब सप्लाई की जाती है

बीकानेर, (निसं)। रेंज की स्पेशल टीम और महाजन थाना पुलिस ने अमृतसर-जामनगर एक्सप्रेस-वे से नशीली दवाओं की खेप पकड़ी है। तस्करी का नेटवर्क तीन राज्यों में फैला हुआ है। नशीली दवाएं गुजरात से आती है और राजस्थान के जरिए पंजाब सप्लाई की जाती है। पुलिस ने एक्सप्रेस-वे पर पहली बार कार्रवाई करते हुए महिला समेत तीन लोगों को पकड़कर 12 लाख रुपए की दवाएं बरामद की है।

- तीनों अभियुक्तों ने नशे की खेप जैसलमेर जिले के रामदेवरा से ली और कार से पंजाब ले जा रहे थे
- रास्ते में पुलिस के रोकने पर महिला शिमला को बीमार बताया जाता था और पुलिस से बच जाते थे

बीकानेर रेंज की स्पेशल टीम और महाजन थाना पुलिस ने देर रात को एक्सप्रेस-वे पर कार में सवार महिला सहित तीन लोगों को रोककर तलाशी ली। कार की डिग्गी में दो कार्टन में छिपाकर रखी ट्रामाडोल हाइड्रोक्लोरिक टैबलेट यूएसपी 100 एमजी बरामद की गई। पुलिस ने कार में सवार महिला पंजाब के अबोहर, अजवाना निवासी शिमला रानी, फाजिल्का के जवाहरसिंहवाला निवासी संतोकसिंह व फाजिल्का के बामेवाला पोस्ट जलालाबाद निवासी प्यारासिंह को गिरफ्तार कर लिया। अभियुक्तों से पूछताछ में खुलासा हुआ कि नशीली दवाइयों की तस्करी नेटवर्क तीन राज्यों में फैला है और गिरोह के रूप में तस्करी की जा रही है। गुजरात से नशीली दवाइयां राजस्थान भेजी जाती है और यहां से पंजाब में सप्लाई होती है। तीनों अभियुक्तों ने नशे की खेप जैसलमेर जिले के रामदेवरा से ली और कार से पंजाब ले जा रहे थे। ढाई लाख रुपए में 60 हजार टैबलेट ली जो तीन से चार गुना दाम में बेच देते हैं। पुलिस अब रामदेवरा में सप्लायर और गुजरात में सरगनाओं की खोजबीन में जुटी है। रेंज की स्पेशल टीम की सूचना पर गिरफ्त में आए अभियुक्त पूर्व में 15 बार नशीली दवाइयों की सप्लाई कर चुके हैं। पुलिस ने अभियुक्तों को कोर्ट में पेश कर महिला को न्यायिक हिरासत में भेज दिया और दोनों अभियुक्तों को 4 दिन के रिमांड पर लिया है।

पुलिस की गिरफ्त में अभियुक्तों में से संतोकसिंह और शिमला रानी रिश्ते में जीजा-साली है। जीजा ने अपनी साली को पुलिस से बचने का जरिया बनाया और उसे 10 हजार रुपए देने का वादा किया। पूर्व में भी उसे साथ में लिया और पांच रुपए दिए थे। तस्करों की योजना थी कि कार में महिला सवार को देखकर पुलिस संवेदनशीलता बरतेगी और ज्यादा पूछताछ नहीं करेगी। रास्ते में रोकने पर शिमला को बीमार बताया जाता था और पुलिस से बच जाते थे। इस बार पुख्ता सूचना होने पर पकड़े गए।

नशीली दवाइयों की तस्करी करने वाले पंजाब के स्कूलों में छात्र-छात्राओं में नशे की लत डाल रहे हैं। तस्करी की दवाएं दुकानों पर और स्कूलों में बच्चों को बेचने के लिए दी जाती है। दुकानों पर डिब्बे बेच जाते हैं और स्कूली बच्चों को दवाइयों के एक-एक डिब्बे थमाए जाते हैं जो अपने साथियों और अन्य छात्र-छात्राओं को बेच देते हैं। अभियुक्त पूर्व में 15 बार लाख रुपए की दवाइयों की तस्करी कर चुके हैं, यानी पंजाब में इनका गोरखधंधा जोरों पर है।

गुजरात को पंजाब से जोड़ने वाला एक्सप्रेस-वे तस्करों के लिए सेफ रूट बन गया है। एक्सप्रेस-वे के जरिए डोडा-पोस्त, अफीम, शराब और नशीली दवाइयों की तस्करी हो रही है। एक्सप्रेस-वे गुजरात से राजस्थान होते हुए पंजाब तक जाता है। लंबी दूरी होने के बावजूद इस पर ना तो सीसीटीवी कैमरे हैं और ना ही पुलिस की नियमित गश्त की कोई व्यवस्था है। पूरे रूट पर एक भी पुलिस चौकी या थाना नहीं है। इसलिए तस्कर अब पुराने हाइवे और रास्तों की बजाय एक्सप्रेस-वे पर गाड़ियां दौड़ा रहे हैं। इस पर उनकी निगरानी भी नहीं होती और दूरी कम होने के कारण ठिकानों तक जल्दी पहुंच जाते हैं। गुजरात और राजस्थान से नशीले पदार्थ पंजाब पहुंच रहे हैं और वहां से बड़े पैमाने पर शराब की तस्करी की जाती है। एक्सप्रेस-वे बनने के बाद से सुरक्षा पर सवाल उठे हैं, लेकिन इसका समाधान नहीं निकल पाया है। टीम में एसआई देवीलाल सहारण, हेड कांस्टेबल विमलेश कुमार, कांस्टेबल रविन्द्रसिंह, बाबूलाल, मुखराम, राजेश कुमार और महाजन थाना एसएचओ कश्यपसिंह शामिल थे।

श्रेयस अय्यर अच्छी फॉर्म में हैं, जो भारत के लिए सकारात्मक बात है, लेकिन मुझे लगता है कि केएल राहुल के लिए ये बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। – के. श्रीकांत

पूर्व चीफ सिलेक्टर, भारतीय बल्लेबाजी क्रम को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शुभमन गिल

भारतीय ओपनर शुभमन गिल को वनडे रैंकिंग में टॉप-2 बल्लेबाज बन गए हैं। पिछले हफ्ते वे तीसरे स्थान पर थे। भारत और इंग्लैंड के बीच खेली जा रही वनडे सीरीज के बीच ही ने बुधवार को ताजा रैंकिंग जारी की। इस सीरीज के तीसरे मैच में आज गिल ने शतक लगाया है, हालांकि इसके पॉइंट इस रैंकिंग में शामिल नहीं हैं। गिल ने इंग्लैंड के खिलाफ लगातार दो वनडे मैचों में अर्धशतकीय पारी खेली थी, इसका फायदा उन्हें मिला है। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान बाबर आजम टॉप पर बरकरार हैं। गिल बाबर से केवल 5 पॉइंट्स पीछे हैं।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिस गेल 2013 आईपीएल में 30 गेंदों पर शतक बनाकर इस सूची में सबसे ऊपर हैं। उन्होंने पहला अंतरराष्ट्रीय टी-0 शतक भी बनाया।

मैट कुहनेमन का गेंदबाजी एक्शन संदिग्ध, होगी बायोमीट्रिक जांच

सिडनी, 12 फरवरी। गेंदबाजी एक्शन को लेकर संदेह के घेरे में आस्ट्रेलिया के बायें हाथ के स्पिन गेंदबाज मैट कुहनेमन की बायोमीट्रिक जांच की जायेगी। आस्ट्रेलिया की मीडिया रिपोर्टस के अनुसार श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला के दौरान अंपायरों ने कुहनेमन के गेंदबाजी एक्शन को संदिग्ध पाया था और उन्होने इसकी शिकायत अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद से की थी। रिपोर्टस के अनुसार बायें हाथ के स्पिनर का गेंदबाजी एक्शन अगर अवैध पाया जाता है तो उन पर प्रतिबंध लग सकता है। कुहनेमन श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों में 16 विकेट चटका चुके हैं। उनकी बायोमीट्रिक जांच ब्रिसबेन में होगी।

गजांफर चैम्पियंस ट्रॉफी के लिये अफगान टीम से बाहर

काबुल, 12 फरवरी। अफगानिस्तान के आफ स्पिनर एएम गजांफर कमर के निचले हिस्से में फ्रैक्चर होने के कारण चैम्पियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने बुधवार को एक्स पर यह जानकारी साझा की। बोर्ड ने लिखा अफगानिस्तान की युवा स्पिन गेंदबाजी सनसनी, एएम ग़ज़नफ़र कमर के निचले हिस्से में फ्रैक्चर के कारण आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी से बाहर हो गए हैं। उन्हें अफगानिस्तान के हाल ही में जिम्बाब्वे दौरे के दौरान चोट लगी थी, और वह कम से कम चार महीने के लिए बाहर रहेंगे और इस अवधि के दौरान उपचाराधीन रहेंगें।

रयबाकिना के पूर्व कोच वुकोव पर प्रतिबंध बरकरार

लंदन, 12 फरवरी। दुनिया की पांचवें नंबर की खिलाड़ी एलेना रयबाकिना के पूर्व कोच स्टेफानो वुकोव पर डब्ल्यूटीए टूर प्रतिबंध को एक स्वतंत्र जांच में बरकरार रखा गया है। महिला टेनिस को नियंत्रित करने वाली संस्था डब्ल्यूटीए ने जनवरी में क्रोएशिया के वुकोव को कथित तौर पर आचार संहिता का उल्लंघन करने के लिए अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया था। मंगलवार को डब्ल्यूटीए ने पुष्टि की कि वुकोव का प्रतिबंध बरकरार रखा गया है हालांकि 37 वर्षीय कोच ने आरोपों को खारिज कर दिया है जबकि रयबाकिना ने कहा कि वुकोव ने कभी भी उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं किया। डब्ल्यूटीए ने कहा इस प्रक्रिया के बाद, निलंबन बरकरार रहेगा। हालांकि निष्पक्ष और उद्देश्यपूर्ण तरीके से मामले से निपटने के लिए निकाय की प्रतिबद्धता व्यक्त करते हुए, डब्ल्यूटीए ने अधिक विवरण देने से इनकार कर दिया। इसमें यह भी नहीं बताया गया कि वुकोव पर प्रतिबंध कब तक जारी रहेगा और उन्होंने डब्ल्यूटीए के कोड के किस हिस्से का उल्लंघन किया है। वुकोव फैसले के खिलाफ अपील कर सकते हैं। इस फैसले का मतलब है कि रयबाकिना वुकोव को अपनी टीम में वापस नहीं ला पाएंगी जैसे कि उन्हे साल की शुरुआत में उम्मीद थी।

दिलीप शिवपुरी का मास्टर्स वर्ल्ड कप टेनिस के लिए चयन

जयपुर, 12 फरवरी। जयपुर के वेटरन टेनिस खिलाड़ी दिलीप शिवपुरी आईटीएफ वर्ल्ड टेनिस मास्टर्स टूर वर्ल्ड टीम चैंपियनशिप में भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे 11 मई से 16 मई तक फ्लोरिडा अमेरिका में होने वाले मास्टर्स वर्ल्ड कप के 70 प्लस पुरुष वर्ग में जयपुर के दिलीप शिवपुरी भारतीय टीम के लिए चयनित हुए हैं इससे पूर्व भी दिलीप शिवपुरी दो मास्टर्स वर्ल्ड कप मे भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं वर्तमान में दिलीप शिवपुरी राजस्थान टेनिस संघ के अध्यक्ष भी हैं।

5वां रोशनलाल नैयर मेमोरियल राजस्थान ओपन टूर्नामेंट शुरू

जयपुर, 12 फरवरी। राजापार्क स्थित सिंह बिलियर्ड्स में आयोजित 5वां रोशन लाल नैयर मेमोरियल राजस्थान ओपन टूर्नामेंट का आज उद्घाटन हुआ। मुख्य अतिथि आईपीएस बीजू जॉर्ज जोसेफ और रवि नैयर ने सिंह बिलियर्ड्स के मालिक अमनपाल सिंह के साथ उद्घाटन समारोह में हिस्सा लिया। यह टूर्नामेंट 12 फरवरी से 20 फरवरी तक चलेगा। आज के मैचों के स्कोर इस प्रकार हैं, अमनदीप सिंह बनाम गिरीश निभवानी 55-44, 23-10, कमल शेरवानी बनाम सचिन हसीजा 58-54, 40-28।

राजस्थान ने महाराष्ट्र के खिलाफ 161 रन बनाए

जयपुर, 12 फरवरी। बीसीसीआई की राष्ट्रिय अंडर 23 सी के नायडू ट्रॉफी के पुणे में खेले जा रहे राजस्थान - महाराष्ट्र क्वाटर फाइनल मैच के तीसरे दिन महाराष्ट्र ने अपनी पहली पारी में 464 रनो का स्कोर बनाया। टीम के लिए अनिरुद्ध सबले 115, विक्की ओस्टवाल नाबाद 108, एस एस दास 50, साहिल 53, क्षिजीत 50 रनो का योगदान दिया। राजस्थान के गेंदबाज मोहित चांगरा 120/4, चेतन शर्मा 63/3, आयुष अमेरिया 73/2 विकेट प्राप्त किए। राजस्थान ने अपनी पहली पारी में 161 रनो का स्कोर बनाया। टीम के लिए मुकुल चौधरी 34, मोहित चांगरा 31, सुमित गोदारा 24, चेतन शर्मा 22, करण लाम्बा 20 व अशोक शर्मा 16 रनो का योगदान दिया। महाराष्ट्र के गेंदबाज विक्की ओस्टवाल 46/4 विकेट प्राप्त किये।

चैम्पियंस ट्रॉफी से पहले भारत ने किया इंग्लैंड का सफाया, गिल का शतक

अहमदाबाद, 12 फरवरी। शुबमन गिल (112) और श्रेयस अय्यर (78) की शानदार पारियों के बाद गेंदबाजों के कातिलाना अंदाज की बदौलत भारत ने बुधवार को यहां श्रृखंला के तीसरे और अंतिम एक दिवसीय मैच में इंग्लैंड को 142 रन से रौंद कर 19 फरवरी से शुरु होने वाली चैंपियंस ट्राफी के लिये अपने मजबूत इरादों का इजहार किया।

नरेन्द्र मोदी स्टेडियम पर भारत ने पहले खेलते हुये 356 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया जिसके जवाब में इंग्लैंड की पारी 34.2 ओवर में 214 रन बना कर सिमट गयी। इसी के साथ भारत ने तीन मैचों की श्रृखंला 3-0 से अपने नाम कर ली। चैंपियंस ट्राफी से पहले अपने अंतिम मैच में विराट कोहली (52) ने अपनी खोई फार्म को हासिल कर लिया, जिससे कोच गौतम गंभीर समेत समूचे भारतीय खेमे में संतोष का भाव नजर आया। कोहली को हालांकि आज भाग्य का सहारा भी मिला और कुछ मौकों पर वह अपना विकेट बचाने में सफल रहे।

उन्हे आदिल राशिद (64 रन पर चार विकेट) ने एक बार फिर अपना शिकार बनाया। कप्तान रोहित शर्मा मात्र एक रन ही बना सके। उधर शुबमन गिल ने इंग्लैंड आक्रमण की धज्जियां उड़ाने में कोई कोरकसर नहीं छोड़ी। अपने एक दिवसीय करियर का सातवां शतक मात्र 95 गेंदों पर पूरा किया। वह नरेन्द्र मोदी स्टेडियम में क्रिकेट के तीनों प्रारुपों में शतक जड़ने वाले इकलौते भारतीय बन गये हैं।

राशिद का शिकार बनने से पहले उन्होने अपनी शतकीय पारी में 14 चौके और तीन छक्के जड़े। कोहली के आउट होने के बाद दूसरे छोर पर आकर डटे श्रेयस अय्यर ने गिल का भरपूर साथ दिया और मात्र 64 गेंदों की पारी में आठ चौके और दो छक्के कूट दिये। वह भी आदिल रशीद की गेंद पर विकेट के पीछे लपके गये। केएल राहुल (40) ने आक्रामक बल्लेबाजी का मुजाहिरा करते हुये अंग्रेज गेंदबाजों की जमकर धुनायी गयी हालांकि उनकी 29 गेंदों की संक्षिप्त पारी का समापन साकिब महमूद ने किया। बाद में रन औसत बढ़ाने के चक्कर में भारतीय एक के बाद एक अपना विकेट गंवाते रहे और उसकी पूरी पारी 50वें ओवर की अंतिम गेंद पर सिमट गयी।

इंग्लैंड की ओर से आदिल सबसे सफल गेंदबाज बने जबकि मार्क वुड ने दो भारतीयों को पवेलियन का रास्ता दिखाया। गस एटकिंसन,जो रुट और साकिब महमूद को एक एक विकेट मिला। जवाब में बेन डकट (34) और फिल साल्ट (23) ने पहले विकेट के लिये लगभग दस रन प्रति ओवर की दर से 60 रन जोड़ लिये थे जिसे देखकर लग रहा था कि मुकाबला करीबी होगा मगर अर्शदीप सिंह (33 रन पर दो विकेट) ने लगातार दो ओवरों में दोनो सलामी बल्लेबाजों को आउट कर मेहमान टीम को करारा झटका दिया।

बाद में टॉम बैंटन (38) और जो रुट (24) ने पारी को पटरी में लाने का प्रयास किया मगर हर्षित राणा (31 रन पर दो विकेट), अक्षर पटेल (22 रन पर दो विकेट), हार्दिक पांड्या (38 रन पर दो विकेट) और कुलदीप यादव (38 रन पर एक विकेट) की चौकड़ी ने अंग्रेजों को नियमित अंतराल में पवेलियन भेज कर उन्हे मुसीबतों के भंवर में उलझाये रखा। वशिगंटन सुंदर ने 43 रन खर्च कर एक विकेट चटकाया। हार की दहलीज पर पहुंच चुकी इंग्लैंड के लिये आखिरी के ओवरों में गस एटकिंसन (38) ने धुआंधार अंदाज में खेलते हुये दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया मगर तब तक बाजी इंग्लैंड के हाथों से निकल चुकी थी।

असलंका और तीक्षणा की बदौलत श्रीलंका जीता

कोलंबो, 12 फरवरी। कप्तान चारिथ असलंका (127) की शतकीय पारी के बाद महीश तीक्षणा (40 रन पर चार विकेट) की घातक गेंदबाजी की बदौलत श्रीलंका ने आस्ट्रेलिया के खिलाफ बुधवार को यहां 49 रन की आसान जीत दर्ज की। आर प्रेमदासा स्टेडियम पर श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुये 44 ओवर के खेल में 214 रन बनाये जिसके जवाब में आस्ट्रेलिया की पूरी टीम 33.5 ओवरों में 165 रन पर सिमट गयी। गेंदबाजों की मदद पिच पर असलंका ने मजबूत इच्छाशक्ति और धैर्य का परिचय देते हुये साहसिक शतक बनाया जिसकी बदौलत मेजबान टीम 200 रन का आंकड़ा पार करते में सफल रही। एक समय श्रीलंका की आधी टीम 55 रन के स्कोर पर पवेलियन लौट चुकी थी। ऐसे संकट के समय में असलंका आगे आये और टीम का स्कोरबोर्ड चलाने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया। उन्होने दनिथ वेल्लागे (30) के साथ 67 रनों की अहम साझीदारी निभायी और टीम को संकट से उबारने में सफलता हासिल की। वेल्लागे के बाद पुछल्ले बल्लेबाजों ने असलंका का साथ क्रीज पर समय बिता कर किया जिससे असलंका को रन जोड़ने में सफलता मिली। आस्ट्रेलिया की पारी की शुरुआत भी निराशाजनक रही जब उनके सलामी बल्लेबाजों को असिथा फर्नांडो ने अपने लगातार दो ओवर में चलता कर दिया। अभी कंगारु टीम इन झटकों से उबरी भी नहीं थी कि महीश तीक्षणा ने कूपर कोनाले (3) और वेल्लागे ने कप्तान स्टीव स्मिथ (12) को आउट कर मेहमान टीम के शीर्ष क्रम की कमर तोड़ दी। आस्ट्रेलिया की ओर से एलेक्स कैरी (41) और एरन हार्डी (32) ने पारी को संभालने का प्रयास किया मगर अन्य बल्लेबाजों का साथ न मिलने से उनकी यह कोशिश निरर्थक साबित हुयी और मेहमान टीम को एशियाई महाद्वीप में एक करारी शिकस्त झेलने पर मजबूर होना पड़ा।

अरावली पोलो ने डेल्टा/वी पोलो को, जयपुर जिंदल ने जयपुर यूएसपीए को हराया

जयपुर पोलो सीजन 2025, रैफल्स सिरमोर कप

जयपुर, 12 फरवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, रैफल्स सिरमोर कप (12 गोल) में आज दो मैच खेले गए। पीपीसी पोलो ग्राउंड पर दोपहर 11.30 बजे अरावली पोलो और डेल्टा/वी पोलो के बीच मैच खेला गया, जिसमें अरावली पोलो ने डेल्टा/वी पोलो को 3-7 से हराया। अरावली पोलो की ओर से मनोलो ने 2 ओर फेडरिको ने शानदार 5 गोल कर अपनी टीम को जीत दिलाई।

डेल्टा/वी पोलो की ओर से हुर्र अली ने 1 ओर सेंटियागो ने 2 गोल किये। दूसरा मैच शाम 3 बजे रामबाग पोलो ग्राउंड पर जयपुर यूएसपीए वर्सेज़ जिन्दल पैंथर्स के बीच खेला गया जिसमेजयपुर यूएसपीए को जिंदल पैंथर्स ने 5-7 गोल से हराया। जयपुर यूएसपीए की ओर से जैसल सिंह, लांस वाटसन, निकोलस ने 1-1 ओर शमशीर अली 2 गोल किये पर टीम को जीत नही दिला पाए। जिंदल पैंथर्स की ओर से वैंकटेश जिन्दल ओर सिमरन शेरगिल ने 1-1, सिद्धान्त शर्मा ने तिकडी समेत 5 गोल कर अपनी टीम को विजयी बनाया।

महाराज पदमनाभ सिंह के पीछे से आ रही बॉल हाथ की कोहनी पर लगी

जयपुर, 12 फरवरी। रामबाग पोलो ग्राउंड पर जयपुर यूएसपीए वर्सेज़ जिन्दल पैंथर्स के बीच खेला जा रहा था, जिसमे पहले चक्कर के 5.43 मिनट पर जिन्दल पैंथर्स के खिलाड़ी द्वारा पास देने के दौरान जयपुर यूएसपीए के खिलाड़ी महाराज पदमनाभ सिंह के पीछे से आ रही बॉल हाथ की कोहनी पर लगी जिससे मैच को रोकना पड़ा। उनकी जगह शमशीर अली खेले।महाराज पदमनाभ सिंह को उसी वक्त नरेंद्र सिंह अपनी कार में लेकर हॉस्पिटल गए, उनके पीछे एम्बुलेंस भी चल रही थी। हालांकि महाराज पदमनाभ सिंह ठीक है।

बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैम्पियनशिप के पहले मैच में भारत ने मकाऊ को हराया

नई दिल्ली, 12 फरवरी। पिछले संस्करण के कांस्य पदक विजेता भारत ने बुधवार को चीन के क्विंगदाओ स्पोर्ट्स सेंटर कॉन्सन जिम्नेजियम में ग्रुप डी में मकाऊ पर 5-0 की शानदार जीत के साथ अपने बैडमिंटन एशिया मिश्रित टीम चैंपियनशिप 2025 अभियान की शुरुआत की। इस जोरदार जीत ने भारत की नॉकआउट चरण में जगह भी पक्की कर दी। अब वे ग्रुप विजेता का फैसला करने के लिए गुरुवार को ग्रुप डी के दूसरे मुकाबले में दो बार के उपविजेता दक्षिण कोरिया से भिड़ेंगे। राष्ट्रीय खेलों के मिश्रित युगल के स्वर्ण पदक विजेता सतीश करुणाकरन और आद्या वरियाथ ने शुरुआती मिश्रित युगल मुकाबले में लिओंग इओक चोंग और एनजी वेंग ची पर 21-10, 21-9 की जीत के साथ भारत के लिए जीत की बुनियाद रखी।

लक्ष्य सेन ने पुरुष एकल में पुई पैंग फोंग को 21-16, 21-12 से हराकर भारत की बढ़त बढ़ा दी, जबकि मालविका बंसोड़ ने महिला एकल में चान हाओ वाई पर 21-15, 21-9 की शानदार जीत के साथ भारत की नॉकआउट सीट पक्की कर दी। भारत ने एमआर अर्जुन और चिराग शेट्टी की नई पुरुष युगल जोड़ी को मैदान में उतारा, जिन्होंने मकाऊ के पुई ची चोन और वोंग कोक वेंग को 21-15, 21-9 से हराकर स्कोर 4-0 कर दिया। गायत्री गोपीचंद और ट्रीसा जॉली की महिला युगल जोड़ी ने एनजी वेंग ची और पुई ची वा पर 21-10, 21-5 की शानदार जीत के साथ टूर्नामेंट में भारत की शानदार शुरुआत में जोश भर दिया।

मुख्यमंत्री स्पोर्ट्सपर्सन बीमा योजना, 2024 के लिए आवेदन आमंत्रित

जयपुर, 12 फरवरी। प्रदेश के अन्तर्राष्ट्रीय पदक विजेता खिलाडियों को नि:शुल्क दुर्घटना बीमा एवं जीवन बीमा कवरेज प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री स्पोर्टूसपर्सन बीमा योजना, 2024 प्रारम्भ की गई है। इस योजना के लिए राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद ने आवेदन आमंत्रित किए है। आवेदन फार्म क्रीडा परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध है। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह सिसोदिया ने बताया कि 60 वर्ष से कम उम्र के खिलाडी इस योजना के अन्तर्गत शामिल किए गए है। यह योजना राजस्थान के मूल निवासी खिलाडियों के लिए है। यह योजना आगामी एक वर्ष के लिए होगी। उन्होने बताया कि योजना के अन्तर्गत राजस्थान के वर्तमान और पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय पदक विजेता समस्त खिलाडी शामिल किए गए है। योजना के अन्तर्गत ओलम्पिक और पैरालंपिक पदक विजेता, वर्ल्ड कप व वर्ल्ड चैम्पियनशिप (पैरा वर्ग में भी), क्रिकेट विश्व कप और चैम्पियनशिप के विजेता व उपविजेता, पोलो वर्ल्ड कप और चैम्पियनशिप के विजेता व उपविजेता, कॉमनवेल्थ गेम्स के पदक विजेता (पैरा वर्ग में भी), एशियन गेम्स के पदक विजेता (पैरा वर्ग में भी), एशियन चैम्पियनशिप के विजेता (पैरा वर्ग में भी), साउथ एशियन गेम्स के पदक विजेता (पैरा वर्ग में भी), और क्रिकेट एशिया कप व चैम्पियनशिप के विजेता व उपविजेता खिलाडी इस श्रेणी में शामिल किए गए है।

सबालेंका और गॉफ का फर कतर ओपन के दूसरे चरण में ही समाप्त

दोहा, 12 फरवरी। विश्व की नंबर एक खिलाड़ी आर्यना सबालेंका और नंबर तीन कोको गॉफ कतर डब्ल्यूटीए ओपन के दूसरे दौर में हार कर बाहर हो गई हैं।

आईपीएल में स्टेडियम से 50 मीटर दूर बिल्डिंग का टिकट लगेगा जयपुर में सीट बढ़ाने के लिए 2 भवन की छत का उपयोग होगा

जयपुर 12 फरवरी। जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में मार्च महीने में इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले होने जा रहे हैं। इसको लेकर सरकार ने अपने स्तर पर तैयारी शुरू कर दी है। खेल विभाग की ओर से इस बार जयपुर में राजस्थानी थीम पर होगा। पूरे स्टेडियम को प्लास्टिक मुक्त रखा जाएगा। पहली बार एसएमएस स्टेडियम परिसर के अंदर और बाहर बने राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की एकेडमी बिल्डिंग और खेल भवन की छत के भी टिकट दिए जाएंगे।

यह बिल्डिंग्स स्टेडियम से करीब 50 मीटर दूर है। खेल विभाग के सचिव नीरज कुमार पवन ने बताया- इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले के दौरान इस बार स्टेडियम की दर्शक क्षमता को 50 हजार तक तो नहीं बढ़ाया जा सकता है। फिर भी ज्यादा से ज्यादा दर्शकों के बैठने का इंतजाम किया जा रहा है। फिलहाल साउथ पवेलियन के रिनोवेशन का काम शुरू कर दिया गया है। खेल भवन और राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन की स्पोर्ट्स एकेडमी बिल्डिंग की छत (टेरिस) पर भी बैठने का इंतजाम किया जा रहा है। पूरी उम्मीद है कि यह पिछली बार से ज्यादा दर्शक इस बार जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग का मुकाबला देख सकेंगे।

मुकाबलों के बाद खेल मंत्री के दिशा-निर्देश पर सवाई मानसिंह स्टेडियम की कैपेसिटी को बढ़ाने के लिए एक नए प्लान पर काम किया जाएगा। ताकि भविष्य में स्टेडियम की क्षमता को 50 हजार दर्शक तक पहुंचाया जा सके। नीरज कुमार पवन ने बताया- हर बार इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले के दौरान फुटबॉल ग्राउंड को पार्किंग एरिया बना दिया जाता था। इसकी वजह से वहां पर खिलाड़ी प्रैक्टिस नहीं कर पाते थे। इस बार इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले में फुटबॉल ग्राउंड को पार्किंग एरिया नहीं बनाया जाएगा। ऐसे में यहां खिलाड़ी आसानी से प्रैक्टिस कर सकेंगे। पवन ने बताया इस बार इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले से पहले ही पूरे स्टेडियम को रिनोवेट किया जा रहा है।

नगर निगम द्वारा बकाया यूडी टैक्स को लेकर भी हमें नोटिस जारी किया गया था। इसमें कुछ गड़बड़ी थी, क्योंकि यूडी टैक्स का नोटिस दो भागों में खेल परिषद और राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन को दिया जाना चाहिए था। इसके साथ जो भाग खेल परिषद को दिया जाना था।

इसके कैलकुलेशन में भी गड़बड़ी थी। हमने री कैलकुलेशन के लिए नोटिस को फिर से नगर निगम को भेजा है। जल्द ही नया बकाया नोटिस जारी होगा, जिसके आधार पर भुगतान कर दिया जाएगा। खेल विभाग के सचिव नीरज कुमार पवन ने बताया कि जयपुर में इस बार इंडियन प्रीमियर लीग के मुकाबले राजस्थानी थीम पर होंगे। इसी थीम पर स्टेडियम को सजाया जाएगा। एंट्री से लेकर स्टेडियम के सभी स्टैंड, बॉक्स और स्टेडियम के बाहरी हिस्से में भी राजस्थानी संस्कृति की झलक देखने को मिलेगी।

बीसीसीआई द्वारा आरसीए एडहॉक कमेटी ऑथोराइज्ड है तो आईपीएल के लिए भी हम ऑथोराइज्ड : जयदीप बियानी

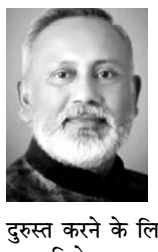

जयपुर, 12 फरवरी। आरसीए एडहॉक कमेटी के कन्वीनर जयदीप बिहानी का कहना है कि सरकार ने सरकार ने क्रिकेट को दुरुस्त करने के लिए कमेटी बनाई थी, आज क्रिकेट सुचारू रूप से चल रहा है। आईपीएल को लेकर जयदीप ने कहा कि राज्य सरकार ही करवाएगी आईपीएल का सफल आयोजन। हमेशा की तरह ही आरसीए एडहॉक कमेटी जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम की स्पोर्ट्स कॉउन्सिल से किराये पर लेकर। बीसीसीआई ने आरसीए एडहॉक कमेटी को लेटर भेजा है आईपीएल के सफल आयोजन करने को लेकर।

पूरे हिन्दुस्तान में आईपीएल के टूर्नामेंट क्रिकेट एसोसिएशन ही करवाती है। राजस्थान में एडहॉक कमेटी है लेकिन आरसीए है तो क्रिकेट एसोसिएशन। बीसीसीआई ने आरसीए एडहॉक कमेटी को लेटर लिखा है तो सैद्धांतिक तौर पर एडहॉक कमेटी को ही आईपीएल टूर्नामेंट करवाना चाहिए। इसी को लेकर मैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात करूंगा। फिर क्या आदेश आते है, मैं वही करुंगा। खेल परिषद ने हमेशा आरसीए के साथ ही तो एमओयू किया है और आरसीए ने जयपुर सवाई मान सिंह स्टेडियम का किराया खेल परिषद को दिया है। आगे भी किराया देने को तैयार है। हमने रणजी मैच, डोमेस्टिक मैच करवाए है उसका किराया दिया है। अगर आईपीएल के आयोजन खेल परिषद करवाना चाहती है तो फिर रणजी मैचों के आयोजन क्यों नही करवाया? क्यों डोमेस्टिक मैचों के आयोजन नही करवाए? जब खेल परिषद को आगे आना चाहिए था कि रणजी मैच हम कवायेंगे। सिर्फ आईपीएल को लेकर बिना वजह बवाल खड़ा किया जा रहा है। जब रणजी ओर डोमेस्टिक मैचों के लिए हम ही ऑथोराइज्ड है तो बीसीसीआई की ओर से आईपीएल के लिए भी हम ऑथोराइज्ड है। आईपीएल हम ही करायेंगे।

राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के सचिव राजेन्द्र सिंह के अनुसार सवाई मानसिंह स्टेडियम के पैवेलियन के आगे खेल परिषद के चैयरमैन के आदेशानुसार आईपीएल की दर्शक दीर्घा बढ़ाने को लेकर कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। लेकिन यह आदेश किसने कब दिए इसका पता नहीं लग पाया।

क्रिकेट मैदान ओर पिच को लेकर बियानी ने कहा कि आरसीए एडहॉक कमेटी के ऑथोराइज्ड ग्राउंड स्टाफ खेल परिषद को कॉपरेट कर रहा है। खेल परिषद ग्राउंड स्टाफ को सैलरी नही देता है, बीसीसीआई द्वारा आरसीए एडहॉक कमेटी के जरिए सैलरी देती है। नीरज के पावन ने मीटिंग में नही बुलाने को लेकर बियानी ने कहा कि नीरज पवन को एडहॉक कमेटी के कन्वीनर को बुलाना चाहिये था। उन्होंने तो मेरा फोन तक रिसीव नही किया। इसीलिए मैंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, खेलमंत्री राज्यवर्धन सिंह और नीरज के पवन को लेटर लिख दिया है कि आईपीएल करवाने का हक़ हमारा है और इसे हम ही करवाएंगे।

राजस्थान शूटिंग के स्टार खिलाड़ी अनंतजीत सिंह नरुका ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में मारी बाजी

जयपुर, 12 फरवरी। राजस्थान राज्य की शूटिंग टीम के स्टार खिलाडी श्री अनंतजीत सिंह नरुका ने 38वें राष्ट्रीय खेलों में आयोजित शॉटगन की क्ले पिजन स्कीट मैन इवेंट में स्वर्ण पदक हासिल किया हैं। प्रतियोगिता के प्रारम्भ से ही अनंतजीत सिंह नरुका ने अपना दबदबा बनाये रखा और क्वालिफिकेशन स्कोर में (122) और फाइनल्स स्कोर में (56) अंक हासिल कर प्रथम स्थान बनाये रख। इस प्रतियोगिता में छत्तीसगढ़ के परमपाल सिंह गुरॉन ने क्वालिफकेशन स्कोर में (117) और फाइनल्स स्कोर में (51) अंक प्राप्त कर रजत पदक हासिल किया और पंजाब के भवतेग सिंह गिल ने क्वालिफिकेशन स्कोर में (116) और फाइनल्स स्कोर में (42) अंक प्राप्त कर कांस्य पदक अपने नाम किया। इस शॉटगन प्रतियोगिता का आयोजन उत्तराखंड में दिनांक 07 फरवरी से 13 फरवरी 2025 तक किया जा रहा है इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सभी राज्यों से हजारो की संख्या में खिलाड़ियों ने भाग लिया जिसमे राजस्थान के निशानेबाज ने असाधारण कौशल और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करते हुए अपना दबदबा बनाया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राइज़िंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के तहत हुए एम.ओ.यू. के क्रियान्वयन की समीक्षा की। उन्होंने एम.ओ.यू. के क्रियान्वयन के लिए त्रैमासिक लक्ष्य निर्धारित करने के निर्देश दिये।

दो माह में ही 1.66 लाख करोड़ रू. के एमओयू धरातल पर उतरना शुरु

मुख्यमंत्री स्तर पर राइज़िंग राजस्थान में हुए एमओयू की दूसरी मासिक समीक्षा बैठक हुई

जयपुर, 12 फरवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रदेश को 350 बिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लक्ष्य के साथ राज्य सरकार "राइज़िंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट" के तहत हुए एमओयू को हर हाल में धरातल पर लागू करने के लिए कार्य कर रही है।

शर्मा बुधवार को मुख्यमंत्री निवास पर राइज़िंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के तहत हुए एमओयू के क्रियान्वयन की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने निर्देश दिए कि एमओयू के क्रियान्वयन के लिए त्रैमासिक लक्ष्य निर्धारित करते हुए एमओयू को धरातल पर उतारा जाए।

उल्लेखनीय है कि प्रदेश में 1 लाख 66 हजार करोड़ रूपये से अधिक के एमओयू का क्रियान्वयन धरातल पर शुरू हो चुका है। एमओयू की समीक्षा के लिए त्रि-स्तरीय व्यवस्था की गई है। जिसके तहत 1 हजार करोड़ से अधिक राशि वाले एमओयू की समीक्षा प्रतिमाह नियमित रूप से मुख्यमंत्री स्वयं कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता है कि निवेशकों से सीधा संवाद स्थापित रखा जाए, ताकि उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सके। इसी दिशा में राज्य सरकार द्वारा इन्वैस्टर इंटरफेस के माध्यम से निवेशकों को एमओयू क्रियान्वयन की प्रगति की जानकारी उपलब्ध करवायी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि भू-आवंटन से संबंधित शेष एमओयू प्रकरणों को प्राथमिकता से निस्तारित किया जाए। उन्होंने भूमि आवंटन से संबंधित प्रकरणों की साप्ताहिक रूप से समीक्षा करने के निर्देश दिए।

बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) आलोक गुप्ता, प्रमुख शासन सचिव राजस्व दिनेश कुमार, प्रमुख शासन सचिव स्वायत्त शासन राजेश यादव, प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास वैभव गालरिया, प्रमुख शासन सचिव आयुर्वेद भवानी सिंह देथा सहित विभिन्न विभागों के शासन सचिव उपस्थित थे।

- **मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने निर्देश दिये कि इन्वेस्टर इन्टरफेस के माध्यम से निवेशकों को उनके एमओयू के क्रियान्वयन पर हो रही प्रगति नियमित रूप से उपलब्ध कराई जाये।**

नरेश मीणा की जमानत याचिका पर फैसला सुरक्षित

जयपुर, 12 फरवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने देवली-उनियारा विधानसभा उप चुनाव के मतदान के दौरान निर्दलीय उम्मीदवार नरेश मीणा और एसडीएम के बीच मारपीट के बाद समरावता में हुए उपद्रव के मामले में नरेश मीणा की जमानत याचिका पर दोनों पक्षों की बहस सुनकर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया है। जस्टिस प्रवीर भटनागर की एकलपीठ ने यह आदेश आरोपी नरेश मीणा की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता महेश शर्मा और हर्षिता ने अदालत को बताया कि स्थानीय गांव वाले तहसील मुख्यालय बदलने के लिए कई दिनों से आंदोलन कर रहे थे और उन्होंने मतदान का बहिष्कार भी किया था।

इस दौरान एसडीएम उनसे जबरन वोट डलवा रहे थे। इस कारण नरेश मीणा की एसडीएम से धक्का-मुक्की भी हुई, पुलिस ने नरेश मीणा को हिरासत में ले लिया। याचिकाकर्ता की ओर से यह भी बताया गया कि पुलिस ने मामले में उसके खिलाफ हत्या के प्रयास को लेकर आरोप पत्र पेश किया है। जबकि न तो उसके पास से कोई हथियार मिला और ना ही किसी को प्राण घातक चोट आई। इस घटना के बाद उसके खिलाफ राजनीतिक द्वेष से एक के बाद एक आधा दर्जन मामले दर्ज किए गए। याचिका में कहा गया कि घटना को लेकर नामजद लोगों को पूर्व में जमानत मिल चुकी है। इनमें से कई आरोपियों को तो अग्रिम जमानत का लाभ दिया जा चुका है।

अयोध्या राम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

निधन पर प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी ने शोक जताया है। आचार्य सत्येंद्र दास को कल यानी 13 फरवरी को दोपहर 12 बजे जल समाधि दी जाएगी। सत्येंद्र दास 32 साल से रामजन्मभूमि में बतौर मुख्य पुजारी सेवा दे रहे थे बताया जाता है कि, 6 दिसंबर, 1992 को बाबरी विध्वंस के समय वे रामलला को गोद में लेकर भागे थे।

भाजपा ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चुघ सहित पार्टी की प्रदेश इकाई के तमाम पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए।

बैठक में दिल्ली विधानसभा की 22 सीटों पर मिली हार के कारणों पर चर्चा हुयी।

रिज़र्व बैंक को आशा है कि महंगाई...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ताकि इन उत्पादों को खेत से टेबल तक सही तरीके से पहुँचाया जा सके। ये भौतिक कारक उत्पादों की कीमतों पर असर डालेंगे।

हाल ही में, हमने यह भी देखा है कि सर्दी के महीनों में भी फल और सब्जियों की कीमतें बढ़ रही हैं, जबकि पहले इन महीनों में इनकी कीमतें घट जाती थीं। रिज़र्व बैंक के गवर्नर ने उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय से कुछ आंकड़े उद्धृत किए हैं, जिसमें जनवरी 2025 में टमाटर, प्याज और आलू की कीमतों में महीने दर महीने सुधार दिखाया गया। हालांकि, इन सीमित आंकड़ों के आधार पर यह मानना कि खाद्य कीमतें स्थिर रहेंगी, शायद उचित नहीं होगा।

अन्य कीमतें अधिक जटिल हैं। कई वस्तुओं, जिसमें तेल की कीमतें भी शामिल हैं, की बुनियादी कीमतें अब वर्तमान भू-राजनीतिक स्थिति में अधिक अस्थिर हैं। जनवरी में भारत में कच्चे तेल की कीमत 80 डॉलर प्रति बैरल थी, पिछले दिसंबर की तुलना में यह लगभग 10 प्रतिशत बढ़ी है। यूक्रेन, गाज़ा, इज़रायल और मध्य पूर्व में स्थिति को देखते हुए, यह उम्मीद करना अवास्तविक हो सकता है कि तेल और ऊर्जा की कीमतें मध्यकाल (मीडियम टर्म) में स्थिर रहेंगी।

तथापि, हाल के महीनों में, कंज़्यूमर प्राइस इन्फ्लेशन डेटा के आंकड़ों के आधार पर, रिज़र्व बैंक मानता है कि कीमतों में अगले कुछ महीनों में नरमी का रुझान दिखेगा। आर.बी.आई. के बयान में कहा गया कि, "सामान्य मानसून की उम्मीद करते हुए, वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए सीपीआई इन्फ्लेशन 4.2 प्रतिशत अनुमानित है, जिसमें प्रथम तिमाही में 4.5, दूसरी तिमाही में 4.0, तीसरी तिमाही में 3.8, और चौथी में 4.2 प्रतिशत का अनुमान है।"

विकास की संभावना के बारे में, रिज़र्व बैंक का कहना है कि वर्तमान वित्तीय वर्ष में औद्योगिक क्षेत्र का प्रदर्शन मजबूत रहेगा। उसने यह भी बताया कि क्षमता उपयोग (कपैसिटी यूटिलाइज़ेशन) दर 75 प्रतिशत के करीब बनी हुई है, जबकि आमतौर पर यह 73 प्रतिशत रहती है। रिज़र्व बैंक के औद्योगिक आउटलुक सर्वेक्षण में भी उज्जवल तस्वीर दिखाई गई है, जिसमें अगले कुछ महीनों में मांग की स्थितियों में सुधार की संभावना जताई गई है।

हाल ही में जो बात स्पष्ट रूप से गायब रही है, वह है निजी क्षेत्र के निवेश। सरकार की बार-बार अपीलों के बावजूद, निजी क्षेत्र के निवेश कम रहे हैं। निजी क्षेत्र तभी निवेश करेगा जब उसकी क्षमता उपयोग दर (कैपैसिटी युटिलाइज़ेशन रेट) उच्च होगी और नई क्षमता निर्माण में निवेश लाभकारी होगा। निजी कंपनियां सिर्फ अर्थव्यवस्था के विकास के लिए निवेश नहीं करतीं, सरकार अक्सर ऐसा कर सकती है। केवल मजबूत मांग के समर्थन से ही निजी क्षेत्र से नए निवेश की उम्मीद की जा सकती है।

उपभोक्ता खर्च के अलावा, जो घरेलू मांग को बढ़ाता है, बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में नए निवेश और अन्य पूंजीगत खर्च भी मांग को बढ़ाते हैं।

केंद्रीय बजट 2025-26 में, केंद्रीय सरकार के पूंजीगत खर्च को 10.1 प्रतिशत बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। " प्रभावी पूंजीगत खर्च (जिसमें राज्य सरकारों को पूंजीगत खर्च के लिए अनुदान भी शामिल है) वित्तीय वर्ष के दौरान 17.4 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है।"

ये सभी समग्र विकास को बढ़ा सकते हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था घरेलू मांग के आधार पर बढ़ रही है, क्योंकि हमारे देश में निर्यात उस प्रकार की भूमिका नहीं निभाते जैसी पूर्वी एशियाई देशों या चीन में निभाई थी। ऐसा लगता है कि रिज़र्व बैंक और केंद्र सरकार दोनों ही ग्रोथ बढ़ाने के लिए घरेलू मांग बढ़ाने पर निर्भर कर रहे हैं।

उम्मीद की जा रही है कि, केंद्रीय बजट में दी गई बड़ी कर रियायतों के साथ ब्याज दरों में कटौती, मांग को बढ़ावा देगी और अर्थव्यवस्था में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। यदि ये रणनीतियाँ एक साथ काम करती हैं, तो समग्र विकास दर बढ़नी चाहिए।

बंगलौर की मैट्रो का ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिद्धारमैया ने कहा कि "वर्ष 2017 से टिकट की कीमत में कोई बदलाव नहीं किया गया था, इसलिए बेंगलुरु मैट्रो रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने केंद्रीय सरकार से किराया बढ़ाने के लिए पत्र लिखा था। अगर किराया वृद्धि राज्य सरकार के नियंत्रण में होती, तो वे हमें पत्र लिखते, न कि केंद्र को।"

भाजपा नेता मैट्रो किराया वृद्धि पर झूठी खबरें फैला रहे हैं और जनता को गुमराह कर रहे हैं, उन्होंने कहा और यह भी कहा कि राज्य और केंद्रीय सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, जिसमें दोनों सरकारों के अधिकारी बोर्ड में शामिल हैं। लेकिन उन्होंने कहा, यह एक स्वतंत्र संस्था है। राज्य सरकार का इस पर पूरा नियंत्रण नहीं है। जैसे भारत में अन्य मैट्रो कॉर्पोरेशंस काम करती हैं, वैसे ही भी मैट्रो रेलवे (ऑपरेशन और मेंटेनेंस) एक्ट 2002 के तहत काम करता है।

कॉर्पोरेशन ने केंद्र को किराया बढ़ाने की अनुमति देने के लिए पत्र लिखा था, इसके बाद एक मूल्य पुनरावलोकन समिति का गठन किया गया था, जिसकी अध्यक्षता मद्रास हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त न्यायाधीश आर थारानी ने की थी, और यह समिति सितंबर 2024 में गठित की गई थी। इस समिति ने और दिल्ली और चेन्नई मेट्रो कॉर्पोरेशंस के अधिकारियों से बातचीत की और दिसंबर 2024 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। जब बैंगलूरु मैट्रो रेल कॉरपोरेशन लिमिटेड ने 2017 से रेल किराए में फेरबदल नहीं किया है। उसके पास पहले चरण में 42.30 किमी का मेट्रो नेटवर्क था तथा 2026 तक, शहर में 175.55 किमी का मैट्रो नेटवर्क होने की उम्मीद है। मूल्य पुनरावलोकन समिति ने सभी पहलुओं की समीक्षा की और नए किराए को मंजूरी दी, मुख्यमंत्री ने कहा। सिद्धारमैया ने यह भी बताया कि दिल्ली को छोड़कर, पहले चरण में सभी मैट्रो किराए राज्य सरकार द्वारा तय किए गए थे और अब यह केंद्र द्वारा तय किए जा रहे हैं।

'केन्द्रीय सरकार ने रक्षा मंत्रालय के कायदे-कानून ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लॉबीइंग की थी ताकि वह क्षेत्र अडानी को सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा बनाने के लिए दिया जा सके।

ब्रिटिश अखबार के अनुसार, गुजरात सरकार ने अप्रैल 2023 में पी.एम.ओ. को पत्र लिखकर इस बारे में रक्षा मंत्रालय से बात करने की अपील की थी।

अखबार का दावा है कि, 21 अप्रैल 2023 को दिल्ली में एक बैठक हुई थी जिसमें डायरैक्टर जनरल ऑफ मिलिटरी ऑपरेशन्स, गुजरात के अधिकारियों व नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के अधिकारियों ने शिरकत की थी।

गार्जियन के अनुसार, सैन्य अधिकारियों ने सोलर पैनल लगाने से सीमा पर टैंकों के संचालन व निगरानी प्रणाली पर पड़ने वाले प्रभाव पर चिंता जताई, तो उन्हें आश्वस्त किया गया कि सोलर पैनल दुश्मन के टैंक मूवमैंट के किसी भी खतरे को कम करने में सहायक होंगे। सोलर पैनल के आकार में बदलाव के अनुरोध को डैवलपर ने अस्वीकार कर दिया।

रिपोर्ट के अनुसार बैठक के अंत में रक्षा मंत्रालय ने पाक सीमा पर एक किलोमीटर के दायरे में सोलर पैनल और विंड टरबाइन लगाने के आपसी सहमति से किए गए निर्णय को स्वीकृति दे दी ताकि इस भूमि को नवीकरणीय ऊर्जा के लिए आर्थिक रुप से व्यवहार्य बनाया जा सके।

अखबार के अनुसार, मोदी सरकार ने मई 2023 को सभी मंत्रालयों को सूचित कर डिफैंस प्रोटोकॉल में ढिलाई की पुष्टि की और कहा यह दिशानिर्देश भारत-पाक सीमा पर ही नहीं बल्कि बांग्लादेश, चीन, म्यांमार और नेपाल से लगी सीमा पर भी लागू होंगे।

द गार्जियन ने यह भी कहा कि गुजरात सरकार ने पहले खावदा में 230 वर्ग किमी भूमि राज्य-चालित सौर ऊर्जा निगम को लीज़ पर दी थी। मई 2023 में निगम से यह भूमि गुजरात सरकार को लौटाने के लिए कहा गया था, जो उसने 17 जुलाई 2023 को लौटा दी। जुलाई की शुरुआत में अडानी समूह ने खावदा की भूमि में रुचि दिखाई थी।

नवम्बर में, एक अमेरिकी अभियोग ने अडानी और उनके अधिकारियों पर आरोप लगाया था कि उन्होंने 2020 से 2024 के बीच भारतीय सरकारी अधिकारियों को 265 मिलियन डॉलर की रिश्वत दी थी ताकि लाभकारी सौर ऊर्जा आपूर्ति अनुबंध हासिल किए जा सकें।

इन "भ्रष्ट" सौदों में अधिकांश कथित रुप से अक्षय ऊर्जा से संबंधित थे, जो अडानी के खावदा संयंत्र में उत्पन्न किए जाने थे और राज्य सरकारों को उच्च कीमतों पर बेचे जाने थे।

आंध्र प्रदेश राज्य सरकार ने अडानी के खावदा संयंत्र से 7 गीगा वॉट और ऊर्जा खरीदने के लिए सबसे बड़े सौदों में से एक पर पुनः विचार करना शुरु कर दिया है, जबकि फ्रांस की कम्पनी टोटल एनर्जी, जिसने परियोजना में हिस्सेदारी के लिए 444 मिलियन डॉलर का भुगतान किया था, ने समूह में आगे कोई भी निवेश नहीं करने का निर्णय लिया है।

अडानी समूह ने सभी आरोपों को निराधार बताते हुए कहा कि वह सभी "संभव कानूनी उपाय" कर रहा है।

सलेक्टिव मीडिया, कोटा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी रोड, कोटा से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा आर.एन.आई. नं. 28446/75, **जयपुर कार्यालय:** सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, **बीकानेर कार्यालय :** कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, **उदयपुर कार्यालय:** आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, **अजमेर कार्यालय:** राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 **जालोर कार्यालय :-** जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 **हिण्डौनसिटी कार्यालय :-** जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 **चूरू कार्यालय :** एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908